॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

स्तवमल्लिका

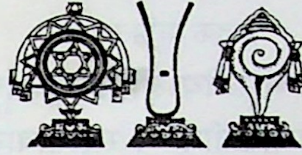
ग्रन्थ प्रणेता

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

स्तवमल्लिका

रचयिताः--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

अंग्रेजी अनुवादक-

विद्वद्वर श्रीक्रान्तिकुमारजी गुप्ता, सूरत

एम.ए.(हिन्दी एवं अंग्रेजी) एम. ईडी.

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमानाद, पुष्करक्षेत्र जि. अजमेर (राज०)

मिति-माघ शुक्ल ५ बुधवार (वसन्तोत्सव)

वि० सं० २०६६   श्रीनिम्बार्काब्द ५१०६

पुस्तक प्राप्ति स्थान--

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

प्रकाशन सेवा--

भक्तवर श्रीव्रजमोहनजी नटवरगोपालजी छापरवाल

सूरत (गुजरात)

भक्तवर श्रीप्रकाशचन्दजी प्रशान्तजी बाहेती

मुम्बई

प्रथमावृत्ति--१०००

मुद्रक--

कम्प्यूटर क्राफ्ट

दुकान नं. 152 के ऊपर, चांदपोल बाजार,

जयपुर - 302 001 (राजस्थान)

न्यौछावर

१५) रुपये

विषय सूची

पृष्ठ क्रमांक



(१)

जो जन प्रतिदिन भावयुत, करता स्तव का पाठ।
राधासर्वेश्वर प्रभू, कृपा करहि सब ठाठ।।

(२)

प्रस्तुत है स्तव-मल्लिका, राधामाधव गान।
अनुदिन इसका पठन हो, मिलहि सदा सनमान।।

(३)

इस मधि नाना स्तोत्र हैं, मिलहि सदा सुख शान्ति।
आधि-व्याधि सब शमन हो, होवत उज्ज्वल कान्ति।।

(४)

तन्मय होकर जो पठत, श्रीप्रभु प्रमुदित जान।
नहि संशय इसमें कभी, कृपा करहि भगवान।।

(५)

श्रीसर्वेश्वर ध्यान हो, हरिचरणामृत पान।
पराभक्तिरस मिलत हृदि, जीवन धन्य महान।।

(६)

श्रीवृन्दावन वास हो, यमुना पावन स्नान।
लता-द्रुमावलि कुञ्ज में, युगल-रास-रस-पान।।

(७)

व्रज रज वांछत सकल मुनि, श्रीवृन्दावन वास।
रसिक सन्त निवसत जहाँ, दरशन रास-विलास।।

(८)

वाणी में सामर्थ्य कहाँ, आश्रय है हरिनाम।
कृपाभिलाषी है 'शरण', भजै सदा निष्काम।।

।। श्री सर्वेश्वरो जयति ।।



।। श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

मङ्गलाचरणम्

(१)

श्रीराधामाधवं वन्दे सर्वेश्वरप्रभुं परम्।
श्रीहंसं सनकादींश्च नारदं निम्बभास्करम्

(२)

श्रीहरिव्यासदेवञ्च परमाचार्यमाश्रये।
रसात्मिकामहावाणी-प्रणेतारं जगद्गुरुम्।।

(३)

परशुरामदेवञ्च पूज्याचार्यं जगद्गुरुम्।
असीमकरुणासिन्धुं नमामि वांछितप्रदम्।।

(४)

अस्मद्गुरुपदाम्भोजं प्रणम्य स्तवमल्लिका।
प्रतन्यते मया भक्त्या भावुकानन्दसम्प्रदा।।

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

समर्पणम्

अनन्यभावनायुक्तभक्तेच्छापूरकेषु च।
राधामाधवपादाब्जेष्वर्प्यते स्तवमल्लिका॥

मिति – माघ शुक्ल वसन्तपञ्चमी महोत्सव
बुधवार, वि० सं० २०६६
दिनांक – २०/१/२०१०

समर्पकः-
श्रीसर्वेश्वरराधामाधवपदाब्जमकरन्दकामः-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

प्रकाशकीय

प्रातःस्मरणीय अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज ने संवत् २००० में पीठासीन होने के पश्चात् केवल ४ वर्ष श्रीधामवृन्दावन में विराजमान होकर अध्ययन किया। तदनन्तर अपनी शुभयात्राओं, सदुपदेशों, विराट् धार्मिक सम्मेलनों, विशाल यज्ञानुष्ठानों, गोरक्षा-गोसम्वर्द्धनों, देवालयों के नवनिर्माण, जीर्णोद्धार, प्रतिष्ठा पूर्वक सञ्चालन, शैक्षणिक संस्थाओं के संस्थापन-सञ्चालन तथा साहित्य रचना, प्रकाशनादि द्वारा न केवल श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का अपितु सनातन धर्म जगत् का संरक्षण एवं सम्वर्द्धन किया है। आपश्री के व्यक्तित्व, कृतित्व से पूरा राष्ट्र परिचित है। पूज्य आचार्यश्री की सतत साहित्य साधना क्रम में आप द्वारा रचित अद्यावधि ४० से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। साथ ही आपश्री के द्वारा प्रणीत ''श्रीस्तव-मल्लिका'' का कुछ दिन पूर्व आचार्यपीठ में जब मैंने हिन्दी अनुवाद सहित अध्ययन किया तो मन में सङ्कल्प हुआ कि इस स्तोत्ररत्न का हिन्दी अनुवाद के साथ अंग्रेजी भाषा में भी अनुवाद होकर प्रकाशन किया जाय तो स्वराष्ट्र और परराष्ट्र में रहने वाले अनुयायी भक्त जो संस्कृत-हिन्दी नहीं समझ पाते वे भी अंग्रेजी के माध्यम से सम्प्रदाय के सिद्धान्त, उपासना, सदाचार आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

इसी भावना को लेकर मैंने अपने (मातुलपुत्र) भाई श्रीप्रकाशचन्द बाहेती, मुम्बई के साथ पूज्य आचार्यश्री की सेवा में निवेदन प्रस्तुत किया, आपश्री ने भक्तों का मान बढाने के लिए करुणापूर्वक सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। तब मैं (व्रजमोहन छापरवाल) हस्तलिखित ग्रन्थ की प्रति लेकर सूरत (गुजरात) आया। यहाँ पर श्रीनटवरगोपाल (आत्मज) श्रीअभिषेककुमार (पौत्र) से भी परामर्श कर श्रीसुरेशकुमारजी तोषनीवाल को अंग्रेजी अनुवाद सम्पन्न कराने का दायित्व प्रदान किया। उन्होंने बड़ी निष्ठा से आङ्ग्ल भाषा विशेषज्ञ विद्वद्वर श्रीक्रान्तिकुमारजी गुप्ता-सूरत की सहायता से थोड़े ही समय में कार्य सम्पन्न कराया। प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन की आर्थिक सेवा अपनी ओर से एवं श्रीप्रकाशचन्द प्रशान्त बाहेती (मुम्बई) की ओर से प्रदान की गयी है। इस अभिनव प्रकाशन से अधिक से अधिक संख्या में श्रद्धालु भक्तजनों को लाभ होगा जो श्रद्धा विश्वास के साथ इसका अध्ययन करेंगे। श्रीसर्वेश्वर प्रभु की जय।

विनीत-

दि० १४/१/२०१०   **व्रजमोहन छापरवाल** 'निम्बार्कभूषण'

सूरत (गुजरात)

प्रेरक काव्य - मल्लिका

वैष्णव भक्ति सम्प्रदायों के प्रवर्तक प्रमुख चार आचार्यों में द्वैताद्वैत दर्शन के पतिष्ठापक श्रीनिम्बार्काचार्य सदियों से विद्वानों और भक्तों के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। यह हम राजस्थानवासियों के लिए विशिष्ट गौरव का विषय है कि इस सम्प्रदाय का प्रधान पीठ राजस्थान में (किशनगढ के पास निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद) स्थित है। यह भी परम हर्ष का विषय है कि इस पीठ के अधीश्वर सर्वतन्त्रस्वतन्त्र समस्त शास्त्र निष्णात प्रातः स्मरणीय श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्यजी महाराज न केवल मूर्धन्य विद्वान् एवं मनीषी हैं अपितु सुललित एवं सरस काव्य रचना के धनी भी हैं। इनके संस्कृत, हिन्दी, व्रजभाषा आदि में रचित अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हैं जिनमें सम्प्रदाय और दर्शन का विवेचन करने वाले गद्य ग्रन्थ भी हैं, काव्य रचनाएँ भी, भक्ति कविता भी, देशप्रेम और राष्ट्रीयता की प्रेरक रचनाएं भी। इनकी सुललित संस्कृत गीतियाँ देशभर में प्रसारित होती रहती हैं।

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि आचार्यश्री इस प्रौढ आयु में भी निरन्तर साहित्य सर्जन में संलग्न रहते हैं। आपकी लेखनी से प्रसूत जो काव्य रचनाएँ इस स्तवकुसुम मल्लिका में संग्रथित हो रही हैं उनमें अधिकांशतः उन आराध्यों की महिमा का वर्णन है उनकी स्तुति और गुणानुवाद है जो सहस्राब्दियों से भारतवासियों के पूज्य रहे हैं जिसमें निकुञ्ज लीला के अधिपति भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं और उनके ज्येष्ठ बलभद्र भी। श्रीकृष्णचन्द्र के विभिन्न स्वरूपों के स्तव तो इसमें है ही, यह विशेषतः उल्लेखनीय है कि हिमालय शिखिर में स्थित वैष्णवी देवी का स्तव भी है, भगवान् के चरणामृत की महिमा का गान भी। इस देश की संजीवनी स्वरूप जो संस्कृत भाषा सहस्राब्दियों से हमें ज्ञानामृत पिला रही है, उसे भी एक स्तव समर्पित है। इनके साथ कुछ

ऐसी प्रेरणाप्रद, भावभीनी और ललित रचनाएँ भी हैं जो एक चिन्तक और सर्जक की आत्मीय भावनाओं को वाणी देती हैं, जैसे जराऽऽर्ताभि व्यक्ति के उद्‌गार या आज की देशदशा पर उद्‌बोधनात्मक विचार।

विभिन्न छन्दों में सहज प्रवाहमय शैली में गुम्फित ये विधि मुक्तक संस्कृत रचनाएँ इस तथ्य का जीवन प्रमाण हैं कि आचार्यश्री इस आयु और अस्वस्थता के होते हुए भी संस्कृत में निरन्तर सर्जन करते रहते हैं। संस्कृत जगत् आचार्यश्री के इस सर्जनात्मक अवदान से अवश्य ही लाभान्वित होगा। इस नवीन रचना की अवतारणा के उपलक्ष्य में मैं आचार्यश्री के चरणों में सप्रणति बधाइयाँ समर्पित करता हूँ।

विनीत--

देवर्षि कलानाथ शास्त्री (राष्ट्रपति सम्मानित)
पीठाध्यक्ष आधुनिक संस्कृत पीठ
जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
प्रधान सम्पादक ''भारती'' संस्कृत मासिक
भूतपूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत आकदमी तथा
निदेशक संस्कृत शिक्षा एवं भाषाविभाग राजस्थान सरकार
मंजुनाथ स्मृति संस्थान सी/८ पृथ्वीराज रोड़, सी स्कीम, जयपुर

''श्रीस्तवमल्लिका'' परम पठनीय है

वारह अष्टकों तथा प्रेरणाप्रद श्लोकों का अवलोकन किया। यह रचना निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर पूज्यपाद श्री श्रीजी महाराज की है। स्तोत्र साहित्य परम्परा की यह एक विलक्षण कृति है। जिस छन्दोबद्ध पदावली से अपने इष्ट की आराधना की जाय उसे स्तोत्र कहते हैं। इष्ट की अनुकूलता के सफल साधन स्तोत्र होते हैं। अष्टक स्तोत्रों की परम्परा बहुत प्राचीन है। रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी रुद्राष्टक लिखा है। प्रस्तुत पुस्तक में बारह अष्टक तथा एक दशश्लोकी स्तोत्र है। स्तोत्रों की भाषा सरल है तथा भाव गम्भीर है भावपूर्ण स्तोत्र आराध्य की आराधना में अनितर साधारण माध्यम हैं। इस दृष्टि से यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

पुस्तक के अन्त में प्रेरणाप्रदानि वचनानि नामक श्लोकों के द्वारा मानव जीवन को समुन्नत बनाने का जो यत्न किया गया है वह अपने में अनुपम है। इन सब तथ्यों को दृष्टिगत कर निर्भ्रान्त रूप कहा जा सकता है कि यह पुस्तक मनोयोग से पठनीय तथा संग्राह्य है।

राष्ट्रपति सम्मानित
विश्वनाथ मिश्र
आचार्य-जैन विद्या विभाग
जैन विश्व भारती, लाडनूं
जि० नागौर (राजस्थान)

स्तवकाव्य वैशिष्ट्य

''कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः'' ''कविं पुराणमनुशासितारमणो-रणीयांसमनुस्मरेद्यः'' इत्यादि श्रुतिस्मृत्युक्त वचनों से भगवान् सर्वेश्वर श्रीहरि स्वयं कवि रूप में प्रतिष्ठित हैं, उनके द्वारा समुपदिष्ट शास्त्र और ''अस्माच्छब्दादयमर्थो बोद्धव्यः'' इस शब्द से यह अर्थ समझना चाहिए इत्यादि संकेत रूप शब्दशक्ति यह सब काव्यरूप है। उन्हीं श्रीहरि ने ''आचार्यं मां विजानीयात्'' कहकर आप्ततम आचार्यों को अपना ही स्वरूप बताया और उन्हें यथार्थ वक्ता के रूप में प्रमाणित किया। वाक्यों द्वारा भावगाम्भीर्य, अर्थगाम्भीर्य, रसात्मकता आदि व्यक्त करना हो तो सूत्रात्मिका या काव्यात्मिका शैली सर्वोत्तम होती है, क्योंकि अल्पाक्षरों में अपार वस्तुपुञ्ज समाहित रहता है, जैसे सूक्ष्म बीज में विशाल वटवृक्ष समाया रहता है। भगवान् व्यास कवि अवतार हैं, उन्होंने लीलापुरुषोत्तम श्रीकृष्ण की उपदेश वाणी को गीता के रूप में, निजाभिव्यक्ति को ब्रह्मसूत्रों में निबद्ध कर जगत् का महान् कल्याण किया है। सुदर्शन चक्रावतार भगवन्निम्बार्काचार्य ने वेदान्तदशश्लोकी, प्रातःस्तवराज, राधाष्टक आदि में वेद वेदान्त वेदाङ्गतन्त्र प्रभृति समस्त वाङ्मय का सार समाहित किया है। श्रीऔदुम्बराचार्यजी ने निम्बार्क विक्रान्ति की रचना आचार्यस्तवन के रूप में की है जिसमें आद्याचार्य के समग्र चरित का वर्णन है।

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के परवर्ती पीठाचार्यों में जगद्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्य का गोविन्दशरणापत्तिस्तोत्र, यमुनाष्टक, श्रीश्रीभट्टदेवजी का श्रीकृष्णशरणापत्तिस्तोत्र, युगलशतक (हिन्दी), श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की ''श्रीमहावाणी'' जिसमें सखीनाम रत्नावली स्तोत्र ये सब कितने रस भावपूर्ण स्तव हैं। प्रपन्न भाव से किया गया स्तवन आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक इन त्रिविध तापों को शान्त

करता है। स्तव काव्य के पठन, श्रवण, मनन करने से अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति होती है। यद्यपि भगवत्पाद आद्य शंकराचार्यजी महाराज ''तत्त्वमसि'' अहं ब्रह्मास्मि'' सर्वं खल्विदं ब्रह्म'' इत्यादि वाक्यों द्वारा जीव-ब्रह्म में नितान्त अभेद प्रतिपादन करते हैं तथापि आप द्वारा रचित अनेक स्तवकाव्य उपास्य-उपासक की भिन्नता को भी दर्शाते हैं। जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य प्रणीत ''मधुराष्टक'' कितना विलक्षण स्तव है जिसमें श्रीकृष्ण की मधुरिमा व्योमवत् सर्वत्र व्याप्त है। भक्तकवियों, विभिन्न सम्प्रदाय परम्परा के आचार्यवर्यो ने स्तव काव्यों द्वारा श्रीहरि की अनन्त महिमा का गायन किया है।

हमारे प्रातः स्मरणीय जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज ने अपनी काव्य रचना का शुभारम्भ स्वाराध्य भगवान् सर्वेश्वर युगलस्वरूप नित्यनिकुञ्जविहारी श्रीराधाकृष्ण की स्तुति से किया है। संस्कृत-हिन्दी के प्रकाशित लगभग ४० ग्रन्थों में अधिकतम स्तवात्मक रचना है। जिनमें युगलगीतिका, स्तवरत्नाञ्जलि, भारत-भारती-वैभवम्, राधामाधवशतकम्, युगलस्तव-विंशति आदि परम गरिमापूर्ण हैं। आपश्री की संस्कृत रचनाओं पर डा० श्रीपरमानन्दजी शर्मा तेवडी-वैराट जयपुर निवासी ने डा० श्रीप्रभाकरजी शास्त्री के निर्देशन में शोध प्रबन्ध पूर्ण कर प्रस्तुत किया। इसी प्रकार हिन्दी रचनाओं पर श्रीललितकुमारजी (परमानन्दजी के भाई) ने शोध कार्य पूर्ण करके शोध ग्रन्थ का लोकार्पण कराया, जिसमें ''राधामाधवरसविलास'' महाकाव्य की सर्वाधिक विवेचना है। इन सभी काव्यों में भक्तिरस के पांचों भेद-शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य और उज्ज्वल की पूर्णतया पुष्टि हुई है। इससे पूर्व अन्य लघु शोध ग्रन्थ भी प्रकाशित हो चुके हैं।

अभी वर्तमान में पूज्य आचार्यश्री ने ''स्तवमल्लिका'' नाम से स्तव

काव्य की परमोत्कृष्ट रचना की है, जिसमें निजाराध्य श्रीसर्वेश्वर-राधामाधव प्रभु की ललित लीलाएँ परिवर्णित हैं। इसके अतिरिक्त नाम-रूप लीला-धाम की वन्दना, आचार्यस्तव, महावाणीकार जगद्गुरु श्रीमद्हरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के द्वादश शिष्यों, भगवती वैष्णवी देवी की क्रमानुसार स्तुति वन्दना की गयी है। जब यह ग्रन्थ हिन्दी अनुवाद सहित मुद्रित हो रहा था तब कुछ भगवद् भक्तों ने पूज्य आचार्यश्री से प्रार्थना की कि इसमें अंग्रेजी अनुवाद संयुक्त हो जावे तो उत्तम रहेगा। परामर्श के पश्चात् निर्णय किया गया कि अंग्रेजी भाषा के किसी विशिष्ट विद्वान् से अनुवाद कराया जाय और इस बात का ध्यान रखा जाय कि किसी भी शब्द या वाक्य का असंगत या विपरीत अर्थ न बन जाय। इसका दायित्व भक्तवर श्रीव्रजमोहनजी छापरवाल सूरत को दिया गया उन्होंने अंग्रेजी अनुवाद कराकर भेज दिया। अब यह ग्रन्थ हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित प्रकाशित हो रहा है जिसका स्वराष्ट्र-परराष्ट्र स्थित संस्कृत, हिन्दी के अनभिज्ञ भक्तजन भी आङ्गल भाषा के माध्यम से निम्बार्क सम्प्रदाय के सिद्धान्त एवं उपासना को समझ सकेंगे। यह परम गौरव का विषय है। पूज्य आचार्यश्री का कृपाप्रसाद समझ कर जिज्ञासु एवं श्रद्धालु भक्त महानुभाव निष्ठा से इस ''स्तवमल्लिका'' का स्वाध्याय कर जीवन को कृतार्थ करेंगे। इसी भावना के साथ मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

श्रीचरणानुग्रहैककामः-

निम्बार्कभूषण वासुदेवशरण उपाध्याय
व्या० सा० वेदान्ताचार्य
प्राचार्य-
श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
निम्बार्कतीर्थ - सलेमाबाद
जि० अजजेर (राजस्थान)

शुभमिति-
पौष शुक्ल २ शुक्रवार
वि० सं० २०६६
दि० १५/१२/२००९

प्रस्तुत ग्रन्थ के मनन से आनन्दानुभूति

हमारे शास्त्रों में अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक सर्वनियन्ता सर्वेश्वर श्रीराधाकृष्ण भगवान् के स्तोत्र, स्तुति, पद्य इत्यादि प्राप्त होते हैं। जिनके द्वारा अपने आराध्य की प्रार्थना करने की परम्परा रही है। क्योंकि प्रभु प्रार्थना से ही प्रसन्न होते हैं। जब-जब भी सृष्टि में मनुष्यों-देवताओं पर संकट की स्थिति बनी उस समय इन सभी ने कारुण्य सिन्धु भगवान् श्रीसर्वेश्वर को स्तवन द्वारा प्रसन्न किया। जिससे प्रभु ने स्वयं अथवा अपने पार्षदों को भेजकर उनकी विपदाओं का समाधान किया।

हमारी आचार्य परम्परा में आद्याचार्य भगवान् श्रीनिम्बार्क से लेकर अद्यावधि आचार्यचरणों ने देववाणी संस्कृत में और लोक भाषाओं में भी स्तोत्रों-पद्यों द्वारा नित्यनिकुञ्जविहारी भगवान् श्रीराधामाधव की विविध रूपों से स्तुति वन्दना की है। इन स्तोत्रों में दार्शनिक सिद्धान्त, उपासना एवं सदाचार आदि का प्राञ्जल वर्णन किया है। हमारे परमाराध्य गुरुदेव प्रातःस्मरणीय पूज्य आचार्यश्री ने अपनी साहित्य रचना में प्रारम्भ से ही स्तोत्रों को प्रधानता दी है। जिनमें ''स्तवरत्नाञ्जलि'' ''युगलस्तवविशंति'' ''श्रीरामस्तवादर्श'' ''श्रीयुगलगीतिशतकम्'' इत्यादि हैं। इसी क्रम में ''श्रीस्तवमल्लिका'' नामक अमूल्य ग्रन्थ हमें प्राप्त हो रहा है। इसमें प्रभु के विविध स्वरूपों का वर्णन किया गया है। जिसके पठन, मनन, चिन्तन से भगवद्भक्तों को अपने उपास्य की आराधना में सरलता तथा परमानन्दानुभूति होगी।

मिति-पौष शुक्ल तृतीया शनिवार
वि० सं० २०६६
दि० १९/१२/०९

--श्रीश्यामशरणदेव
युवराज
अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

स्वकीय - हार्दभावाभिव्यक्ति

अपने परमाराध्य सर्वेश्वर श्रीराधामाधव प्रभु के आराधना-उपासना-चिन्तन-स्मरण क्रम में स्तव-परम्परा अति प्राचीन है। वेदों-तन्त्रों-पुराणों-महाभारत-श्रीमद्भागवत महापुराण एवं विविध रामायणों आदि में स्तवों-स्तोत्रों-स्तुतियों द्वारा स्वाराध्य के दिव्यातिदिव्य गुणगणों का परिवर्णन किया गया है, अतएव इसी परम पुरातन सरणि का अनुसरण ही प्रस्तुत ''श्रीस्तव-मल्लिका'' ग्रन्थ का प्रमुख लक्ष्य है।

यद्यपि हम स्वयं में न वैदुष्य न कवित्व न और न श्रीभगवदनुराग, केवल एकमात्र श्रीसर्वेश्वर प्रभु कृपा ही परम अवलम्ब है और उन्हीं अनन्तानु-कम्पार्णव सर्वद्रष्टा सर्वज्ञ श्रीहरि की अहैतुकी कृपाजन्य उक्त ग्रन्थ का प्रणयन सम्भव हो सका।

श्रीसर्वेश्वर प्रभु कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुंसर्वसमर्थ हैं, स्वाभाविकदया-सिन्धुरूप हैं तभी तो यह शास्त्रीय वचन इसी भाव का द्योतन करता है--

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्।।

वस्तुतः असीम कृपाकोष श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु मूक अर्थात् गूंगे को श्रेष्ठ प्रवक्ता के रूप में पङ्गु को विशाल पर्वत शिखर के उस पार करने की अपार शक्ति प्रदान कर देते हैं फलस्वरूप उन श्रीराधामाधव प्रभु की कृपा ही प्रमुख है जिसके असीम प्रभाव से असाध्य भी साध्य हो जाता है और उसी के परिणाम में इस व्याधिग्रस्त वार्द्धक्य काल में यह संक्षिप्तात्मक ''श्रीस्तवमल्लिका'' ग्रन्थ की रचना सम्भव हो सकी।

राजस्थान निवासी भक्तवर श्रीव्रजमोहनजी छापरवाल एवं इनके आत्मज श्रीनटवरगोपालजी छापरवाल सूरत (गुजरात) ने इसके प्रकाशन की भावना व्यक्त की और साथ ही इसके हिन्दी भाषानुवाद का अंग्रेजी भाषानुवाद भी सूरत वास्तव्य विद्वद्वर श्रीक्रान्तिकुमारजी गुप्ता एम.ए. (हिन्दी एवं अंग्रेजी) एम. ईडी. सूरत द्वारा कराया गया जो संस्कृत श्लोक, हिन्दी-अंग्रेजी भाषानुवाद सहित मुद्रित एवं प्रकाशित है। श्रीव्रजमोहनजी छापरवाल द्वारा अ० भा०

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में विभिन्न रूप से निष्कामभाव से सतत सेवा होती ही रहती है वस्तुतः इनके सभी सेवा कार्य अति गौरवशाली तथा सर्वविधरूप से अति सराहनीय और निश्चित ही ये परम साधुवाद के पात्र हैं।

विहार प्रान्त निवासी उद्भट महामनीषी पं० श्रीविश्वनाथजी शास्त्री वर्तमान लाडनू (राजस्थान) तथा जयपुरस्थ परम प्रख्यात विद्वद्वरेण्य देवर्षि पं० श्रीकलानाथजी शास्त्री एवं आचार्यपीठस्थ श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य नेपालवास्तव्य विद्वद्वर पं० श्रीवासुदेवशरणजी उपाध्याय के और आचार्यपीठ के उत्तराधिकारी युवराज श्रीश्यामशरणदेवजी शास्त्री आदिकों के उक्त ग्रन्थ पर अपने आलेख विचार आदि उल्लिखित हैं जो पठनीय एवं मननीय हैं।

इस पुस्तक के प्रकाशनादि कार्य में आचार्यपीठस्थ श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय के सेवा कार्य में निरत श्रीऋषिकुमारजी शर्मा निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद तथा स्वकीय निजी सचिव श्रीओमप्रकाशजी शर्मा गौड़ शास्त्री मुकुन्दपुरा-जयपुर (राज०) इत्यादिकों की सर्वाङ्ग सेवा परम सराहनीय है। इन सभी आत्मीयजनों के निष्ठापूर्वक सहयोग से ''श्रीस्तवमल्लिका'' ग्रन्थ विद्वज्जनों के समक्ष प्रस्तुत है। यदि इस लघुकलेवरात्मक ग्रन्थ के स्वाध्याय से किसी को यत्किञ्चित् भी आनन्दानुभूति एवं पावन प्रेरणा प्राप्त हुई तो निस्सन्देह इस ग्रन्थ की उपादेयता सार्थक होगी।

मिति - माघ शुक्ल ५
वसन्तपञ्चमी महोत्सव
बुधवार वि० सं० २०६६
दिनांक २०/१/२०१०

श्रीसर्वेश्वरराधामाधवप्रभुपदपङ्कजपरागमधुप-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्रीमुकुन्दस्मरणाष्टकम्

(१)

कदम्बकुञ्जावलिशोभमानं
वेणुं क्वणन्तं यमुनाप्रतीरे।
श्रीराधया सार्द्धमुपासनीयं
श्रीमन्मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।

श्रीयमुनाजी के सुभग तटीय भाग पर कदम्बादि वृक्षों की सघन कुञ्जों में परम सुशोभित एवं वंशी की मधुर ध्वनि को करते हुए अपनी परमाह्लादिनी वृन्दावनाधीश्वरी सर्वेश्वरी श्रीराधाजी के साथ रसिक भगवज्जनों द्वारा अविरल उपासनीय श्रीमुकुन्द कृष्ण भगवान् का अपने अन्तःकरण से स्मरण करते हैं।

We remember, from the very core of our heart, the same Srimad Lord Krishna installed along with the most heart gratifying occupant of Vrindavan adhishwari Sarveshwari Radhaji Located on the confluence of attractive Yamunaji beautified with kadam trees and dense garden, ever prayed by devoted devotees of Lord Krishna.

(२)

वृन्दावने नित्यनिकुञ्जमध्ये
हिरण्यसिंहासनराजमानम्।
सखीकदम्बैः सह सेव्यमानं
श्रीमन्मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।

श्रीवृन्दावन के नित्यनिकुञ्जधाम के मध्य भाग में निज सखि परिकर के संग एवं उनके द्वारा परिसेवित दिव्य स्वर्ण-सिंहासन पर विराजमान श्रीमुकुन्द भगवान् का अपने हृदय से स्मरण करते हैं।

We heartily remember Sri Mukund Krishna installed on a divine throne of gold along with Sarveshwari in the midddle of Nithya Nikunj Dham of Vrindavan.

(३)

लावण्य-कारुण्यगुणैकधाम
वीधीशदेवेन्द्रसुमृग्यमाणम् ।
वेदैः पुराणै-र्नितरां प्रगेयं
श्रीमन्मुकुन्दं मनसा स्मरामि ।।

जगत्स्रष्टा श्रीब्रह्मा एवं भगवान् श्रीशंकर तथा इन्द्रादि देववृन्दों द्वारा जिनका अन्वेषण अर्थात् खोज की जाती है एवं वेद-पुराणादि शास्त्र जिनका प्रतिपल दिव्य गुणगान करते हैं। लावण्य-कारुण्य-सौन्दर्य-माधुर्य-सौशील्य-सौकुमार्य प्रभृति अनन्त गुणों के एकमात्र अधिष्ठान है ऐसे श्रीमुकुन्द भगवान् का अपने निर्मल चित्त से स्मरण करते हैं।

The creators of the world Lord Brahma, Lord Shiva, Lord Indra, and other gods have been after the search and in whose divine praise the Vedas and puranadis are all out with mantras. We remember from the purity of our heart the same Sri Mukund Krishna who is the sole embodiment of virtues like gaiety, soft heartedness, beauty, pleasantness and lucidity.

(४)

गन्धर्वगेयं श्रुतिमन्त्रवर्ण्यं
व्रजे वसन्तं व्रजजीवनञ्च ।
सद्भिः प्रभातेऽनुदिनं प्रगीतं
श्रीमन्मुकुन्दं मनसा स्मरामि ।।

श्रुति-तन्त्र-पुराणादि शास्त्रों के मन्त्रों में जिनका परिवर्णन है, गन्धर्व-किन्नरों द्वारा गान किये गये एवं श्रीव्रजधाम में सतत निवास करने वाले और समस्त व्रज के एकमात्र सर्वस्व जीवन-धन तथा प्रभात काल में प्रतिदिन परम भागवत रसिक भावुक सन्त-महात्माओं द्वारा सम्प्रगीत श्रीमुकुन्द भगवान् श्रीकृष्ण का अपने मानस में स्मरण करते हैं।

We earnestly remember Lord Sri Krishna in whose praise songs are sung every early morning by devotees and devotionally attached grate saints. Not only this, Lord Krishna's description figures in the mantra of Sruti, Tantra, Puranadi. He is the sole property of the entire Vrajvasi in whose prayer sacred songs are sung by Gandharvas and Kinnars.

(५)

यतीन्द्र-योगीन्द्र-मुनीन्द्रवृन्दै-
र्ध्येयञ्च चित्ते सनकादिवर्यैः ।
सर्वेश्वरं कृष्णमनन्तरूपं
श्रीमन्मुकुन्दं मनसा स्मरामि ।।

बड़े-बड़े यतिवर, योगीजन, मुनिवृन्दों एवं महर्षिवर्य श्रीसनकादिकों द्वारा स्वकीय हृदय स्थल से ध्यान किये गये और जिनका अनन्त स्वरूप है

ऐसे सर्वेश्वर श्रीकृष्ण मुकुन्द प्रभु का अपने अन्तर्मानस से स्मरण करते हैं।

We internally remember Lord Sri Mukund Krishna who has countless images [personification] and has been adored from the very core of the hearts of great souls, yogis, munis, ascetics, and super most saints.

(६)

व्रजाङ्गनाभिः सह रासलीलां
नित्यं लसन्तं व्रजमञ्जुकुञ्जे।
कदम्ब-जम्बू-तरुसान्द्रपूर्णे
श्रीमन्मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।

कदम्ब-जामून-आम आदि वृक्षों की सघन व्रज की अति सुरम्य कुञ्जों में व्रजगोपियों के साथ दिव्य रासलीला प्रतिदिन करने में तत्पर श्रीमुकुन्द भगवान् का अपने मन में स्मरण करते हैं।

We whole heartedly remember Lord Sri mukund Krishna who is all absorbed in the daily divine Raslila with Varj gopis in the charming kunj of dense Varj surrounded by kadam, jamun, and mangos trees.

(७)

भृङ्गाऽच्छपुञ्जाऽतिसुगुञ्जिते च।
लतावलीपादपपुञ्जरम्ये।
कदम्बवृक्षोपरि शोभमानं
श्रीमन्मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।

भोरों के सुन्दर झुण्डों के अतिशय मञ्जुल रूप से गुञ्जायमान और विविध प्रकार की लताओं एवं वृक्षों से परम रमणीय तथा उनमें कदम्ब वृक्ष के ऊपरी भाग पर विराजित अत्यन्त शोभायमान श्रीमुकुन्द भगवान् का अपने मानस से स्मरण करते हैं।

We internally remember Lord Sri Mukund Krishna who appears to be all attractive because of his installation on the upperpart of the kadam tree which is surrounded by different types of trees and plants with the musical sound of bhavaras.

(८)

मायूरपिच्छाऽऽप्तसुमौलिनश्च
व्रजेश्वरं राधिकया हि सार्द्धम्।
सखीजनैश्चारुसुकीर्तनीयं
श्रीमन्मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।

मोरमुकुट को धारण किये हुए नित्य निकुञ्जेश्वरी सर्वेश्वरी श्रीराधिका के संग और निज सखी परिकर द्वारा अतिकमनीयता पूर्वक संकीर्तन किये गये व्रजेश्वर भगवान् श्रीमुकुन्द का अपने निर्मल चित्त से स्मरण करते हैं।

We remember, from the pure pious heart, the same Vrajeshwar Bhagwan, Sri mukund wearing peacock crown installed along with Sarveshwari Radha.

(९)

श्रीयुग्मभक्तिदं स्तोत्रं मुकुन्दस्मरणाष्टकम्।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम्।।

युगलकिशोर भगवान् श्रीराधामाधव की अनन्य पराभक्ति को देने वाला यह श्रीमुकुन्दस्मरणात्मक स्तोत्र जिसकी रचना श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु की करुणामयी कृपा का ही सुभग प्रसाद है जिसकी रचना संभव हो सकी।

The composition of this prayer in honour of Lord Yugal Kishore [Lord Krishna and Radha] is the fruit of the sacred blessings of Lord Krishna and Lord Radha Sarveshwari.

श्रीराधारूपाष्टकं स्तोत्रम्

(१)

श्रीकृष्णाह्लादिनी राधां परात्परतमां पराम् ।
वृन्दावननिकुञ्जेषु शोभितां सततं भजे ।।

अखिलब्रह्माण्डाधिपति जगन्नियन्ता वृन्दावननित्यनवनिकुञ्जविहारी भगवान् श्रीकृष्ण की परमाह्लादिनी शक्तिस्वरूपा परात्परतमा परमेश्वरी, वृन्दावन की अतीव रमणीय निकुञ्जों में सर्वदा सुशोभित निकुञ्जेश्वरी वृन्दावनाधीश्वरी श्रीराधाप्रिया का भजन करते हैं।

I offer my prayer to Radha, the symbol of strength of all powerful, pervasive and almighty Lord Krishna, who is found roaming all around the pleasant garden of Vrindavana for the love of Radha.

(२)

यमुना-पुलिने रम्यां कृष्णवामाङ्गराजिताम् ।
सेव्यां सहचरीवृन्दैः श्रीराधामनिशं भजे ।।

व्रजेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण के वामभाग में सर्वदा विराजित निकुञ्जसहचरीवृन्दों से परम सेवित अर्थात् अतिशय सुशोभित, श्रीयमुना-पुलिन पर अत्यन्त कमनीय स्वरूप से विराजित श्रीराधासर्वेश्वरी का अनवरत भजन करते हैं।

I endlessly pray to Radha with Lord Krishna by her right side, served by devotees looking all attractive installed on the confluence of the sacred river Yamuna.

(३)

वृन्दाटवीलताकुञ्जे सुमनस्सौरभान्विते ।
वृन्दादलाञ्चितां राधां स्मरामि हरिवल्लभाम् ।।

सुगन्धित पुष्पों की मधुर सुगन्ध से परिपूर्ण श्रीवृन्दावन की ललित लताकुञ्जों में तुलसी पत्रों से समर्चित श्रीकृष्णवल्लभा श्रीराधा का हम स्मरण करते हैं।

I remember Radha who is perched with *Tulsi* leaves in the garden of Vrindavana which is replete with the fragrance of sweet scented flowers.

(४)

मयूर-सारिका-कीर-कोकिला-प्रियनिस्वनैः ।
सर्वदोच्चरितां राधां भजामि करुणामयीम् ।।

मोर-मैना-तोता-कोयल के अति कमनीय मधुर ध्वनि से श्रीराधे-श्रीराधे-श्रीराधे इस प्रकार उच्चारण की गई श्रीराधा जो परम करुणामयी है उनका हम भजन करते हैं।

I offer my prayer to the same Radha whose name is being uttered and murmured in melodious voice of peacock, parrot, and koel.

(५)

यमुनोद्भवनीलाब्ज-माल्यशोभितमञ्जुलाम् ।
श्रीराधां माधवाराध्यां भावये रसभाविताम् ।।

श्रीयमुना की सुभग धारा में समुत्पन्न नीलकमलों की माला धारण की हुई अति सुशोभित परमसुन्दर आनन्दकन्द व्रजेन्द्रनन्दन भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा आराधित रसानन्द से आप्लावित नित्यनवनिकुञ्जेश्वर श्रीसर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण के होली आदि उत्सव महोत्सवों के अवसरों पर अतीव रस संसिक्त श्रीराधा लाडिली को नित्य नमन करते हैं।

I bow daily to the same Radha who is especially found by the side of Lord Krishna on the auspicious occasion of Holy which is celebrated with great pomp and show.

(६)

कनकचन्द्रिकाहृद्यां नीलाम्बरमनोहराम् ।
श्रीवृषभानुजां राधां नमामि कीर्तिलालिताम् ।।

स्वर्ण की अति दिव्य नाना रत्नजटित चन्द्रिका से परम दर्शनीय सुन्दर नील पोशाक धारण की हुई परमलावण्य सौन्दर्यमयी कीर्तिकुमारी वृषभानुनन्दनी श्रीराधा को सश्रद्ध नमन करते हैं।

I respectfully bow to Radha who is studded with all different precious jewels and clothed in beautiful blue dress.

(७)

प्रेमसरोवराऽम्भोज दिव्योद्गूतां प्रभोज्ज्वलाम् ।
कृष्णप्रियां भजे राधां कुञ्जगां रासलास्यगाम् ।।

व्रजधाम में वरसाना निकटवर्ती प्रेमसरोवर के मध्य सुन्दर कमल में प्रकट अतीव दिव्य स्वरूप अपनी अतिकमनीय कान्ति से सर्वत्र प्रकाशित और रासलीला में अपने सुन्दर नृत्य से समस्त सखीजनों को आह्लादित करने वाली कुञ्ज-निकुञ्जों में विहरणशील कृष्णप्रिया श्रीराधा का हम भजन करते हैं।

I pray to Radha [the beloved of Lord Krishna] who is present in the Vrajadham lighted with pleasant glow reflected in the Rass Leela particularly by her pleasant dance, a source of delight to her mates.

(८)

सर्वदानन्दरूपाश्च सर्वेश्वरसहार्चिताम् ।
सर्वसौख्यप्रदां राधां स्मरामि राधिकां शुभाम् ।।

सदा सर्वदा जो परमानन्दस्वरूपा है, समस्त दिव्य सुख-सम्पदा को प्रदान करने वाली सर्वेश्वरी भगवान् श्रीकृष्ण के साथ सदा प्रपूजित है ऐसी परम शुभमयी श्रीराधिकाजी का स्मरण करते हैं।

I remember the same Radha who is worshipped along with Lord Krishna, and is a permanent source of eternal pleasure for all.

(९)

राधारूपाष्टकं स्तोत्रं राधाभक्तिसुधाप्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीराधा की सुधामयी रसभक्ति प्रदायक यह श्रीराधारूपाष्टक स्तोत्र जिसकी सुखद रचना उन्हीं परम कृपामयी-करुणामयी श्रीराधिकाजी के ही कृपाजन्य हुई है जो उनके श्रीचरणारविन्दों में समर्पित है।

I humbly dedicate this prayer to the feet of Radha because this has been possible by Her special blessings.

श्रीराधाभक्तिप्रदाष्टकं स्तोत्रम्

(१)

राधां रासेश्वरीं कुञ्जे वृन्दारण्ये सुशोभिताम् ।
सार्द्धं कृष्णेन दिव्याभां ध्यायेम श्रीहरिप्रियाम् ।।

सकलधामशिरोमणि श्रीवृन्दावन की सुन्दर कुञ्ज-निकुञ्जों में वृन्दावनविहारी नित्यनवकिशोर श्यामसुन्दर भगवान् श्रीकृष्ण की परम प्रियतमा रासेश्वरी जो अपनी दिव्य आभा से प्रकाशस्वरूप हैं, अपने प्रियतम सर्वेश्वर श्रीकृष्ण के वामाङ्ग में विराजित अतीवसुशोभित श्रीराधाजी का हम ध्यान करते हैं।

We mediate over Radha who appears to be all glorified and lighted by the divine light of Lord Krishna who is by her right side. Sri Radha is the great beloved of Lord Krishna who is found roaming in and around the gardens of Vrindavan known as the highest of all the *dhams*.

(२)

कदलीसान्द्रकुञ्जेषु भृङ्गगुञ्जेषु मञ्जुषु ।
स्वर्णसिंहासने रम्यां राधां ध्यायेम वल्लभाम् ।।

भ्रमरों से अति गुञ्जायमान परम सुन्दर जो कदली (केला) तरु की सघन कुञ्ज हैं उनमें स्वर्णसिंहासन पर सुशोभित अत्यन्त लावण्यवती नित्यनवनिकुञ्जेश्वरी सर्वेश्वरी श्रीराधा हैं उनका हम ध्यान करते हैं।

We meditate over almighty Radha who is seated on the golden throne in the heart of the dense garden surrounded by beautiful rows of plantain trees full of musical sound of *bhramar*.

(३)

सखीवृन्दैः सदाराध्यां हरिणा सह राजिताम् ।
युग्मरूपात्मिकां राधां राधां ध्यायेम मञ्जुलाम् ।।

सखीवृन्दों से सदा सर्वदा परम आराध्य स्वरूपा हैं और रसिकेश्वर भगवान् श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण के वामाङ्ग में नित्य सुशोभित हैं नवयुगल श्यामाश्याम के रूप में अतीव मनोहर स्वरूप से शोभायमान है ऐसी सर्वेश्वरी श्रीराधा प्रियाजू का ध्यान करते हैं।

We remember Radha who is seated by the left side of Lord Krishna, a new couple presenting a lovely look, is adored by her mates.

(४)

यमुनाकूलकुञ्जाग्रे मञ्जुकञ्चनसुस्थले ।
अतीवरमणीये च रम्यां ध्यायेम राधिकाम् ।।

पुण्यतोया श्रीयमुनाजी के तटीयभाग में सुशोभित कुञ्ज के अग्रस्थित परम वरणीय अति सुन्दर कनकमय सुरम्य स्थल पर विराजित श्रीराधिकाजी का अपने अन्तर्मन से ध्यान करते हैं।

We internally meditate over Radha who is installed at the front area of the attractive garden situated on the confluence of the sacred Yamuna.

(५)

अनन्तविधुरूपाश्च मन्दस्मिताननां प्रियाम् ।
श्रीराधां चारुगौराङ्गीं नित्यं ध्यायेम निष्ठया ।।

अनन्त चन्द्रमाओं से अत्यधिक जिनका सौन्दर्य-माधुर्य-लावण्य है। मन्द-मन्द हास्ययुत शोभायमान जिनका श्रीमुखारविन्द है। अतीव सुभग गौरवर्णस्वरूपा हैं, ऐसी प्रिया श्रीराधा का निष्ठापूर्वक नित्य ध्यान करते हैं।

We meditate everyday on Radha whose beauty is more pleasant and attractive than countless moons and whose face is all magnified by her smile and is divinely attractive.

(६)

अनन्यभावुकैर्भक्तै-राराध्यां राधिकां सदा ।
व्रजे वृन्दावने कुञ्जे ध्यायेम राधिकां मुदा ।।

व्रजस्थ वृन्दावनधाम की मञ्जुल कुञ्ज में अनन्य भावुक रसिकभक्तों द्वारा सदा आराधनीय स्वरूपा सर्वेश्वरी श्रीराधा का उल्लास पूर्वक हम ध्यान करते हैं।

We pleasurefully mediate on Radha who is worshipped by all the emotional devotees of Vrindhavandham.

(७)

कदम्ब-कदली-कुञ्जे खगगुञ्जे सुमञ्जुलाम् ।
रासलीलाकरीं पूर्णां राधां ध्यायेम सर्वदा ।।

कोकिल-मयूर-शुक-सारिका आदि विविध खगवृन्दों से गुञ्जायमान, कदम्ब-कदली-तमाल-आम्र-जम्बू प्रभृति तरुवरों की मञ्जुल कुञ्ज में परम सुशोभित रासलीला में सर्वोपरि स्वरूपयुत परिपूर्णरूप श्रीराधा प्रियाजू का सर्वदा ध्यान में तत्पर हैं।

We are intent on meditating over Radha who appears to be at the top and all attractive during the Rashleela arranged in the garden full of kadamb, tamal, aam, jambu plants reverberating with the musical sounds of koel, mayor, suks, sarika, etc.

(८)

कञ्जमाल्यधरां राधां चन्द्रिकाहारभूषिताम् ।
नीलाम्बरधरां राधां राधां ध्यायेम स्वान्तरे ।।

कमलपुष्पों की सुन्दर माला को धारण की हुई, आपके श्रीमस्तक पर रत्नजटित कनकचन्द्रिका शोभित हो रही और स्वर्णहार से विभूषित नीलाम्बर से अतिशय शोभायमानस्वरूप निकुञ्जेश्वरी श्रीराधा प्रियाजू का सदा-सर्वदा ध्यान करते हैं।

We ever meditate over Radha wearing a beautiful garland of lotus flower with a crown studded with precious jewels and gold and a garland of gold presenting a lovely sight of the sky.

(६)

राधाकृपाप्रदं स्तोत्रं राधाभक्तिप्रदाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

वृन्दावनाधीशवरी सर्वेश्वरी श्रीराधाजी की परम कृपा को प्रदान करने वाला अतिप्रिय श्रीराधाभक्तिप्रदाष्टक स्तोत्र जिसकी उन्हीं की कृपाजन्य रचना हुई जो सदा पठनीय है।

This prayer, the fruit of the blessing of Goddess Radha, is to be read throughout.

श्रीकृष्णचन्द्र-दशश्लोकी

(१)

सुरम्यवृन्दावनदिव्यधाम्नि
कलिन्दजाकूलकदम्बकुञ्जे ।
पीताम्बरं राधिकया च सार्द्धं
श्रीकृष्णचन्द्रं सततं स्मरामि ।।

परम रमणीय श्रीवृन्दावन के दिव्य धाम में श्रीयमुना के कमनीय कूल अर्थात् सुन्दर पुलिन प्रदेश में सुभग पीताम्बर को धारण किये परमाह्लादिनीशक्ति सर्वेश्वरी वृन्दावनाधीश्वरी श्रीराधिकाजी के साथ वृन्दावननवनिकुञ्जविहारी श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् का अनवरत स्मरण करते हैं।

I relentlessly remember Lord Krishna dressed in pleasant yellow along with the pleasure giving power Radha, installed at the confluence of the river

Yamuna in the exceedingly pleasant Vrindavana.

(२)

ब्रजेश्वरं कोटिसुरेशसेव्यं
मुनीन्द्र-वृन्दारकवृन्दवन्द्यम् ।
परात्परं ब्रह्म परं मुकुन्दं
श्रीकृष्णचन्द्रं सततं स्मरामि ।।

असंख्य इन्द्रादिकों से सेवित, मुनिवृन्द एवं देव समूह से अभिवन्दित परात्पर परब्रह्म मुकुन्द भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का प्रतिपल स्मरण करते हैं।

I remember every time Lord Krishna who is served by Indra, sages, and groups of gods and prayed by them.

(३)

सखीसमूहैः समुपास्यमानं
वृन्दादलैश्चारु सुसेवनीयम् ।
कदम्बपुष्पोत्पलमाल्यरम्यं
श्रीकृष्णचन्द्रं सततं स्मरामि ।।

निकुञ्ज सखीजनों से समुपासनीय और तुलसीपत्रों से जिनका सुन्दर रूप से अर्चना (सेवा) सम्पादित की जाती है एवं कदम्ब पुष्पों, कमलपुष्पों से बनी सुन्दरतम माला से परम सुशोभित सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का निरन्तर स्मरण करते हैं।

I always remember the powerful Lord Krishna in whose prayer and service mates of Radha offer tulshi leaves, and the garland of kadamb and lotus flowers.

(४)

प्रवाल-मुक्ता-मणिमाल्यशोभं
वंशीकराब्जं कृतरासलीलम् ।
नन्दात्मजं मञ्जुनिकुञ्जहृद्यं
श्रीकृष्णचन्द्रं सततं स्मरामि ।।

प्रवाल-मुक्ता-मणि आदि दिव्य प्रकाशमान रत्नों की माला से परम सुशोभित, वंशी को अपने हस्तकमलों में धारण किये, जिन्होंने दिव्य रासलीला करने के पश्चात् अतीव मनोहर निकुञ्ज में अति शोभायमान नन्दनन्दन भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का सतत रूप से स्मरण करते हैं।

I always remember only that Krishna who is studded with all sorts of jewels and is having a flute in his hand adored with beautiful garland of lotus flower.

(५)

गन्धर्वगीतावलिगीयमानं
गोमातृसेवानिरतं कराब्जैः ।
विधीशवन्द्यं व्रजगोपसेव्यं
श्रीकृष्णचन्द्रं सततं स्मरामि ।।

गन्धर्व समूह के सुन्दर सङ्गीत से स्तुति किये गये तथा स्वकीय करकमलों के संस्पर्श से गो समूह की सुन्दर सेवा में अभिनिरत एवं सृष्टि रचयिता श्रीब्रह्मा तथा श्रीशंकरादि विशिष्ट देवों से वन्दित और व्रजगोपीजनों द्वारा सेव्यमान भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का अविकल रूप से स्मरण करते हैं।

I remember Lord Krishna [in whose honour a group of Gandharvas offer their music] who is relentlessly at the service of cows and is prayed by the creator Lord Brahma and Shankara and other spe-

cial gods and served by Gopies.

(६)

निकुञ्जलीलारससिन्धुरूपं
मायूरपिच्छाऽद्भुतदिव्यमौलिम् ।
कीराङ्गना-कोकिल-भृङ्गगीतं
श्रीकृष्णचन्द्रं सततं स्मरामि ।।

निकुञ्जलीलारस के अगाध सागर के दिव्य स्वरूप एवं मयूर के सुन्दर पङ्खों से बने अद्भुत देदीप्यमान मुकुट से शोभायमान, शुकाङ्गना (तोतियाँ) कोयल और भोरों के मधुर गुञ्जार से प्रगीयमान भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का अविरल रूप से स्मरण करते हैं।

I always remember Lord Krishna whose lighted crown is beautified with beautiful feathers of peacock and around whom koels and vaurans create soothing music.

(७)

श्रीवासुदेवं मथुराधिपञ्च
व्रजाङ्गनामञ्जुलचीरचौरम् ।
यशोदया लालितपुष्टगात्रं
श्रीकृष्णचन्द्रं सततं स्मरामि ।।

व्रजगोपीजनों के वस्त्रों का हरण करने वाले, माता यशोदा के द्वारा परिपालित दिव्य परिपुष्टस्वरूप जिनका है, जो मथुराधिपति वासुदेव रूप से भी अतिशय सुशोभित हैं ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का निरन्तर स्मरण करते हैं।

I always remember Lord Krishna, the thief of the robes of Gopies, the son of Yashoda and the king of Mathura.

(८)

हैयङ्गवीनाऽशनसुप्रवीणं
सद्गोपयूथैः सह केलिमग्नम् ।
गोमातृदुग्धाऽमृतपानशीलं
श्रीकृष्णचन्द्रं सततं स्मरामि ।।

सुन्दर नवनीत (माखन) के सेवन में परम कुशल हैं, व्रजगोपगणों के साथ विभिन्न रसमयी ललित व्रजलीलाओं के करने में तल्लीन हैं, और गोमाता के अमृतस्वरूप दुग्ध पान करने में अति प्रवीण हैं एवंविध भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का सब समय स्मरण करते हैं।

I always remember the same Lord Krishna who is all efficient in using butter deeply involved in the Rashleela of Gopies expert in the use of nectar like cow milk.

(९)

कंसान्तकं दैत्यविनाशकारं
यत्पूतनापाटवकालकालम् ।
गोवर्धनेशं गिरिराजरूपं
श्रीकृष्णचन्द्रं सततं स्मरामि ।।

(९)

महानिशाचरी पूतना के चातुर्य के काल के भी महाकाल स्वरूप हैं, दैत्यराज कंस का संहार करने वाले गिरिराज श्रीगोवर्धन स्वरूप सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का सार्वकालिक स्मरण करते हैं।

I remember all the time Lord Krishna who is known as Govardhan, the killer of demon king, Kans and the symbol of Mahakal for Mahanishichari Putna [great death-god for clever demon Putna].

(१०)

वेदैः पुराणैश्च सुगीयमानं
समग्रतन्त्रागमवर्णितञ्च
सौन्दर्यधाम-स्मरमानदारं
श्रीकृष्णचन्द्रं सततं स्मरामि ।।

वेद-पुराणादि शास्त्र जिनके दिव्यस्वरूप का निरन्तर वर्णन करते हैं समस्त तन्त्रादिशास्त्र भी उन श्रीहरि का विविध रूप से परिवर्णन करने में अनवरत अभिरत हैं। कोटि-कोटि काम के गर्व को विखण्डित करने वाले, सौन्दर्यमाधुर्यलावण्यधाम अखिलान्तरात्मा भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का अविचल रूप से स्मरण करते हैं।

We remember Lord Krishna endlessly, the Almighty, the destroyer of crores of *kamas*, and about whom the Vedas, Puranas and other Shastras present an endless description of His various divine deeds.

(११)

कृष्णचन्द्र-दशश्लोकी भक्ताऽऽमोदप्रदायिका ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ।।

परम भागवत भगवद्भक्तों को सर्वदा आनन्द प्रदान करने वाली श्रीकृष्णचन्द्र-दशश्लोकी जिसकी रचना उन्हीं श्रीप्रभु का परम कृपा प्रसाद

रूप है जो पठनीय है।

The composition of this prayer. which is a permanent source of pleasure to devotees of Lord Krishna, is the fruit of the blessing of Lord Krishna and is worth reading.

श्रीकृष्णाष्टकं स्तोत्रम्

(१)

श्रीमत्कृष्णं सदा कृष्णं श्रीकृष्णं कमलेक्षणम् ।
श्रीराधया समं कृष्णं वन्दे कृष्णं परात्परम् ।।

पापानि कल्मषाणि कर्षति विनाशयाति इति कृष्णः, अर्थात् शरणागत भगवज्जनों के यावज्जन्मान्तरीय समस्त पापों का क्षय करदें ऐसे परम कृपामय भगवान् श्रीकृष्ण जो कमलनयन परात्परतत्त्व हैं, अपने वामाङ्ग में परिशोभित सर्वेश्वरी श्रीराधा प्रियाजी सहित सदा सर्वदा उनकी अभिवन्दना करते हैं।

I always pray to Lord Krishna known for destroying the sins. Whoever surrenders to Him with devotion gets rid of all the sins, and the lotus-eyed Lord Krishna is always by the right side of goddess Radha.

(२)

व्रजे कृष्णं वने कृष्णं श्रीकृष्णं यमुनातटे ।
द्रुमे कृष्णं दले कृष्णं वन्दे कृष्णं मनोहरम् ।।

व्रज और श्रीवृन्दावन तथा पुण्य सलिला यमुना के पावन तट पर एवं

कदम्ब-तमाल आदि सुन्दर वृक्षावलियों पर और उनके कमनीय पल्लवों के पुञ्ज भाग पर अतिशय मनोहर परम सुशोभित वृन्दावननवनिकुञ्जविहारी व्रजेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की वन्दना करते हैं।

I pray to Lord Krishna who is installed in the Vrindavan [Vraza] on the confluence of pious Yumuna overloaded with the leaves and twigs of kadamba and Tamal.

(३)

सखीभिः सेवितं कृष्णं कृष्णं गोयूथपैः सह ।
रसब्रह्म प्रियं कृष्णं वन्दे केशेन्द्रवन्दितम् ।।

जगत् रचयिता ब्रह्मा और जगत् संहर्ता श्रीशंकर तथा स्वर्ग के अधिष्ठाता इन्द्र द्वारा जिनकी सतत नतमस्तक वन्दना की जाती है। निकुञ्ज सखी परिकर द्वारा परिसेवित कोटि-कोटि गोवृन्दों के साथ परम शोभायमान रसब्रह्म सर्वेश्वर समस्त जगत्पोषक श्रीकृष्ण भगवान् की सश्रद्ध वन्दना करते हैं।

I respectfully pray to the protector of the world, Lord krishna, who is worshipped by the creator, Lord Brahma and destroyer, Lord Shiva, and is surrounded by Gopies and Gopies as well as crores of cows.

(४)

कुञ्ज-निकुञ्जगं कृष्णं श्रीकृष्णं व्रजजीवनम् ।
हृद्यं कृष्णं गुणागारं वन्दे कृष्णं सुधानिधिम् ।।

निरतिशयसौन्दर्य-माधुर्य-लावण्य-कारुण्य-सौकुमार्य-सौशील्यादि दिव्यगुणगणों के अनन्तकोष एवं समस्त व्रज के जीवनाधार,

असीमरसामृतसिन्धुस्वरूप अतिशय सौन्दर्य सम्पन्न, कुञ्ज-निकुञ्ज में विहरण अभिरत श्रीराधाप्रियाजी सहित श्रीकृष्ण भगवान् की सभक्ति वन्दना करते हैं।

I pray all devotedly to Lord Krishna along with Radha who is known for their divine beauty, the life source of the people of Vraza and the master of countless divine virtues and the ocean of nectar.

(५)

दिव्यवेणुकरं कृष्णं रासलीलारतं प्रभुम् ।
श्रीराधाध्यानतल्लीनं वन्दे कृष्णं कलाविदम् ।।

परम कमनीय दिव्य-वंशी को अपने कर कमलों में धारण किये हुए नानाविध कलित कलाओं से परिपूर्ण, अपनी परमाह्लादिनी शक्ति वृन्दावनाधीश्वरी श्रीराधा स्वामिनीजी के ध्यान में निमग्न रासलीलारस में अभिरत श्रीकृष्ण प्रभु की पुनः पुनः वन्दना करते हैं।

I repeatedly pray to the same Lord krishna, who with His divine flute in His hand, full of countless artistic lusture, is deeply involved in the memory of Radha and His Rashleela with Radha and Gopies.

(६)

कोटिलावण्यसम्पन्नं नवनीरदशोभनम् ।
कृष्णं कुञ्जप्रियं कृष्णं वन्दे कृष्णं प्रभाकरम् ।।

कोटि-कोटि सौन्दर्य राशि परिपूर्ण नवीन मेघ सदृश सुभग श्यामल स्वरूप, अपनी अनुपम आभा से सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करने वाले, जिनको कुञ्ज-निकुञ्ज अति प्रिय है एवंविध श्रीकृष्ण भगवान् की मुहुर्मुहुः

अभिवन्दना करते हैं।

I pray to the same Lord Krishna from the Very core of my heart who lights the entire universe by His divine glow and looks *shyma*l like crores of black clouds.

(७)

मायूरपिच्छकान्तञ्च व्रजगोपसमावृतम् ।
श्रीकृष्णं कचशोभाऽऽढ्यं वन्दे कृष्णं निशाप्रियम् ।।

मयूर-मुकुट धारण किये अतीव सौन्दर्य स्वरूप, सुन्दर श्यामल घुंघराले केशों की शोभा से परम मनोहर, रात्रि ही जिनको अत्यन्त प्रिय लगती है, यथा-प्राकट्य समय मध्यरात्रि और महारास का समय भी मध्य रात्रि अतएव वे प्रभु निशाप्रिय हैं। व्रजगोपजनों से शोभायमान ऐसे श्रीराधासर्वेश्वरी सहित श्रीकृष्ण भगवान् की वन्दना करते हैं।

I pray to Lord Krishna along with Radha surrounded by Gopies and Gopies of vraza with peacock crown, curly hair, lover of night and lover of Maharash in midnight.

(८)

ऋषि-मुनीन्द्रवृन्दैश्च समुपास्यं हृदा मुदा ।
वृन्दावनेश्वरं कृष्णं वन्दे वन्दारुवन्दितम् ।।

ऋषि-मुनीश्वरों द्वारा उल्लासपूर्वक अन्तःकरण से सर्वदा उपासनीय, वन्दीजनों द्वारा स्तुति पूर्वक वन्दित ऐसे वृन्दावनेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् की नित्यशः वन्दना करते हैं।

I daily pray to Lord Krishna who is worshipped by Rishies and Munees wholeheartedly and is also worshipped by devotees of Vrindavans.

(९)

श्रीमत्कृष्णाष्टकं स्तोत्रं कृष्णभक्तिरसप्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

भगवान् श्रीकृष्ण की पराभक्तिरस को प्रदान करने वाला यह श्रीकृष्णाष्टक स्तोत्र जिसकी रचना सर्वेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् की अनुकम्पा से इस शरणागत द्वारा सम्पन्न हुई जो प्रस्तुत है।

This prayer is dedicated to the same Lord Krishna due to whose blessings it has been possible and presentable.

श्रीबलभद्राष्टकं स्तोत्रम्

(१)

असीमबलसम्पन्नं नीलाम्बरधरं परम् ।
रेवतीरमणं रामं श्रीमत्कृष्णाग्रजं भजे ।।

जिनका अपार बल है नीलाम्बर अर्थात् नीलाभवस्त्र धारण किये हुए रेवती प्राणवल्लभ प्रियतम भगवान् श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ भ्राता श्रीबलरामजी का हम भजन करते हैं।

I pray to Lord Balarama [elder brother of Lord Krishna] whose immeasurable strength is the blue sky wearing blue robe.

(२)

व्रजमण्डलदेवञ्च गौरवर्णं कृपार्णवम् ।
गदा-प्रशिक्षणे दक्षं श्रीमत्कृष्णाग्रजं भजे ।।

कृपा के अगाधसिन्धुस्वरूप गौरवर्णरूप, गदा संचालन के प्रशिक्षा में परम कुशल समस्त व्रजमण्डल के देवाधिदेव भगवान् श्रीकृष्ण के अग्रज भ्राता श्रीबलरामजी का पावन भजन करना ही परम अभीष्ट हैं।

Our sacred and ultimate duty is to utter the name of Balaramji [elder brother of Lord Krishna-the Supreme God of Brazamandal] who is unfathomably fair, expert in the training of Gada and full of bliss.

(३)

समग्रतीर्थयात्रासु विचरन्तं हरिप्रियम् ।
महागाम्भीर्यरूपञ्च श्रीमत्कृष्णाग्रजं भजे ।।

भारतवर्ष के समस्त तीर्थ और धामों की यात्रार्थ विचरणशील, भगवान् श्रीकृष्ण के परमप्रिय और जिनका स्वरूप अतीव गम्भीरता से परिपूर्ण है ऐसे श्रीकृष्ण भगवान् के अग्रज श्रीबलरामजी का भजन-स्मरण करते हैं।

I remembar and offer my prayer to the same Balaramji [elder brother of Lord Krishna] who is the wanderer of religious places and dhams of the entire country, the most beloved of Lord Krishna, the symbol of complete seriousness.

(४)

श्रीबलराममानन्दमहासिन्धुं नुतं सुरैः ।
नानाविद्याकलापूर्णं श्रीमत्कृष्णाग्रजं भजे ।।

आनन्द के अगाध सागर, देव समूह द्वारा सतत प्रणाम किये गये और विविध विद्याओं अनेकानेक उत्तमोत्तम कलाओं से परिपूर्ण एवं उसके परिज्ञाता ऐसे श्रीकृष्ण भगवान् के ज्येष्ठ भ्राता श्रीबलरामजी का मंगलमय भजन ही परम सार है।

The real end of every prayer is to offer prayer to Balaramji [elder brother of Lord Krishna] who is known as the unfathomable ocean of pleasure complemented by Devas and full of superior most arts and knower if many things.

(५)

दीनबन्धुं प्रलम्बघ्नं सीरपाणिं हलायुधम् ।
प्रपन्नतापहर्तारं श्रीमत्कृष्णाग्रजं भजे ।।

वे दीनबन्धु अर्थात् दैन्यभावसंवलित भगवज्जनों के परम पालक बन्धु हैं। मूसल और हल ही उनके अद्भुत शस्त्र हैं, जिनको धारण किये अतीव शोभायुक्त रहते हैं। समागत शरणागत भक्तजनों के सभी प्रकार के तापों का विकट संकटों का तत्काल परिशमन करने वाले श्रीकृष्ण भगवान् के अग्रज भ्राता श्रीबलरामजी का सतत भजन करते हैं।

He is a real friend of the devotees of Almighty. *Musal* and *Hal* are His wonderful weapons that add to his beauty. He is the elder brother of Lord Krishna who is known for the immediate destructions of the sins of all His devotees coming at His feet.

(६)

कनकमौलिदिव्याऽऽभं कनककुण्डलाञ्चितम् ।
कनकभूषणै र्हृद्यं श्रीमत्कृष्णाग्रजं भजे ।।

सुवर्ण के मुकुट से जिनकी दिव्य शोभा से प्रकाशमान हैं इसी प्रकार स्वर्ण के ही कुण्डल धारण किये परम कमनीय दर्शन हो रहे हैं। और स्वर्ण के हार-माला आदि विविध आभूषणों से अत्यन्त सुन्दर दर्शनीय है एवंविध श्रीकृष्ण भगवान् के अग्रज भ्राता श्रीबलरामजी का सुभग भजन करना ही परम अभीष्ट है।

Our sole aim is to pray to Balaramji [elder brother of Lord Krishna] wearing a crown with divine light, golden earrings studded with different kinds of jewels of ornaments adding to His

glamour.

(७)

गोविप्ररक्षणे नित्यं तत्परं करुणार्णवम् ।
दैत्यसंहारकर्तारं श्रीमत्कृष्णाग्रजं भजे ।।

गो-ब्राह्मणों की रक्षा करने के लिए सदा सर्वदा तत्पर रहते हैं। करुणा के समुद्र स्वरूप हैं किन्तु साथ ही जो महाविनाशकारी निशाचर हैं उनके सर्वात्मना संहार करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ भ्राता श्रीबलरामजी का अनुपम भजन करना ही परम सार है।

The ultimate aim of life is to offer rare prayer to Balaramji [elder brother of Lord Krishna] who is always for the safety of cows and Brahmins. He himself is a symbol of ocean of sympathy and the destroyer of all demons.

(८)

अनन्तशक्तिमन्तञ्च भवतापनिवारकम् ।
बलभद्रं सदा सेव्यं श्रीमत्कृष्णाग्रजं भजे ।।

अगणित शक्ति अर्थात् बल के अधिष्ठाता परम बलिष्ठ हैं। संसार के आध्यात्मिक, -आधिदैविक-आधिभौतिक इन त्रिविध तापों का निवारण करने वाले सर्वदा वन्दनीय अर्चनीय बलभद्ररूप भगवान् श्रीकृष्ण के अग्रज भ्राता श्रीबलरामजी का भजन ही परम आधार है।

The prayer of Balaramji [elder brother of Lord Krishna] is the ultimate base of life. Balaramji is endowed with innumerable strength, capable of destroying all the three worldly sins, i.e., spiritual,

physical, and material, ever prayed by all in the form of Balbhadra.

(६)

बलभद्राष्टकं स्तोत्रं सर्वकष्टहरं द्रुतम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

तत्काल समस्त कष्टों का हरण करने वाला यह बलभद्राष्टक स्तोत्र जो उन्हीं की परम प्रेरणा से हमारे द्वारा प्रस्तुत हुआ यह स्तोत्र सर्वदा ध्यानपूर्वक पठनीय है।

This Balabhadra sloka, the ready made destroyer of all miseries and worries, is the outcome of the inspiration of Balbhadraji. Hence it is to be read attentively.

श्रीसर्वेश्वरस्तवः

(१)

कुमारैश्च संसेव्यमानं रसेशं
ततं नारदाऽर्च्यं श्रिया राजमानम् ।
व्रजे निम्बमार्तण्डहस्ताब्जसेव्यं
परं ब्रह्म सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

महर्षिवर्य सनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमार इन चारों जगत्स्रष्टा श्रीब्रह्मदेव के मानसपुत्र जो सदा सर्वदा बालब्रह्मचारीरूप में लोक-लोकान्तरों में अव्याहतगति से विचरणशील ऐसे इन महर्षिप्रवरों से सतत परिसेवित और इन्हीं महर्षियों के शिष्य देवर्षिवर श्रीनारदजी जिनके द्वारा संसेव्य तथा जो दिव्यरूप से अपनी परमाह्लादिनी शक्ति वृन्दावनाधीश्वरी श्रीराधिकाजी सहित परम सुशोभित हैं। व्रजधाम में गिरिराज गोवर्धन निकटवर्ती निम्बग्राम में श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य जिन्हें देवर्षिवर्य श्रीनारदजी द्वारा यह दिव्य सेवा प्राप्त हुई जिनके करकमलों से परम संसेवित परब्रह्मरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु उनको हम प्रतिदिन अभिनमन करते हैं।

I bow respectfully everyday to all powerful Lord Krishna who is served by God-like Saint Naradji located near Brajadham beautified along with the Gopies and Radha of Vrindavana and magnified by Naradji and his disciples and is honoured by all the four mind-sons of Lord--Sanak, Sanandan, Sanatan, and Sanat Kumar.

(२)

प्रियाराधिकाश्रीसमेतं वरेण्यं
निकुञ्जाऽऽलिवृन्दैः समं राजमानम् ।

निकुञ्जे सुरम्ये लता-शाखिपुञ्जे
परं ब्रह्म सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

अपनी ही दिव्यानन्दप्रदायिनी व्रजेश्वरी सर्वेश्वरी श्रीराधाप्रियाजी सहित जो परम वरेण्य हैं वृन्दावन नवनित्यनिकुञ्जस्थ सखीवृन्दों के साथ अतिशय शोभायुक्त हैं तथा सुन्दर लतातरुवरों की सघन दिव्य निकुञ्ज धाम में विराजित परब्रह्मस्वरूप श्रीसर्वेश्वर भगवान् को सदैव सश्रद्ध नमन करते हैं।

I always bow respectully to the Sarveshwer Lord along with Radha who is all attractive because of the company of the Gopies in the lovely garden of Vrindavana.

(३)

पुराणादिशास्त्रै-र्बुधैश्चारुगीतं
रसब्रह्मकृष्णं भवोत्पत्तिबीजम् ।
अनन्तप्रभावं सुरेन्द्रादिवन्द्यं
परं ब्रह्म सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

श्रुति-पुराणादि शास्त्रों एवं धीर मनीषियों द्वारा जिनका अनवरत स्तुतिपूर्वक निरूपण किया जाता है और इस समस्त चराचरात्मक यावन्निखिल जगत् के उत्पत्ति, स्थिति और लय के एकमात्र प्रधान कारण स्वरूप हैं जो रसपरब्रह्म कृष्ण रूप हैं, जिनका असीम प्रभाव है। इन्द्रादि सुरवृन्दसेवित परब्रह्म श्रीसर्वेश्वर प्रभु का नित्यशः अभिनमन करते हैं।

I everyday bow to the Lord Sarveshwer who is served by Indra and other Devas. Even religious books like Smurity, Puranadi and great people have been under the immense influence of Lord Krishna

who is behind all origins of the world and its destruction.

(४)

व्रजे धाम्नि वृन्दावने कुञ्जमध्ये
सखीवृन्दसेव्यं सभक्तिं सनिष्ठम् ।
प्रपन्नैः प्रगेयं विपञ्चीसुवाद्यैः
परं ब्रह्म सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

व्रजस्थ श्रीवृन्दावनधाम के दिव्यतम कुञ्ज में अतीव भावभरित भक्तिपूर्वक परमनिष्ठा के साथ सखीवृन्दों से सर्वदा परिसेवित एवं वीणा-मृदङ्ग आदि माङ्गलिक वाद्यों के वादन पूर्वक शरणागत भगवज्जनों द्वारा जिनके सौन्दर्य-माधुर्यादि स्वरूप का परिवर्णन किया जाता है इत्थंभूत भगवान् श्रीसर्वेश्वर का नियमित दैन्यभावयुक्त नमन करते हैं।

I bow regularly to Lord Sarveshwer who is surrounded by Gopies with all other pleasure giving musical instruments in the lovely garden located in Vrindavandham.

(५)

निकुञ्जेषु सौरीप्रतीरे सुशोभं
रतं रासलीलारसाब्धौ रसेशम् ।
सखी----रङ्गदेवीसदोपासनीयं
परं ब्रह्म सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

श्रीयमुना के पावन पुलिनवर्ती निकुञ्जों में सुशोभित तथा रस अर्थात् आनन्द उसके अधिष्ठाता रासलीलारससिन्धु में अभिरत एवं श्रीरङ्गदेवीजी सखी अर्थात् श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य स्वयं नित्यनिकुञ्ज में सतत श्रीरङ्गदेवीजी

सखी स्वरूप में सदा श्रीयुगल सेवा में अवस्थित रहते हैं उनके द्वारा सदा उपासनीय परब्रह्म श्रीसर्वेश्वर प्रभु उनको प्रतिदिन नमन करते हैं।

I everyday bow before the same Lord Nimbarkacharge who is found in the service of Lord Krishna and Radha who are installed on the sacred confluence of the river Yamuna.

(६)

हरे -- हस्तचक्राङ्गनिम्बार्कसेव्यं
भवोम्भोधिबाधाहरं चक्रपाणिम् ।
अशेषैर्मुनीभिः सदाऽऽराध्यमानं
परं ब्रह्म सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

भगवान् श्रीकृष्ण के दिव्य करारविन्दों में सदा सुशोभित चक्रराज श्रीसुदर्शन इन्हीं के परमावतार स्वरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् से परिसेव्य। इस संसार-सागर की जो भीषण बाधा है उसका निवारण करने वाले सुदर्शन चक्रराज जिनके हस्तकमल में विराजमान हैं और अगणित मुनिजनों द्वारा सर्वदा आराधनीय है ऐसे परब्रह्म श्रीसर्वेश्वर भगवान् का दैनिक नमन करना परम अभीष्ट कर्तव्य है।

It's our sacred duty to offer prayer daily to the same Sarveshwer Lord, prayed by countless saints, the remover of all the big problems of this ocean-like world with sudarshan in hand. Lord Nimbarka is known as the real incarnation of the same Lord Krishna beautified with chakra sudershana.

(७)

निशान्ते च गोवृन्दपृष्ठे व्रजन्तं
व्रजे मञ्जुकुञ्जे वेणुं क्वणन्तम् ।
व्रजाधीशकृष्णं सुयष्टयादिरम्यं
परं ब्रह्म सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

सुप्रभात के समय कोटि-कोटि गो समूह के पृष्ठभाग में विचरण करते हुए व्रज के सुन्दर कुञ्ज में वंशी बजाते हुए व्रजेश्वर भगवान् श्रीकृष्णरूप जो दिव्य स्वर्णयष्टिका लिये अतिशय शोभायुक्त परब्रह्म भगवान् श्रीसर्वेश्वर को नित्य-नित्य अभिनमन करते हैं।

I everyday respectfully bow to the same attractive Lord Krishna, wearing golden ornaments, who is found roaming in and around Vraja singing on a flute in the midst of crores of cows.

(८)

व्रजेशं वनेशं वरेशं समेशं
सखीशं मतीशं रवीशं गिरीशम् ।
निकुञ्जेश्वरश्चाऽभिरामं परेशं
परं ब्रह्म सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

जो व्रजधाम के सर्वस्व ईश्वर हैं इसी प्रकार श्रीवृन्दावनधाम के अधीश्वर एवं परमवरेण्य परमेश्वर सर्वेश्वर सखीपरिकर के अधिपति निखिल चराचर प्राणियों को दिव्य बुद्धि प्रदाता निखिलेश्वर और समस्त जगत् को प्रकाशमान करने वाले श्रीसूर्यदेव के भी परमाधीश्वर हैं, व्रजस्थ गिरिराज गोवर्धन के सर्वाधीश्वर हैं परात्पर परमेश्वर निकुञ्जेश्वर अतिशय कमनीय स्वरूप परब्रह्म श्रीसर्वेश्वर प्रभु को सर्वात्मना अभिनमन करते हैं।

I bow to the all powerful Lord Sarveshwer, Lord of entire Brajadham, the giver of divine intellect to the goddess of wisdom [who distributes divine intellect among the people] and the Lord of God-Sun who lights the entire universe and the holder of Giriraj mountain on the little finger in Vraja.

(९-१०-११)

शालग्रामस्वरूपश्च दक्षिणचक्रशोभितम् ।
गुञ्जाफलसमं रूप-मस्ति सनन्दनाऽश्चितम् ।।
नारद-निम्बमार्तण्ड-सेवितं सूक्ष्ममञ्जुलम् ।
पूवाचार्यसदाराध्यं सर्वेश्वरं भजे हृदा ।।
एवं परम्पराप्राप्तं विश्वविख्यातमद्भुतम् ।
निम्बार्काचार्यपीठेऽस्मिन्पूजितमस्ति सर्वदा ।।

जो शालग्राम स्वरूप दक्षिणावर्ती चक्राङ्कितरूप में परम सुशोभित गुञ्जाफल (चिरमी) सदृश स्वरूप श्रीसनकादि महर्षियों से संसेवित एवं देवर्षिप्रवर श्रीनारदजी से समर्चित है। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य द्वारा परिपूजित अतिसूक्ष्मस्वरूप परम सुन्दर हैं, श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के परम्परागत समस्त पूर्वाचार्यों द्वारा सेवित एवं उनके परमाराध्य ऐसे श्रीसर्वेश्वर प्रभु का अपने हृदय से भजन करते हैं। और परम्परा से प्राप्त समग्र विश्व में परम प्रख्यात अतीव अद्भुत स्वरूप में शोभायमान अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में सदा सर्वदा पूजित स्वरूप में विद्यमान हैं जिनका मुहुर्मुहुः स्मरण नमन करते हैं।

I bow before Lord Krishna, the real source of Nimbark Sampradaya, established by Lord Nimbarkacharyajee. I offer prayer to the same Lord from the very core of my heart who is adored with chakra sudarshana.

(१२)

सर्वेश्वरपराभक्ति-प्रदः सर्वेश्वरस्तवः ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ।।

श्रीसर्वेश्वर प्रभु की निर्मल पावनतम पराभक्ति को प्रदान करने वाला यह श्रीसर्वेश्वरस्तव है जिसकी उन्हीं श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा द्वारा इसकी रचना हुई जो उन्हीं श्रीप्रभु के श्रीचरणारविन्दों में प्रस्तुत है।

This prayer is dedicated to the same Lord Sarveshwer due to whose blessings it has been possible.

श्रीराधासर्वेश्वराष्टकम्

(१)

अमन्दानन्ददं दिव्य-सिंहासनसुशोभितम् ।
प्रभुं भक्तैः समाराध्यं राधासर्वेश्वरं भजे ।।

असीम आनन्द के प्रदायक दिव्य सिंहासन पर विराजे हुए अतीव शोभायमान और अपने अनन्य भक्तवृन्दों द्वारा आराधनीय ऐसे परम रुचिर अर्थात् अतिसुन्दर श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु का भजन करते हैं।

I pray to Radhasarveshwer, the giver of immense pleasure, seated on the divine throne and appears to be all attractive particularly when prayed by disciples.

(२)

अतीवदर्शनीयञ्च रत्नाऽलङ्कारभूषितम् ।
नितरां मनसा देवं राधासर्वेश्वरं भजे ।।

नानाविध रत्नजटित अलङ्कारों (आभूषणों) से विभूषित, परम दर्शनीय ऐसे देवस्वरूप श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु का अपने अन्तःकरण से सभी प्रकार भजन करते हैं।

I pray from the very core of my heart to Radha Sarveshwer who is studded with all sorts of jewels and seems to be all worth seeing.

(३)

शिखिपिच्छधरं युग्मं लोलकुण्डलमण्डितम् ।
मञ्जुमौलिधरं सेव्यं राधासर्वेश्वरं भजे ।।

मोरपंख धारण किये हुए जिन श्रीप्रभु के मनोहर कुण्डल सुशोभित हैं। सुन्दर मुकुट से अति कमनीय जो सर्वदा अर्चनीय हैं उन श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् का भजन करते हैं।

I pray to the same Lord Sarveshwer who is with peacock feather crown and attractive ear rings.

(४)

स्तूयमानं सदा देवैः पीताम्बरमनोहरम् ।
गीयमानं सखीवृन्दे राधासर्वेश्वरं भजे ।।

सुन्दर दिव्य पीताम्बर से परम दर्शनीय और देवताओं के समूह से सदा स्तुतिपूर्वक प्रार्थना किये गये एवं सखीजनों द्वारा जिनका दिव्य गुण गान किया जाता है एवं विध भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर का भजन करते हैं।

I pray to the same Lord Sarveshwer who is dressed in beautiful yellow robe and is honoured and

prayed by Devas and is divinely appreciated by Gopies.

(५)

महाभागवतै र्ध्येयं वन्दनीयञ्च सर्वदा ।
मञ्जुमाधुर्यसद्धाम राधासर्वेश्वरं भजे ।।

परम भागवत महापुरुषों द्वारा जिनका ध्यान किया जाता है और उनके द्वारा वे प्रभु सदा अभिवन्दित हैं। सुन्दर मधुरता के स्वरूप श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् का भजन करते हैं।

I pray to Lord Radha Sarveshwer, symbol of beauty and sweetness, honoured and prayed by great Devotees of God.

(६)

कृपा-कारुण्यपूर्णञ्च कृष्णवक्रकचान्वितम् ।
सौरीतटसमापन्नं राधासर्वेश्वरं भजे ।।

निर्हैतुकी कृपा एवं करुणा के अगाधकोष, कुञ्चित अलकावली से अति कमनीय, श्रीयमुनाजी के सुरमणीय तटीय भाग पर विराजित श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु का सर्वात्मना भजन ही अपना परम अभीष्ट लक्ष्य है।

Our ultimate aim of life should be to pray to the same Lord Sarveshwer attired in leaves, and full of fathomless sympathy installed on the confluence of Yamuna.

(७)

हेमलकुटहस्ताब्जं कराब्जमुरलीधरम् ।
मन्दस्मिताननं नित्यं राधासर्वेश्वरं भजे ।।

जिनके करकमलों में स्वर्णमण्डित लकुट अर्थात् यष्टिका अति शोभाप्रद है। इसी प्रकार मधुर मुरली (वंशी) भी हस्तारविन्दों में परम दर्शनीय है और मन्द-मन्द हास्ययुक्त जिन श्रीप्रभु का मुखारविन्द है ऐसे श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् का भजन ही जीवन का सर्वस्व सार है।

The real value of our life lies in praying to the Almighty who looks all attractive with gold studded stick in his hand and flute on his lipss.

(८)

प्रपन्नाऽनन्यभक्तानां जगत्तापनिवारकम् ।
रससिन्धुं रसाधारं राधासर्वेश्वरं भजे ।।

शरणागत अनन्य परम भागवत भगवद्भक्तों के जागतिक यावन्मात्र आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन समस्त त्रिविध तापों का निवारण करने वाले अगाध आनन्द के सिन्धु महानन्द के परमाधार स्वरूप श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् का प्रतिपल भजन ही सर्वाधार है।

I bow to the Lord Radha Sarveshwer every minute who is the destroyer of all the three sins of the universe.

(९)

युग्मभक्तिप्रदं स्तोत्रं राधासर्वेश्वराष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीयुगलभक्ति को प्रदान करने वाला यह श्रीराधासर्वेश्वराष्टक स्तोत्र इन्हीं कृपार्णव युगलकिशोर की कृपाजन्य यहाँ प्रस्तुत हुआ है जो सदा पठनीय है।

This prayer composed in honour of Radha Sarveshwer is the fruit of His blessings and is to be read throughout.

श्रीमदानन्दमनोहरवृन्दावनचन्द्राष्टकम्

(१)

धाम्नि वृन्दावने रम्ये श्रीनिकुञ्जे सुशोभितम् ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च नौम्यानन्दमनोहरम् ।।

श्रीवृन्दावन धाम के परम सुरम्य श्रीनिकुञ्ज में शोभारूप में विराजित श्रीआनन्दमनोहरवृन्दावनचन्द्र भगवान् को मनसा, वाचा, कर्मणा अभिनमन करते हैं।

I bow to the same Lord Krishna, in thoughts, words, and actions, who is installed in a dignified way in the actions, who is installed in a dignified way in the garden of Vrindavanadham.

(२)

रङ्गदेवीसखीसेव्यं हितासखीस्तुतं प्रियम् ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च नौम्यानन्दमनोहरम् ।।

श्रीवृन्दावनस्थ दिव्य निकुञ्जधाम में अष्ट सखियों में प्रमुख सखी श्रीरङ्गदेवीजी द्वारा परिसेवित और श्रीहितु सखी द्वारा दिव्यरूप में स्तुति किये गये जो अत्यन्त सौन्दर्य माधुर्य सम्पन्न श्रीआनन्दमनोहरवृन्दावनचन्द्र प्रभु को सर्वात्मना प्रणमन करते हैं।

I bow to the same Lord Krishna who is served, honoured and in whose prayer eight sakhes of Vrindavana garden headed by Sri Rangdeviji sing songs.

(३)

दिव्यसिंहासनासीनं राधया सहितं सदा ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च नौम्यानन्दमनोहरम् ।।

अपनी परमाह्लादिनी आद्याशक्ति वृन्दावननित्यनवनिकुञ्जेश्वरी सर्वेश्वरी श्रीराधाप्रियाजी सहित सर्वदा परम दिव्यतम सिंहासन पर अतिकमनीयता पूर्वक विराजित श्रीआनन्दमनोहरवृन्दावनचन्द्र भगवान् को पुनः पुनः सश्रद्ध होकर प्रणाम अर्पित करते हैं।

I respectfully again salute the same Lord Krishna who is seated on the divine throne by the side of goddess Rsdha.

(४)

निम्बार्कविधिना नित्यं सम्पूज्यं विपिनेश्वरम् ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च नौम्यानन्दमनोहरम् ।।

परमाद्याचार्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यचरणों द्वारा प्रवर्तित श्रीनिम्बार्क सम्प्रदायीय वैदिक विधिपूर्वक जिनका प्रतिदिन समर्चन होता है और जो प्रभु इस वृन्दावन धाम के परम अधीश्वर हैं ऐसे श्रीआनन्दमनोहरवृन्दावनचन्द्र प्रभु को अपने अन्तःकरण से प्रणमन करते हैं।

I salute from the very core of my heart the same Lord Krishna who is the owner of the Vrindavandham and in whose honour Paramdevacharya NimbarkacharyaJe e had reformed Nimbark Sampradaya to offer prayer methodically everyday.

(५)

पूर्वाचार्यकराम्भोजै-श्चारु सेव्यं व्रजेश्वरम् ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च नौम्यानन्दमनोहरम् ।।

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय जो परम सनातन अनादिवैदिक सत्सम्प्रदाय है उसके पूर्व परमाचार्यों के करकमलों द्वारा जिनकी वैदिक विधिपूर्वक सुन्दररूप से अर्चा-सेवा सम्पादित होती रही है ऐसे व्रजेश्वर श्रीआनन्दमनोहरवृन्दावनचन्द्र भगवान् को भक्ति भावनापूर्वक तन्मयता से प्रणति समर्पित करते हैं।

I offer my prayer with a sense of deep dedication devotion and dedication to the same Lord Krishna in whose honour Nimbark Sampradaya, the oldest sanatan Sampradayas' prayer has been offered methodically and beautifully.

(६)

श्रुति-तन्त्र-पुराणाद्यै-र्वाणीग्रन्थैः समर्चितम् ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च नौम्यानन्दमनोहरम् ।।

वैदिक-तान्त्रिक-पौराणिक एवं निम्बार्क सम्प्रदाय के पूर्व परम रसिकाचार्यों की श्रीमहावाणीजी आदि व्रजभाषा में गेय रसमय पद्यों में निबद्ध दिव्य सरस वाणी ग्रन्थों के माध्यम से अष्टयाम सेवा-समर्चना की जाती है एवंविध श्रीआनन्दमनोहरवृन्दावनचन्द्र प्रभु को अपने अन्तर्हृदय से मुहुर्मुहुः अभिनमन करते हैं।

I bow wholeheartedly and emotionally to the same Lord Krishna in whose honour the acharya of Nimbark Sampradaya [beliving in vedic, Tantric and puranic] composed poems, songs, and recited methodically.

(७)

सर्वदा राधया सार्द्धं नानाऽलङ्कारसुन्दरम् ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च नौम्यानन्दमनोहरम् ।।

विविधरूपात्मक सुन्दरातिसुन्दर दिव्यतम वस्त्राभूषणों से सुसज्जित अतीवसुन्दरस्वरूप और अनवरत अपनी सर्वाराध्या वृन्दावनाधीश्वरी निकुञ्जेश्वरी श्रीराधिकाजी सहित श्रीआनन्दमनोहरवृन्दावनचन्द्र भगवान् को सप्रणति साष्टाङ्ग दण्डवत् पूर्वक अभिनमन करते हैं।

I bow physically before Lord Krishna along with Radha beautified with divine most dress and Jewels.

(८)

देदीप्यमानश्यामाभं भक्ताभिवांछितप्रदम् ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च नौम्यानन्दमनोहरम् ।।

परम दिव्यतमस्वरूप सुभग श्यामरूप में अतिदर्शनीय भक्तजनों के पावन मनोरथ को पूर्ण करने वाले अतिकृपाधाम श्रीआनन्द-मनोहरवृन्दावनचन्द्र प्रभु को करबद्ध साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणति पुनः पुनः समर्पित हैं।

I bow physically again and again before Lord Krishna by whose grace and blessings the whishes of devotees are fulfilled.

(९)

श्रीवृन्दावनचन्द्रान्त्याऽऽनन्दमनोहराष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

यह श्रीआनन्दमनोहरवृन्दावनचन्द्राष्टक स्तोत्र जिसकी सुरचना उन्हीं श्रीप्रभु की पावन प्रेरणा से सम्पादित हुई जो उन्हीं के श्रीयुगलचरणाविन्दों में सश्रद्ध समर्पित हैं।

This prayer which has been composed under the blessings of Lord Krishna is dedicated to Him respectfully.

श्रीरूपमनोहरवृन्दाचन्द्राष्टकं स्तोत्रम्

(१)

श्रीमद्-वृन्दावने धाम्नि रूपकुञ्जे विराजितम् ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च रूपमनोहरं भजे ।।

श्रीवृन्दावनधाम की रूपमनोहर कुञ्ज में विराजित श्रीरूपमनोहरवृन्दावनचन्द्र भगवान् का अपनी अन्तरात्मा से भजन करना परम अभीष्ट है।

It's most desirable to offer innermost prayer in honour of Lord Krishna who is installed in the garden of Vrindavanadham.

(२)

कमनीयमहादिव्य-दर्शनीयशुभाननम् ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च रूपमनोहरं भजे ।।

जिन श्रीप्रभु का परम कमनीय अर्थात् अतिसुन्दर एवं अत्यन्त दिव्य दर्शनीय मङ्गलमय मुखारविन्द है ऐसे श्रीरूपमनोहरवृन्दावन-चन्द्र प्रभु का अविरल भजन करते हैं।

I pray endlessly to the Lord Krishna whose face is exceedingly attractive, grace giving and worth seeing.

(३)

श्यामाभं पङ्कजाऽक्षञ्च कनककुण्डलाऽद्भुतम् ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च रूपमनोहरं भजे ।।

अतिसुन्दरश्यामस्वरूप जिनकी अनुपम आभा-प्रभा है राजीवलोचन, स्वर्णमय कुण्डलों को धारण किये अतीव अद्‌भुत स्वरूप है ऐसे इन श्रीरूपमनोहरवृन्दावनचन्द्र भगवान् का सर्वदा भजन करते हैं।

I always pray to the same lotus eyed Lord Krishna along with golden earrings, presenting a lovely attractive and lighted look.

(४)

मणि-मुक्ता-प्रवालाऽच्छरत्नहारविभूषितम् ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च रूपमनोहरं भजे ।।

मणि-मुक्ता (मोती) प्रवाल (मूंगा) आदि सुन्दर नव रत्नों के हार से विभूषित जिनका मंगलमय सुन्दर स्वरूप है ऐसे श्रीरूपमनोहरवृन्दावनचन्द्र प्रभु का पावनतम भजन ही अपना परम कर्तव्य है।

It's our sacred duty to offer prayer to Lord Krishna who is beautified with all sorts of diamonds and jewels.

(५)

सौन्दर्यसारसर्वस्वं सर्वकारणकारणम् ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च रूपमनोहरं भजे ।।

सौन्दर्य की परम पराकाष्ठा स्वरूप समस्त कारणों के एकमात्र मूल कारणरूप श्रीरूपमनोहरवृन्दावनचन्द्र प्रभु का बद्धाञ्जलि ध्यानपूर्वक भजन करते हैं।

I pray devotedly to Lord Krishna who is the height of beauty and who is the origin of all the causes and consequences.

(६)

यमुनापुलिने रम्ये विहरन्तं समं श्रिया ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च रूपमनोहरं भजे ।।

श्रीयमुना के अति मनोहारी सुरम्य पुलिन पर अपनी नित्यनिकुञ्जेश्वरी श्रीराधाजी सहित विहरण परायण श्रीरूपमनोहरवृन्दावनचन्द्र भगवान् का सर्वरूपेण भजन ही सार रूप है।

The total prayer of Lord Krishna along with Radha is the real end of life.

(७)

राधया प्रियया साकं लसत्सिंहासने शुभम् ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च रूपमनोहरं भजे ।।

पराभक्तिप्रदायिनी नित्यनवरासेश्वरी श्रीराधाप्रिया सहित अतिशय सुन्दर दिव्य सिंहासन पर सुशोभित श्रीरूपमनोहरवृन्दावनचन्द्र भगवान् का अपने निज मानस में निष्ठापूर्वक अनिर्वचनीय भजन ही प्रमुख उद्देश्य है।

Offering inward prayer to the Lord Krishna along with Radha with a sense of dedication and devotion is the real aim of our life.

(८)

मुरलीवादने दक्षं भक्ताभिलाषपूरकम् ।
श्रीवृन्दावनचन्द्रञ्च रूपमनोहरं भजे ।।

अति सुभग परम मधुर सरस स्वर को प्रकट करने वाली मुरली (वंशी) के वादन में परम प्रवीण और अनन्य भक्तों की पावन अभिवांछा-मनोरथ को पूर्ण करने वाले श्रीरूपमनोहरवृन्दावनचन्द्र प्रभु का सार्वकालिक भजन ही मूलतः सार सर्वस्व है।

All time prayer of Lord Krishna, who is expert in playing on flute and from whose flute emanates sweet musical notes and who fulfills all inner desires of the sacred devotees, is the end of all.

(९)

युग्मभक्तिप्रदं स्तोत्रं रूपमनोहराष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीयुगलप्रियालाल श्यामाश्याम नित्यनवकिशोर श्रीरूपमनोहरवृन्दावनचन्द्रप्रभु की विमल भक्ति प्रदायक इस स्तव का प्रणयन उन्हीं दीनवत्सल श्रीहरि के कृपाजन्य पर निर्भर है उन्हीं की पावन प्रेरणा से यह स्तोत्र प्रस्तुत है।

This prayer is possible and presentable because of the divine grace of Lord Krishna in whose honour this prayer has been sung.

श्रीगोपालचतुश्श्लोकी

(१)

गोविन्द ! केशव ! हरे ! मुरलीमनोज्ञ !
सर्वेश्वर ! प्रणतपाल ! मुकुन्द ! कृष्ण ! ।
राधामनोहर ! महारसरासिन्धो !
गोपाल ! माधव ! विभो ! शरणं त्वमेव ! ।।

हे गोविन्द ! हे केशव ! वंशी को धारण किये अतीव सुन्दर स्वरूप हे सर्वेश्वर ! शरणागतों के रक्षक हे मुकुन्द ! हे कृष्ण ! अपनी आह्लादिनी शक्ति श्रीराधाजी से परम सुशोभित परम दिव्य रस से परिपूर्ण रासलीला रस के अगाध सिन्धु स्वरूप हे गोपाल ! हे माधव ! हे सर्वत्र अणु-अणु में सर्वव्यापकरूप ! हम आप ही के युगलचरणाम्बुजों के अनन्य शरणागत है।

Oh Gobind! Oh Keshav! You look exceedingly attractive with flute on your lipss. Oh protector of dedicated devotees! Oh Mukund, the protector of those who surrender to you; Oh Gopal! the embodiment of ocean-like nectar, full of Rash leela and beautified with the power of Radhaji, Oh madhav! You are all omnipresent in every particle. We are all rare devotes of your lotus like feet.

(२)

गो-गोपवृन्दपरिपालनपूर्णदक्ष
वेदादिशास्त्रप्रतिपादितदिव्यरूप ! ।
वृन्दावनेश्वर ! सुरोत्तम ! विप्रपाल !
गोपाल ! माधव ! विभो ! शरणं त्वमेव ! ।।

गोमाता और गोपवृन्दों के सर्वविध पालन में आप अतीव चतुर शिरोमणि हैं, श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि शास्त्रों में आपके स्वरूप का अद्भुत निरूपण हुआ है। हे वृन्दावनेश्वर ! समस्त देवों में सर्वोपरि आप ही है ब्राह्मणवृन्दों का आप संरक्षण करते हैं। ऐसे मंगलमय हे गोपाल ! हे माधव ! विभो ! आपके ही शरण है ।

You are highly expert in rearing cows and Gopies. Smurities, Smerities, Tantras and other Puranadi Shastras have depicted your rare image. Oh Vrindavaneshwer! You are above all gods and you protect all Brahmins; Oh well wisher gopal of Madhava! We are all at your feet.

(३)

आनन्दसिन्धुरससारमहास्वरूप !
सूर्यात्मजापुलिनरम्यविहारलीन !
कादम्बपुष्पनवमाल्यसुशोभमान !
गोपाल ! माधव ! विभो ! शरणं त्वमेव ! ।।

परम दिव्य आनन्द के सागर और उसके भी अनुपम रस सार स्वरूप आप है। श्रीयमुना के सुरम्य पुलिन पर सुन्दर विहार निरत एवं कदम्ब के सुगन्धित पुष्पों की नवीन मालाओं से अतीव सुशोभित हे गोपाल ! हे माधव! हे सर्वव्यापक प्रभो ! हम आपके ही सर्वात्मना शरणापन्न है।

You are the embodiment of the ocean of extreme divine pleasure. Oh Gopal! You are all involved in the serene beauty of Yamuna, and you are extremely beautified with the sweet scented flowers of kadamb, Oh omnipotent God! We are all wholeheartedly at the mercy of your feet.

(४)

पीताम्बराभ ! शरणागतदीनबन्धो !
श्यामाम्बुदामितमनोहरदर्शनीय ! ।
संसारतापविनिवारणसुप्रवीण
गोपाल ! मावध ! विभो ! शरणं त्वमेव ! ।।

दिव्य पीताम्बर की अनुपम आभा से आप अतीव शोभायमान है। दैन्यभावयुक्त शरणागत भक्तों के आत्मीय बन्धु रूप में विराजित हैं। विविध दुःख द्वन्द्वों से परिपूर्ण इस सम्पूर्ण जगत् के आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन त्रिविध कष्टों के निवारण करने में आप परम कुशल हैं ऐसे हे गोपाल ! माधव ! निखिल विश्व ब्रह्माण्ड में सर्वत्र आपकी दिव्य सत्ता है आप परम व्यापक है एवंविधआपके हम सभी प्रकार शरण हैं।

You are all exceedingly beautified with the rare light of divine yellow dress. You are installed as the real friend of deeply devoted followers. Oh Gopal! You are highly capable of removing all shorts of miseries, i.e., you are the remover of three sins that is material, divine, and spiritual nuisance of the entire world. Oh Madhav! your divine authority is seen in the entire world. We are all at your feet.

(५)

श्रीगोपालचतुश्श्लोकी भक्ताऽऽमोदप्रदायिका ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ।।

अनन्य भक्तों को आनन्द प्रदान करने वाली यह श्रीगोपालचतुश्शलोकी जिसकी रचना इन्हीं श्रीगोपाल प्रभु की प्रेरणा स्वरूप प्रस्तुत है। जो सर्वदा अनुशीलनीय है।

This Gopal Chatusloki, the provider of pleasure to countless devotees, is before you by the grace of Gopal, and it is always to be followed.

श्रीगिरिधरगोपालचतुश्श्लोकी

(१)

दिव्यं वेणुधरं हृद्यं मीराराध्यं महोज्ज्वलम् ।
गिरिधरञ्च गोपालं नमामि मधुरं मुदा ।।

जो परम दिव्यतम है अतीव सुन्दर है वंशी को धारण किये हुए अतीव शोभायमान है और जिनकी आभा अनुपम है, परम भक्तिमती मीरा बाई के ये सर्वाराध्य हैं ऐसे श्रीगिरिधरगोपाल प्रभु को सोल्लास मधुरातिमधुर अभिनमन करते हैं।

I respectfully and with pleasure bow to such Lord Krishna who appears to be extremely beautiful with his flute and the divine image is rare because of the simple reason, i.e., he is worshipped by devotee Meerabai.

(२)

कृपाकोषं व्रजाधीशं व्रजगोपीजनाश्रितम् ।
गिरिधरञ्च गोपालं नमामि मधुरं मुदा ।।

कृपारूपी धन के अनुपम खजाना है समस्त व्रजधाम के परम अधीश्वर हैं, व्रजगोपीजनों के द्वारा सदा परिसेवित हैं। ऐसे श्रीगिरिधरगोपाल भगवान् को अति मधुरता से आनन्दपूर्वक नमन करते हैं।

I pleasurefully bow before the same Lord Krishna who is the store house of real wealth of compassion for Vrajadham and is all the time served by the Gopies of Vraza.

(३)

शोभितं पुष्करे तीर्थे परशुरामसुस्थले ।
गिरिधरञ्च गोपालं नमामि मधुरं मुदा ।।

इस जगत् के यावन्मात्र जितने तीर्थ है उन सभी के गुरु रूप में अतीव सुशोभित श्रीपुष्करतीर्थ हैं जहाँ उसके पावन तटीय भाग पर सुरम्य आचार्यवर्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज का सुपावन मन्दिर श्रीपरशुरामद्वारा स्थान हैं उसी में सर्वदा विराजित श्रीगिरिधरगोपाल भगवान् को माधुर्यपूर्ण उत्साहपूर्ण अभिनमन करते हैं।

I enthusiastically bow before the same Lord Krishna who is installed in the pious temple of Jagatguru Nimbarkacharyapithadhishwer, the Parashuramdevacharyajee, located on the confluence of Puskar which is known as the highest religious pilgrimage.

(४)

वृन्दावननिकुञ्जेषु व्रजन्तं यमुनातटे ।
गिरिधरञ्च गोपालं नमामि मधुरं मुदा ।।

श्रीवृन्दावनधाम की सुन्दर कुञ्ज-निकुञ्जों में एवं श्रीयमुनाजी के सुरम्य तटीय भाग पर सतत विहरणशील श्रीगिरिधरगोपाल प्रभु को अतीव आनन्दपूर्वक मधुर रूप से प्रणाम अर्पित करते हैं।

I offer my prayer pleasurefully to the same Lord Krishna who is all available on the confluence of beautiful Yamuna surrounded by beautiful gardens of Vrindavandham.

(५)

श्रीगिरिधरगोपालचतुश्श्लोकी शुभप्रदा ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ।।

श्रीगिरिधरगोपाल भगवान् की यह चतुश्श्लोकी जो परम मंगलदायक है उसकी यह प्रस्तुत रचना भी उन्हीं श्रीप्रभु का मंगल प्रसाद रूप है जो नित्य पठनीय है।

This Chatusloki of Lord Krishna is to be read everyday because this prayer is possible because of His grace.

श्रीमदानन्दकृष्णविहारिचतुश्श्लोकी

(१)

रङ्गदेवी-हिताद्यैश्च सेव्यं सखीजनै र्भजे ।
दिव्यसौन्दर्यसद्धामानन्दकृष्णविहारिणम् ।।

श्रीरङ्गदेवी श्रीहितु आदि सखीवृन्दों से सेवित तथा अतीव दिव्य सुन्दरता के एकमात्र परमाधार स्वरूप श्रीआनन्दकृष्णविहारी भगवान् का पावन भजन नमन करते हैं।

I respectfully pray to the same Lord Krishna who is the sole source of help and is served by srirangdevi, Srihetu and other famale devotees.

(२)

मुरलीवादने शीलं मञ्जुलमौलिधारिणम् ।
नमामि मनसा वाचाऽऽनन्दकृष्णविहारिणम् ।।

वंशी के मधुर वादन करने में सदा तत्पर, सुन्दरतम मुकुट को धारण किये हुए श्रीआनन्दकृष्णविहारी भगवान् को अपने अन्तःकरण एवं वाणी द्वारा अभिनमन करते हैं।

From the very core of my heart as well as orally I bow before the same Lord Krishna who is all engrossed in the blowing of melodious flute adored with most beautiful crown.

(३)

अतीवदीप्तिरूपश्च जयपत्तनमन्दिरे ।
मुक्तामाल्यधरं नौम्यानन्दकृष्णविहारिणम् ।।

परम दिव्य प्रभायुत सुन्दर स्वरूप एवं जो मोतियों की अति सुन्दर मालाओं को धारण करने पर अति सुशोभित हो रहे हैं ऐसे जयपुर मन्दिर में विराजमान श्रीआनन्दकृष्णविहारी भगवान् को नित्यशः नमन करते हैं।

I daily bow before the same Lord Krishna, installed in the Jaipur temple, who appears to be all divine with beautiful garland embedded with rare and divine pearls.

(४)

दोलामहोत्सवे रम्ये दर्शनीयं दयार्णवम् ।
वन्दे साष्टाङ्गरूपेणानन्दकृष्णविहारिणम् ।।

झूला के सुन्दर महोत्सव पर इन परम दयासागर प्रभु का दर्शन ही इतना अतिशय मनोहर होता है ऐसे श्रीआनन्दकृष्णविहारी भगवान् को साष्टाङ्ग प्रणति भाव से अभिनमन करते हैं।

I wholeheartedly and bodily bow before the same Lord Krishna who is adored with beautiful garlands of pearl on the auspicious day of *jhula*, and this sight of Lord Krishna gives us rare pleasure.

(५)

स्तवोऽयं पठनीयश्चानन्दकृष्णविहारिणः ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ।।

यह श्रीआनन्दकृष्णविहारी भगवान् का जो स्तव है वह नियमित पठनीय है। इस स्तव की रचना भी इन्हीं श्रीप्रभु का परम कृपा प्रसाद है।

This prayer of Lord Krishna deserves to be regularly read, and this composition of prayer is the fruit of the rare blessings of Lord Krishna.

श्रीभगवच्चरणामृत स्तोत्रम्

(१)

श्रीमत्सनत्कुमाराद्यैः सेव्यं श्रीनारदार्चितम् ।
श्रीनिम्बार्कसमाराध्यं श्रीसर्वेश्वरमाश्रये ।।

महर्षिवर्य श्रीसनकादिकों एवं देवर्षिवर्य श्रीनारदजी द्वारा परिसेवित तथा सुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यश्री द्वारा संसेव्य परमाराध्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु जिनके श्रीचरणारविन्दों के हम समाश्रित है।

We are at the feet of such Lord Krishna who is all honoured by Bhagavan Nimbarkacharyajee, the incarnation of the God with sudarshan and served by all great sages including Sri Naradji.

(२)

शालग्रामस्वरूपस्य श्रीमत्सर्वेश्वरप्रभोः ।
चरणामृतलब्ध्यार्थं भावना मे भवेत्परा ।।

गुञ्जाफलसमसूक्ष्मस्वरूप दक्षिणचक्रावर्ती शालग्रामरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु के अभिषिक्त परम पावन चरणामृत पान करने की प्रबल भावना अपने

मानस में अवस्थित हो ।

The Great desire of enjoying the nectar of the feet of the Lord Krishna who is installed as Saligram swaroop.

(३)

श्रद्धया नित्यशः सेव्यं भगवच्चरणामृतम् ।
येनाऽघक्षयमाप्नोति नैवाऽत्र कोऽपि संशयः ।।

श्रीभगवच्चरणामृत श्रद्धापूर्वक दैनिक रूप से सेवन करना परम अभीष्ट है। जिस चरणामृत के पान से हमारे सभी जन्मजन्मान्तरीय पापों का क्षय हो जाता है, इसमें किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं है।

It is our sole aim to have the *charnammrit* with a sense of devotion. There is no doubt about the fact that by drinking the *charanammrit* all the sins of life after life are destroyed.

(४)

चरणोदकपानेन संसृते र्मुक्तिमश्नुते ।
अतस्तत्प्रत्यहं पानं कर्तव्यं भावुकैर्जनैः ।।

श्रीप्रभु के चरणामृत पान करने पर इस संसार से आत्यन्तिक निवृत्ति हो जाती है, अतः उस चरणामृत का भगवद्-भावुक भक्तजनों को नित्यशः पान करना नितान्त आवश्यक है।

By having God's *charanammrit*, we are all away from the earthly attractions. So for all God loving people, drinking the nectar is a must.

(५)

ये जनाः श्रद्धया नित्यं भगवच्चरणोदकम् ।
गृह्णन्ति पावनं प्रीत्या नूनं ते साधुसत्तमाः ।।

जो भक्तजन श्रद्धापूर्वक श्रीभगवच्चरणामृत का दैनिक रूप से भक्तिनिष्ठ होकर पान करते हैं वे निश्चित ही परम श्रेष्ठ पुरुषों में सर्वदा समादरणीय हैं।

Those devotees who drink this *charanammrit* daily with all sense of devotionare honoured by all good and great people.

(६)

गङ्गातोऽप्यधिकश्रेष्ठं श्रीहरेश्चरणामृतम् ।
तुलसीचन्दनाप्तश्च पेयं भक्तैः सदा प्रियम् ।।

श्रीभगवती भागीरथी गङ्गा से भी परम श्रेष्ठ श्रीभगवच्चरणोदक है जिसमें श्रीहरि के श्रीअङ्ग में चर्चित चन्दन और श्रीचरणारविन्दों में समर्पित तुलसी पत्र विद्यमान रहता है ऐसे अतिशय पावन श्रीचरणामृत का पान भगवज्जनों द्वारा सेवनीय है।

This *charanammrit* is far better than the water of the Ganga because it flows from the sandal smeared on the body of God along with Tulsi leaves. So it is desirable for all devotees to drink this sacred *charanammrit*.

(७)

राधाकृष्णपदाम्भोज-दिव्याम्बुनित्यसेवनम् ।
मोक्षदं सर्वपापघ्नमस्तितापनिवारकम् ।।

वृन्दावननित्यनिकुञ्जविहारी युगलकिशोर भगवान् सर्वेश्वर श्रीराधाकृष्ण के युगलचरणारविन्दों का चरणामृत जो मोक्ष प्रदान करने वाला अनेक जन्मों के पापों का परिहार पूर्वक आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन ताप त्रय का निवारण करने वाला है, ऐसा पावन चरणामृत सदा सेवनीय है।

This *charanammrit* flowing from the feet of Lord Krishna is capable of providing salvation and has the capacity to relieve us of all the three sins (tapas). So such *charanammrit* is to be drunk always.

(८)

शालाग्राममभिषिक्तं तद्-ग्राह्यञ्च चरणामृतम् ।
विशुद्धं पावनं दिव्यं विद्यते व्याधिवारकम् ।।

शालग्रामस्वरूप श्रीप्रभु के अभिषेक का जो परमशुद्ध और पवित्र दिव्य चरणोदक है जो समस्त आधि व्याधियों का परिशमन करने वाला है उसको अवश्य ही प्राप्त करना चाहिए ।

We must obtain the exceedingly true, pious, divine charanodak coming out of the Abhisek of Lord Krishna because it is capable of relieving us of all diseases and worries.

(९)

ईदृशमद्भुतं राधा-कृष्णस्य चरणामृतम् ।
यत्प्रभावेण दूरस्था यमदूता भवन्ति च ।।

श्रीराधाकृष्ण भगवान् का ऐसा अद्भुत चरणामृत है जिसके सेवन करने पर उसके अलौकिक प्रभाव से यमदूत भी दूर ही स्थित रहते हैं वे निकट भी नहीं आ सकते ।

The use of such strange *charanammrit* of Lord Krishna relives us of the fear of Yamdoot. Not only this, Yamdoot cannot even think of being near such devotees.

(१०)

हरेश्चरणपानीयमन्तकाले च यो जनः ।
पिवेत्स दिव्यगोलोके प्रभुसान्निध्यमाप्नुयात् ।।

श्रीहरि के चरणामृत को जो मानव अपने शरीरान्त के समय पान कर लेता है वह दिव्य गोलोकधाम में श्रीप्रभु का पावन सान्निध्य प्राप्त करता है।

Those who drink this *charanammrit* at the time of death directly go to the heaven and remain in the direct contact with the Almighty.

(११)

हरेः पादोदकं पीत्वा दिव्यधाम्नि महीयते ।
इत्थंभूतानि शास्त्रेषु वर्तन्ते वचनानि च ।।

श्रीहरि गोविन्द के चरणामृत का पान करके यह प्राणी श्रीभगवद्धाम की प्राप्ति करता है। वस्तुतः इस विषयक शास्त्रों के विविध वचन विद्यमान हैं जो परम मननीय हैं।

People drinking the *charanammrit* attain God's abode. Really these are all described in our shastras and we should have sacred faith in them.

(१२)

राधामाधवदिव्याऽङ्घ्रि-पङ्कजोदकमद्भुतम् ।
यः श्रद्धया पिबेन्नित्यं स सुखमाप्नुयाच्चिरम् ।।

श्रीराधामाधव भगवान् के दिव्य चरणारविन्दों का चरणोदक जो अतीव विलक्षण है उसे श्रद्धापूर्वक जो भक्त नियमित पान करता है वह निश्चयरूप से चिरकाल पर्यन्त परमानन्द की अनुभूति करता है।

Those devotees who regularly and devotedly enjoy the *charanodak* of Lord decidedly get the permanent and real pleasure.

(१३)

सौख्यदं मोक्षदं स्तोत्रं श्रीचरणामृतबोधकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

परम सुख देने वाला तथा मोक्षप्रद यह भगवच्चरणामृत स्तोत्र है जिसका प्रणयन श्रीसर्वेश्वर कृपा ही एकमात्र परम अवलम्ब है।

This charanammrit slokas capable of giving real happiness and providing salvation is possible because of Lord Krishna's grace alone.

श्रीनिम्बार्कस्मरणाष्टकम्

(१)

गिरिराजवने शुभवासकरं
व्रजभूविपिनाऽद्रिविहारपरम् ।
प्रणताऽऽर्तिहरं सततं सुखदं
स्मर निम्बदिवाकरमाप्तनुतम् ।।

व्रजधाम में परम सुशोभित गिरिराज श्रीगोवर्धन जिसके सुरमणीय वन प्रदेश में अतीव आह्लादकारक श्रीनिम्बग्रामस्थ अपनी आराधना स्थली पर निवास अभिरत एवं व्रजधरा के वनों में पर्वत मालाओं के निकटवर्ती परिसर में विहार विचरण निरत, शरणागत भक्तों के नानाविध संताप का निवारण करने में तत्पर एवं निरन्तर आनन्द प्रदान करने वाले उत्तमोत्तम मनीषियों द्वारा अभिवन्दित श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यश्री का मंगलमय स्मरण करते रहना चाहिए।

We should keep on pleasurefully remembering Nimbarkacharyajee Maharaj who is honoured by great sages. His prayer spot (site) is Nimbagram which is all attractive due to the reason that it is beautified by attractive Giriraj Gobardhan. To cap it all He, in course of roaming around the neighbouring hills and forests of Vraja, relieves his devotees of all sorts of miseries.

(२)

शरणागतभक्तभवाब्धिहरं
रविजातटनित्यनिवासकरम् ।
हरिकीर्तनगानरतं मतिदं
स्मर निम्बदिवाकरमाप्तनुतम् ।।

शरणागत भक्तों को इस भवसागर से पार करने में अभिनिरत और श्रीयमुनाजी के तटीय भाग में सदा निवास परायण एवं श्रीहरिनाम संकीर्तन कराने में तत्पर तथा शरणापन्नजनों को सद्-बुद्धि प्रदान करने वाले ऐसे श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यवर्य जो उत्तमोत्तम महापुरुषों द्वारा सतत वन्दित है उनका अविरल स्मरण करें।

We should constantly remember Nimbarkacharyajee who is honoured and prayed by all great people. He is always engrossed in the prayer of the Almighty, involved in helping his devotees to cross the Bhavasagar and is all capable of providing prudence to them.

(३)

व्रजपादपकुञ्जसुमञ्जुतले
युगलाऽङ्घ्रिमहोत्पलभृङ्गमहो ।
अथ कृष्णकराम्बुजचक्रशुभं
स्मर निम्बदिवाकरमाप्तनुतम् ।।

व्रज के तरु-लताओं की कुञ्जों के सुन्दर स्थलीय भाग में अतीव सुशोभित युगलप्रियाप्रियतम श्यामाश्याम श्रीराधाकृष्ण भगवान् के चरणारविन्दों के अत्यन्त आह्लादकारी मधुकर स्वरूप और श्रीहरि के करकमलों में निरन्तर परम शोभायमान चक्रराज श्रीसुदर्शन के अवताररूप एवं पुण्यश्लोक श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा सदा वन्दना किये गये श्रीनिम्बार्क भगवान् का पावन स्मरण करना ही अपना अतिशय पावन कर्तव्य है।

It's our extremely sacred duty to remember Lord Nimbark who is known as the incarnation of Lord Krishna as well as the holder of Sudharshan chakra. He has extreme emotional regard for the feet

of Lord Krishna who is installed in the beautiful area of Vraja.

(४)

अतिरम्यगिरीन्द्रगुहावसनं
वृषभानुसुतास्मरणे निरतम् ।
श्रुति-तन्त्र-पुराणविवेकविदं
स्मर निम्बदिवाकरमाप्तनुतम् ।।

परम रमणीय गिरिराज श्रीगोवर्धन की कन्दरा (गुफा) में नित्यनिकुञ्जेश्वरी वृन्दावनाधीश्वरी सर्वेश्वरी वृषभानुजा श्रीराधिकाजी के स्मरण चिन्तन आराधन करने में अभिरत एवं श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि यावान्निखिल शास्त्रों के परिज्ञाता श्रीनिम्बार्क भगवान् जो पुण्यात्मा पुरुषों द्वारा निरन्तर अभिवन्दित हैं उनका अविरल स्मरण करना परम अभीष्ट है।

It's our sacred duty to always remember Lord Nimbark, the Knower of all the shastras--Shruti, Smurity, Sutra-Tantra and Puranas, who is all engrossed in the meditation and prayer of goddess Radha installed in the cave of Govardhana.

(५)

निजभक्तविपत्तिनिवारकरं
हरिरासविलासरसाब्धिरतम् ।
मुरलीधरदर्शनहृष्ठतनुं
स्मर निम्बदिवाकरमाप्तनुतम् ।।

अपने समाश्रित भक्तों पर आई हुई किसी प्रकार की विपत्ति का निवारण करने वाले एवं रासविहारी श्रीराधामाधव भगवान् की दिव्य रासलीला

विलास रस सागर में अभिरत तथा मुरलीधर भगवान् श्रीकृष्ण के दर्शन से सदा प्रसन्न वदन ऐसे श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य जो उत्तमोत्तम पुरुषों द्वारा वन्दित है उनका अपने अन्तःकरण से सदा स्मरण करना चाहिए।

We should remember Nimbarkacharyajee from the very core of our heart because he is such a person who remains all happy in enjoying Rash Leela of Lord Krishna and is always ready to relieve the devotees of their miseries. Even great devotees offer their prayer to him.

(६)

अलिपुञ्जसुगुञ्जितमञ्जुवने
शुक-कोकिल-केकिनिनादयुते।
विहरन्तमशेषमुनीशतते
स्मर निम्बदिवाकरमाप्तनुतम् ।।

शुक (तोता) कोकिल (कोयल) मयूर आदि सुन्दर पक्षिगणों के कमनीय शब्द से गुञ्जायमान एवं भ्रमर समूह से अतिशय गुञ्जित जो व्रज का वनप्रदेश है जहाँ अनेक मुनिजन निवास करते हैं वहाँ विहरण विचरण करते हुए श्रीनिम्बार्क भगवान् जो उच्चकोटि के महापुरुषों से वन्दित है उनका प्रतिपल स्मरण करना ही अपने जीवन का सार सर्वस्व है।

The ultimate and the all end of our life should be to remember Lord Nimbark every moment. He resides and roams around a place Braja which always reverberates with the ear soothing songs of *tota, koel,* and peacock and group of vaurans.

(७)

गिरिराजपरिक्रमणे निरतं
व्रजकुञ्जविहारिमनोमधुपम् ।
विविधाऽऽगमवर्णितचारुतनुं
स्मर निम्बदिवाकरमाप्तनुतम् ।।

व्रजधाम में गिरिराज श्रीगोवर्धन परम सुशोभित है, उन्हीं श्रीगिरिराज की सप्तकोशी परिक्रमा करने में अभिनिरत व्रजकुञ्जबिहारी युगलकिशोर श्रीराधाकृष्ण भगवान् के अन्तर्मन के भ्रमर स्वरूप एवं अनेक शास्त्रों में जिनके मंगलमय परम पावन श्रीअंग का सुन्दर स्वरूप वर्णित किया गया है ऐसे श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यवर्य जो योगीन्द्र मुनीन्द्र अमलात्मा महात्माओं द्वारा सर्वदा वन्दित हैं उनका सतत स्मरण करना ही उत्तम धर्म है।

Our best religion is always to remember Lord Nimbarkacharyajee who is always prayed by Yogendra, Munendra sages. In Vraja, Giriraj Goverdhan is located and the sapta koshi round of giriraj remembering the Almighty from the core of one's heart gives immense pleasure all the time.

(८)

रमणीयवने तरुवल्लितते
वनमालिपदाब्जसुगन्धधरम् ।
प्रियकुञ्चितकेशकलापयुतं
स्मर निम्बदिवाकरमाप्तनुतम् ।।

नानविध तरु-लताओं से परिव्याप्त अति रमणीय व्रज के वन प्रदेश में वनमाली श्यामसुन्दर भगवान् श्रीकृष्ण के चरणारविन्द की दिव्य सुगन्ध

धारण करने पर परम प्रमुदित और अतिशय सुन्दर घुंघराले श्यामल केशराशि से अति सुशोभित हैं तथा ऋषि-मुनियों महामनीषियों से सदा वन्दित श्रीवपु है उनका निशिदिन स्मरण ही अपना सर्वोत्कृष्ट कर्म है।

Our best duty is to remember everyday the same Lord Krishna who is worshipped by sages and great saints. We are delighted by the extremely beautiful curly hair and by the divine aura of Lord Krishna's feet in the same Braja which is covered with all sorts of trees and plants.

(६)

स्तोत्रं भूतापहर्तारं निम्बार्कस्मरणाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

इस निखिल जगत् के आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन समग्र तापों (कष्टों) का हरण करने वाला यह श्रीनिम्बार्कस्मरणाष्टक स्तोत्र जिसका प्रणयन उन्हीं आद्याचार्यवर्य कृपाजन्य यहाँ प्रस्तुत है जो सर्वदा अपने मानस में अवधारणीय है।

This prayer is capable of destroying all the three evils, i.e., spiritual, physical and material of entire universe. This prayer is the fruit of the blessings of the same Lord and hence it is to be retained always in our thoughts.

(७)

गिरिराजपरिक्रमणे निरतं
व्रजकुञ्जविहारिमनोमधुपम् ।
विविधाऽऽगमवर्णितचारुतनुं
स्मर निम्बदिवाकरमाप्तनुतम् ।।

व्रजधाम में गिरिराज श्रीगोवर्धन परम सुशोभित है, उन्हीं श्रीगिरिराज की सप्तकोशी परिक्रमा करने में अभिनिरत व्रजकुञ्जबिहारी युगलकिशोर श्रीराधाकृष्ण भगवान् के अन्तर्मन के भ्रमर स्वरूप एवं अनेक शास्त्रों में जिनके मंगलमय परम पावन श्रीअंग का सुन्दर स्वरूप वर्णित किया गया है ऐसे श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यवर्य जो योगीन्द्र मुनीन्द्र अमलात्मा महात्माओं द्वारा सर्वदा वन्दित हैं उनका सतत स्मरण करना ही उत्तम धर्म है।

Our best religion is always to remember Lord Nimbarkacharyajee who is always prayed by Yogendra, Munendra sages. In Vraja, Giriraj Goverdhan is located and the sapta koshi round of giriraj remembering the Almighty from the core of one's heart gives immense pleasure all the time.

(८)

रमणीयवने तरुवल्लितते
वनमालिपदाब्जसुगन्धधरम् ।
प्रियकुञ्चितकेशकलापयुतं
स्मर निम्बदिवाकरमाप्तनुतम् ।।

नानविध तरु-लताओं से परिव्याप्त अति रमणीय व्रज के वन प्रदेश में वनमाली श्यामसुन्दर भगवान् श्रीकृष्ण के चरणारविन्द की दिव्य सुगन्ध

धारण करने पर परम प्रमुदित और अतिशय सुन्दर घुंघराले श्यामल केशराशि से अति सुशोभित हैं तथा ऋषि-मुनियों महामनीषियों से सदा वन्दित श्रीवपु है उनका निशिदिन स्मरण ही अपना सर्वोत्कृष्ट कर्म है।

Our best duty is to remember everyday the same Lord Krishna who is worshipped by sages and great saints. We are delighted by the extremely beautiful curly hair and by the divine aura of Lord Krishna's feet in the same Braja which is covered with all sorts of trees and plants.

(६)

स्तोत्रं भूतापहर्तारं निम्बार्कस्मरणाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

इस निखिल जगत् के आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन समग्र तापों (कष्टों) का हरण करने वाला यह श्रीनिम्बार्कस्मरणाष्टक स्तोत्र जिसका प्रणयन उन्हीं आद्याचार्यवर्य कृपाजन्य यहाँ प्रस्तुत है जो सर्वदा अपने मानस में अवधारणीय है।

This prayer is capable of destroying all the three evils, i.e., spiritual, physical and material of entire universe. This prayer is the fruit of the blessings of the same Lord and hence it is to be retained always in our thoughts.

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यवर्याणाञ्च–

द्वादशशिष्यप्रवराख्यनामबोधकं स्तोत्रमिदम्

(१)

निम्बार्कसम्प्रदायस्य परम्परास्थवीथिषु ।
श्रीहरिव्यासदेवञ्च परमाचार्यमाश्रये ।।

श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य द्वारा प्रवर्तित श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की पावन परम्परा में ३५ वीं पुस्त (पीढी) में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज परम सुशोभित हुए, ऐसे उन जगद्गुरु निम्बार्काचार्यश्री के दिव्य चरणाविन्दों का सर्वात्मना आश्रय (अवलम्ब) प्राप्त करते हैं।

In the hierarchy of Nimbark Sampradaya, the 35th Guru Rashik Raj Rajeshwer Sri Hari Vyas Devacharyajee Maharaj is installed at Nimbarkacharjeepeeth. The feet of such Jagatguru Nimbarkacharyajee are our sole resort.

(२)

महावाण्यादिशास्त्राणां प्रणेतारं भजे हृदा ।
रसोपासनमर्मज्ञं परमाचार्यमिष्टदम् ।।

इन आचार्यप्रवर ने परमाद्याचार्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य विरचित वेदान्तकामधेनु-दशश्लोकी की संस्कृत व्याख्या स्वरूप ''श्रीसिद्धान्तरत्नाञ्जलि'' की रचना के साथ व्रजभाषा की आदिवाणी ''श्रीयुगलशतक'' जिसका प्रणयन अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु

निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीश्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज ने की जो आपही के गुरुवर्य थे। इसी उक्त ग्रन्थ के विस्तृत व्याख्या रूप वृन्दावननित्य-नवनिकुञ्जविहारी युगलकिशोर श्रीराधाकृष्ण भगवान् की दिव्यतम मधुरातिमधुर अति सरस ''श्रीमहावाणी'' की अनुपम रचना कर श्रीराधामाधव प्रभु के अद्भुत अनिर्वचनीय (उत्साह अष्टयाम सेवा उत्सव-महोत्सव) सुरत, सहज, सिद्धान्त इन पञ्चसुखात्मक स्वरूप का अतिविलक्षण असमोद्र्ध्व वर्णन किया है ऐसे श्रीवृन्दावननिकुञ्ज रसोपासनारहस्यमर्मज्ञ परमाचार्यप्रवर जो अपने सर्वाराध्य परम इष्टरूप श्यामाश्याम श्रीराधाकृष्ण प्रभु के दिव्यातिदिव्य मधुरातिमधुर मंगलमय दर्शन कराने में कृपामय पावन स्वरूप में सुशोभित उनका अपने अन्तःकरण से भजन-स्मरण-वन्दन करते हैं।

This very senior Acharya of ours wrote Sri Siddant Ratnanjali wherein he explained Vedant Kamdhenu Das Sloki (written by senior most Aacharya Lord Nimbarkacharyajee) in Sanskrit. Nimbarkacharyajee Pithadhishwer Sri Bhattedev Acharjee, the senior Guru, went for the dramatization of Sri Yugual shatak--Adivani written in Brazabhasa. The details given in this book present a lovely description of the divine beauty of Lord Radha-Krishna and by composing rare Sri Mahavani, he has presented a strange and indescribable service, celebration, image, simplicity, and theory, i.e., all the five pleasures projected in one. I pray, remember, and bow from the very core of my heart to the same senior Aacharya who enables us to have the pleasant darshan of Lord Radha-Krishna.

(३)

जगद्गुरुवरेण्यानामेतेषां शिष्यपावनम् ।
संक्षिप्तचरितं दिव्यं वर्ण्यतेऽत्रसुशोभनम् ।।

जगद्गुरुवरेण्य परमाचार्यवर्य निम्बार्कपीठाधीश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के जो द्वादश शिष्यप्रवरों का पवित्रतम परमदिव्य अतिसंक्षेपात्मक सुभग चरित एवं उनकी नामावली यहाँ प्रस्तुत की जा रही है।

We are placing the list of twelve disciples of Jagatguruvareynna Paramacharya Nimbarkapithadheshwar Sri Hari Vyas Devacharjyaee Maharaj and their divine character sketches in short.

(४)

द्वादशशिष्यरूपाणामद्भुतं चरितं प्रियम् ।
यस्य स्मरणमात्रेण दिव्यानन्दो हि लभ्यते ।।

उन द्वादश शिष्यों का अद्भुत एवं अतीव रुचिकर उनका चरित एवं उनके सुन्दरतम नाम हैं जिनके स्मरण करने मात्र से ही निश्चयात्मक परम दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है।

We decidedly get divine pleasure in simply remembering the beautiful names and the beautiful character sketches of those twelve great disciples.

(५)

तत्र च वर्ण्यते पूर्वं गरीयो गहनं शुभम् ।
यन्नामोच्चारणात्स्वान्ते निस्सीमं सुखमुद्भवेत् ।।

जो परम श्रेष्ठ है परम मङ्गलकारी है जिनके पावनतम नाम के उच्चारण करने पर अत्यन्त सुखानुभव होता है, उनका सर्वप्रथम वर्णन किया जा रहा है।

First of all, the description of that super most character is being made who is all good and pleasure giving and the chanting of whose name alone gives great happiness.

(६)

अध्यात्मशक्तिसम्पन्नं परमानन्दसम्प्रदम् ।
श्रीस्वभूरामदेवञ्च[1] नमाम्याचार्यरूपिणम् ।।

अध्यात्म शक्ति से सर्वविधरूपेण जो परम सम्पन्न है तथा परमानन्द प्रदान करने में सर्वदा अभिरत ऐसे श्रीमत्स्वभूरामदेवाचार्यजी महाराज को सर्वात्मना प्रणमन करते हैं।

I respectfully and wholeheartedly pray to Srimatsvabhuramdevacharyajee who is spiritually powerful in all the ways and is capable of providing permanent pleasure.

(७)

येन निम्बार्कसिद्धान्त-प्रचारार्थं कृतः श्रमः ।
तं देवाचार्यमाप्तेशं राधाकृष्णरतं भजे ।।

जिन्होंने श्रीनिम्बार्क भगवान् के स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त एवं वृन्दावननिकुञ्जविहारी युगलकिशोर भगवान् श्रीराधाकृष्ण की रसमयी मधुर उपासना के लिए अतीव परिश्रमपूर्वक प्रचार-प्रसार में सर्वदा तत्पर तथा उत्तमोत्तम पुरुषों द्वारा समर्चनीय एवंविध श्रीस्वभूरामदेवाचार्यजी महाराज की अभिवन्दना करते है।

We worship Bhuramdevacharyajee who undertook the arduous task of spreading the natural

Dwetadweta, the theory of Nimbark Bhagavan, and did a lot for the prayer of Lord Krishna.

(८)

एवं श्रीवोहिताचार्यं[२] देवाचार्यं नमाम्यहम् ।
श्रीमन्मदनगोपालं[३] देवाचार्यं दयाकरम् ।।

इसी प्रकार श्रीवोहितदेवाचार्यजी महाराज एवं श्रीमदनगोपालदेवाचार्य जो परम दयार्णव हैं ऐसे इन उभय आचार्यप्रवरों को अभिनमन करते हैं।

In the same way, we bow before the two great Acharyas Shri Vohit Devacharyajee and Madangopal Devacharyajee who are all known for their magnanimity.

(९)

तथा चोद्धवदेवं[४] हि देवाचार्यं नमाम्यहम् ।
घमण्डदेव इत्याख्यं देवाचार्यं कृपानिधिम् ।।

आचार्यवर्य श्रीउद्धवदेवाचार्यजी महाराज जो अपरनाम श्रीघमण्डदेवाचार्यजी महाराज रूप में परम विख्यात रहे हैं एवं अतीव कृपा के सागर स्वरूप में सर्वदा सुशोभित उनकी मनसा, वाचा, कर्मणा वन्दना करते हैं।

We bow with our thoughts, words, and actions to our great Acharya, Devacharyajee Maharaj famously known as Sri Ghamandavacharyajee maharaj, the real ocean of sympathy.

(१०)

रासलीलाशुभारम्भ एभिः साधुतया कृतः ।
श्रीयुग्मानुग्रहेणादौ चाज्ञया विहितो व्रजे ।।

जिन आचार्यप्रवर ने नित्यनवयुगलकिशोर वृन्दावनाधीश्वर सर्वेश्वर श्रीराधाकृष्ण भगवान् की पावन आज्ञानुसार दिव्य रासलीलानुकरण का व्रज वृन्दावन धाम में एवं व्रजस्थ करहला ग्राम में सम्यक् प्रकार से शुभारम्भ किया जो अतीव अनुपम है। यह रासलीलानुकरण का सर्वप्रथम शुभारम्भ श्रीघमण्डदेवाचार्यजी महाराज द्वारा सम्पादित हुआ जो निश्चय ही निम्बार्क सम्प्रदाय के लिये परम गौरवास्पद है।

The divine Rashleela of Lord Krishna begun in Karhala village of Vraj & Vrindavan by Acharya pravar Nitta Nava Yugal Kishore is a rare begining and the first presentation of the same after composition by Ghamenddevacharyajee is a matter of great pride for Nimbark Sampradaya.

(११)

श्रीवाहुबलदेवश्चाचार्य[५] चेतसि भावये ।
अनेकशास्त्रमर्मज्ञं युग्माङ्घ्रिभक्तिभावितम् ।।

विविध शास्त्रों के मर्मज्ञ महामनीषी एवं वृन्दावन निकुञ्जविहारी भगवान् श्रीराधाकृष्ण की अनन्य पराभक्ति में सर्वदा तल्लीन ऐसे श्रीबाहुबलदेवाचार्यजी महाराज की अपने अन्तःकरण से उनकी भावनापूर्वक वन्दना करते हैं।

We offer emotional prayer from the very core of our heart to Bahubaldevacharyajee Maharaj who

has been the master of several shastras, and remained engrossed in the super devotion towards Lord Krishna.

(१२)

श्रीमत्परशुरामञ्च[६] देवाचार्यं सदाश्रये ।
परशुरामसद्वाणी-कर्तारं सिद्धिसागरम् ।।

श्रीपरशुराम सागर नामक हिन्दी भाषा पद्यात्मक वृहद् ग्रन्थ की जिन्होंने दिव्य रचना की एवं आध्यात्मिक सिद्धियों से जिन्होंने आक्रामक शक्तियों का परिहार किया ऐसे परमाचार्यवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज का वन्दना पूर्वक समाश्रय लेते हैं।

We prayerfully take the blessings of Parashuramdevacharyajee Maharaj who wrote a voluminous book in poetic form entitled Parashuram Sagar and by his spiritual achievements counteracted the evil forces.

(१३)

निम्बार्काचार्यपीठस्य विख्यातं शास्त्रचिन्तकम् ।
जगद्‌गुरुं सदा पूज्यं प्रणमामि पुनः पुनः ।।

अखिल भारतीय जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ जो पुष्करक्षेत्रान्तर्गत पद्मपुराण में वर्णित श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद-किशनगढ-अजमेर-राजस्थान) यहाँ पर अपने उक्त आचार्यपीठ की आज से ५०० वर्ष पूर्व अपने परमाराध्य गुरुदेव श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की पावन आज्ञानुसार संस्थापना की ऐसे विविध शास्त्रों के चिन्तन में सतत अभिरत अनन्त श्रीविभूषित जगद्‌गुरु निम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी

(श्रीस्वामीजी) महाराज जो सर्वदा पूजनीय वन्दनीय है उनको बार-बार प्रणाम करते हैं।

I repeatedly bow before Nimbarka Pithadhishwer Parshuramdevacharyajee who is worthy of worship and prayer. He is deeply engrossed in the meditation of and the study of several shastras on the instance of all honourable Harivyasdevacharyajee. It was Harivyasdevacharyajee who had established Nimbark Teerth in the area of Puskar five hundred years ago.

(१४)

श्रीमद्गोपालदेवञ्चाचार्यं[७] वन्दे प्रभायुतम् ।
श्रीहृषीकेशदेवं[८] वै सिद्धाचार्यं व्रजे स्थितम् ।।

जिनकी सर्वत्र दिव्य प्रभा परिव्याप्त है ऐसे श्रीगोपालदेवाचार्यजी महाराज एवं व्रजधाम में अवस्थित परम सिद्धस्वरूप श्रीहृषीकेशदेवाचार्यजी महाराज की सर्वविधरूपेण अभिवन्दना करते हैं।

I offer prayer in all the ways to Paramswarup Sri Hrishikeshdevacharyajee Maharaj and Gopaldevacharyajee Maharaj who are installed in Vrajadham endowed with divine light.

(१५)

माधवदेवमाचार्यं[९] नितरां नौमि शोभनम् ।
केशवदेवमाचार्यं[१०] वेदादिशास्त्रभास्करम् ।।

जिनका मंगलमय पावन स्वरूप है एवंविध आचार्यवर्य श्रीमाधवदेवाचार्यजी महाराज तथा वेदपुराणादि विविध शास्त्रों के भास्कर

अर्थात् सूर्यवत् जिनकी प्रभा है ऐसे श्रीकेशवदेवाचार्यजी महाराज को सर्वात्मना अभिनमन करते हैं।

I whole heartedly bow before such Keshavdevacharyajee Maharaj who is !ighted by the glow of the sun because of his knowledge of the Vadas, Puranadi, and other shastras and Mdhavdevacharyajee Maharaj who is known for his magnanimous appearance.

(१६)

गोपालदेवमाचार्यं[११] लपराख्यश्च सम्भजे ।
श्रीमन्मुकुन्ददेवश्च[१२] दिव्याचार्यं मुहुर्मुहुः ।।

आचार्यप्रवर श्रीगोपालदेवाचार्यजी महाराज जो अपरनाम-श्रीलपरागोपालदेवाचार्यजी महाराज रूप में परम विख्यात है एवं परम दिव्यस्वरूप श्रीमुकुन्ददेवाचार्यजी महाराज जिनकी विजयश्री सर्वत्र प्रख्यात है ऐसे इन उभयविध रूप में सुशोभित इन आचार्यप्रवरों का सर्वप्रकारेण उनका भजन-स्मरण-नमन करते हैं।

I pray, remember, and bow in all the ways to Sri Gopaldevacharyajee Maharaj alias Sri Laparagopaldevacharyajee Maharaj who is all prominent, and Mukunddevacharyajee Maharaj whose success story is famous all over.

(१७)

जम्बूस्थां वैष्णवीं देवीं[१३] शिष्यारूपेण शोभिताम् ।
निम्बार्कभक्तिसम्पन्नां प्रसिद्धां भावयेऽनिशम् ।।

इसी प्रकार कश्मीर क्षेत्र में जम्बू के पावन धाम में श्रीवैष्णवी देवी जो परमाचार्यप्रवर श्रीहरिव्यादेवाचार्यजी महाराज से कन्या स्वरूप में आकर वैष्णवी दीक्षा ग्रहण की यही श्रीवैष्णवी देवी श्रीनिम्बार्क परम्परा में भक्तिस्वरूपा परम प्रसिद्ध उनका अनवरत अपने अन्तःकरण में भावना संवलित हो वन्दना करते हैं।

I tirelessly pray from the core of my heart to Harivyasdevacharyajee Maharaj who in the guise of a girl received Vaishnavi teachings in the pious *dham* of vaishnavidevi of Nimbark hierarchy.

(१८)

श्रीहरिव्यासदेवानां द्वादशशिष्यविश्रुताः ।
तेषाञ्च वैष्णवीं देवीं त्रयोदशात्मिकां भजे ।।

परमाचार्यवर्य निम्बार्काचार्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के द्वादश अर्थात् बारह शिष्यप्रवर जो जगद्विख्यात हैं जिनका संक्षिप्तरूपेण वर्णन किया जा चुका है उनमें त्रयोदश रूप में (१३ वीं संख्या में) श्रीवैष्णवी देवी अथवा अर्धरूपेण (१२॥) वीं रूप में उनको ग्रहण किया गया है ऐसी श्रीवैष्णवी देवी का भजन-स्मरण-ध्यान करना परम हितावह है।

It is highly beneficial to pray, remember, and meditate overt such Vaishnavidevi who was accepted as *ardharupeena* in the 13th form as enunciated in short by the 12th world famous disciple headed by Nimbarkcharyajee Harivyas-devacharyajee.

(१९)

इत्थश्च शास्त्रनिष्णाताः श्रीदेवी वैष्णवीयुताः ।
द्वादशशिष्यमूर्द्धन्या विचरन्तिस्म भूतले ।।

इस प्रकार त्रयोदशात्मिका श्रीवैष्णवी सहित समस्त शास्त्रों में परम निष्णात परममूर्द्धन्यतम द्वादशशिष्यप्रवराचार्य सम्पूर्ण भूमण्डल पर विचरण कर निम्बार्क सिद्धान्त और उनकी दिव्य उपासना परम्परा का प्रचार-प्रसार करते हुए विचरण अभिरत रहे हैं।

Thus the 13th Guru icon of all the 12th gurus kept on roaming in connection with the spread of the Nimbark theory and the divine meditation of the occult.

(२०)

यथावगतमस्माभिः श्रीनिम्बार्काऽन्वयेन वै।
तथैव वर्णितां चाऽत्र ज्ञेयं भक्तसुधीजनैः ।।

हमने जिस प्रकार स्वसम्प्रदाय की परम्परा के अनुरूप अवगत किया उसी रूप में यहाँ वर्णन किया है अतः सभी विद्वज्जनों भावुक भक्त महानुभावों को इनका परिबोध करना नितान्त अपेक्षित है।

I have described here the way I have received the form of Sampradaya. Hence I request all scholars and devotees to take it in the same spirit.

(२१)

स्तोत्रं स्वान्ते सदा ध्येयं द्वादशशिष्यबोधकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

द्वादश शिष्य प्रवरों का स्वरूपावबोध कराने वाला यह स्तोत्र नियमित ध्यानपूर्वक पठनीय है जिस स्तोत्र का प्रणयन उन्हीं द्वादशाचार्यों के कृपा स्वरूप जो परिज्ञान हुआ सर्वहितार्थ यहाँ प्रस्तुत है।

This prayer which is to give details about all the 12 disciples is to be read regularly, and it is presented here for the welfare of all, and the presentation is possible because of the blessings of all 12 disciples.

श्रीवैष्णवीदेव्यष्टकं स्तोत्रम्

(१)

भारते पावने रम्ये जम्बूक्षेत्रे सुशोभिताम् ।
आराध्यां वैष्णवीं देवीं श्रीनिम्बार्काश्रितां भजे ।।

अतीव रमणीय परम पावन भारतवर्ष के कश्मीर भाग के अति दर्शनीय जम्बू क्षेत्र में दिव्यरूप से सुशोभित एवं श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की वैष्णवी देवी जो सतत आराधनीय है ऐसी उस अनिर्वचनीय स्वरूपा श्रीवैष्णवी देवी का निर्मल भजन करते हैं।

श्रीवैष्णवी देवी का निम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्य परम्परा में लगभग आज से ५५० वर्ष पूर्व इस धराधाम पर व्रजक्षेत्र में श्रीयमुना तटीय पर सुशोभित मथुरापुरी के श्रीनारदटीला स्थान पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरुवरेण्य निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर आचार्यप्रवर रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्य जी महाराज विराजते थे। एक समय आपश्री अपने यात्रा के प्रसङ्ग में कश्मीरस्थ जम्बूक्षेत्र में सहस्रों सन्तों के साथ पधारे हुए थे। जहाँ वैष्णवी देवी स्थान है उसके अति निकटवर्ती चटथावल नामक ग्राम में सन्ध्या के समय श्रीसर्वेश्वर सेवार्थ वहाँ विश्राम किया। उस समय कतिपय सन्तों ने आचार्यश्री के समक्ष उपस्थित होकर निवेदन करते हुए कहा कि हे आचार्यवर्य ! यहाँ अति निकट एक देवीजी का स्थान है जहाँ पर उनके अनुयायी वहाँ पर पशुबलि कर रहे हैं, देखकर हम सब अत्यन्त व्यथित हैं। आचार्यश्री ने उनके वचनों को श्रवण कर सबको यह संकेत किया कि रात्रि का आगमन है श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा हो चुकी है अतः आप सब समस्त रात्रि निराहार रहकर व्यतीत करें, हम स्वयं भी

इसी निराहार के रूप रहेंगे और प्रातःकाल होते ही यहाँ से प्रस्थान कर देंगे।

रात्रिशयनकाल में उस ग्राम के प्रमुख नगरवासी एक महानुभाव को देवी ने स्वप्न में आदेश किया कि तुम्हारे इस ग्राम में वैष्णवाचार्य एवं अनेक वैष्णव सन्त महात्मा पधारे हुए हैं उन्होंने पूरी रात्रि बिना अन्न जल के व्यतीत की है, तुम सब हमारे यहाँ पशुबलि करते हैं इससे सन्त-महात्माओं को बड़ी व्यथा हुई है अतः आज से पशुबलि स्थगित कर शुद्ध-सात्त्विक मिष्ठान्न भोग ही हमारे अर्पित करो, और सभी आचार्यश्री के निकट पहुँच कर क्षमा याचनापूर्वक वैष्णवी दीक्षा ग्रहण करो मैं स्वयं भी एक कन्या का रूप धारण करके उनसे वैष्णवी दीक्षा ग्रहण करूँगी'। यदि तुम सबने इस कथन पर ध्यान नहीं दिया तो तुम्हारी हानि निश्चित है।

उक्त ग्राम के महानुभाव ने इस स्वप्न की घटना समस्त ग्रामवासियों को श्रवण कराई और तब सभी ने एवं देवीजी ने कन्या स्वरूप से पहुँच कर प्रातःकाल की शुभवेला में आचार्यश्री से वैष्णवी दीक्षा प्राप्त की अतः तभी से वह देवी वैष्णवी देवी नाम से इस समस्त विश्व में प्रख्यात हुई। इस प्रसङ्ग का वर्णन भक्तशिरोमणि परमसन्त श्रीनाभादासजी महाराज अपने ''भक्तमाल'' ग्रन्थ में श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के पावन चरित प्रसङ्ग में इस चरित का अति संक्षेप में संकेत किया है।

इसी प्रस्तुत इस स्तोत्र के द्वितीय श्लोक से इसी आशय को व्यक्त किया गया है।

We offer our pious prayer to such indestructible goddess Vaishnavi, the goddess of Nimbark cult. The said goddess is beautifully installed in her divine form in the worth seeing Jammu area in the territory of Kashmir in extremely pleasant and pious India. Acharya Rajrajeshwer Harivyasdevacharyajee, head of the Acharya, honoured with Jagatguru Nimbarkachrya Pithadhishwar, the first of the Acharya of Nimbark cult, had lived five hundred fifty years ago at Naradtila of Mathrapuri situ-

ated on the confluence of Yamuna.

Once during his journey period he along with his hundreds of disciples was in Jammbu area located in Kashmir. There is the abode of goddess Vaishnavi. Once evening he rested for the services of Almighty. During that time, some of the sages approached him and informed him that there is a goddess temple nearby and we are very much baffled to find that people are sacrificing animals at the altar of goddess. After listening to them, he signalled to them about the arrival of the night. He further said the service of the Lord is over and you are all advised to spend supperless and waterless night. With the rising of the sun, they would proceed to the temple.

The head of the said village during night in his dream saw goddess Devi who instructed him not to go for any kind of animal sacrifice from today because one Vaishnavacharyajee along with other Vaishnav sages are here shocked to know about it and they have spent supperless, waterless night simply because you people sacrifice animals.

From today onwards, there will be no animal sacrifice, only pure and vegetarian sweet *bhags* (prasads) will be offered. And you all have to go to them and request them and prayfully beg apology and be their followers. I also, in the guise of a girl, will be there to get initiation from him. If you people do not pay attention to it definitely, some harm will be done to you.

The head of the said village narrated every-

thing to all the villagers and all the villagers along with the goddess in the guise of girl in early morning received initiation, and from that very day that goddess is known as Vaishnavi in the whole universe.

Sri Navadas Maharaj in his book *bhaktamal* in reference to the pious character of Harivyasdevacharyajee Maharaj has referred to this incident in brief. This is what is contained in the second sloka of this prayer.

(२)

श्रीहरिव्यासदेवाप्तमन्त्रदीक्षां सुवैष्णवीम् ।
आराध्यां वैष्णवीं देवीं श्रीनिम्बार्काश्रितां भजे ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर आचार्यवर्य रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज से जिस देवी नै वैष्णवी दीक्षा ग्रहण की वही देवी श्रीवैष्णवी देवी इस परमशुभनाम से विख्यात हुई । इस प्रकार निम्बार्क भगवान् के समाश्रित यह श्रीवैष्णवी देवी जो परम आराध्य स्वरूपा है उसका भजन करते हैं।

The goddess, who received initiation from Rashikraj Rajeshwer Harivyasdevacharyajee honoured with Jagatguru Nimbarkacharya Pithadhishwer, is famous by the name of goddess Vaishnavi. This is how we offer our prayer to goddess Vaishnavi and it has almost become the symbol of Nimbark Bhagavan.

(३)

भक्तमालाख्ययसद्ग्रन्थे स्वाचार्यश्रीकथाक्रमे ।
वर्णितां वैष्णवीं शक्तिं श्रीनिम्बार्काश्रितां भजे।।

श्रीनाभादासजी महाराज द्वारा प्रणीत श्रीभक्तमाल ग्रन्थ में अपने उपर्युक्त वर्णित आचार्यश्री के कथा प्रसङ्ग में परिवर्णित परमशक्तिस्वरूपा श्रीवैष्णवी देवी जो श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यश्री के अनुगत रही उनका भजन करते हैं।

We offer our prayer to goddess Vaishnavi, the symbol of all powerful energy and the followers of god Nimbarkacharyajee. The reference of this story of the Acharyashree has been re-described in the book entitled *""Bhaktimal"* written by Sri Navadasji.

(४)

अमन्दानन्ददां देवीं श्रीनिम्बार्कपथानुगाम् ।
ईदृशीं वैष्णवीं देवीं वन्दे सात्विकरूपिणीम् ।।

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य द्वारा प्रवर्तित श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के मार्ग का अनुसरण करने वाली परमानन्द को प्रदान करने में तत्पर जो देवी वही ऐसी वैष्णवी देवी जो सात्विक भावस्वरूपा है उसकी भावनापूर्वक वन्दना करते हैं।

We offer our emotional prayer to the same sacred goddess Vaishnavi who is all out to offer permanent pleasure to the people of the Nimbark cult who were initiated by Nimbarkacharyajee Maharaj.

(५)

मिष्ठान्नफलसन्तुष्टां पर्वतशिखरे स्थिताम् ।
परमां वैष्णवीं देवीं वन्दे निम्बार्कदर्शिकाम् ।।

मिष्ठान्न एवं फलों से ही परम सन्तुष्ट होने वाली, जम्बू क्षेत्र के पर्वत शिखर पर विराजित एवं निम्बार्कस्वरूप का सुभग दर्शन कराने में संलग्न ऐसी

परम श्रीवैष्णवी देवी की अभिवन्दना करते हैं।

We offer our prayer to the same goddess Vaishnavi who remains satisfied with the sweets and fruits offered to her and who is capable of giving us Nimbarkswaroop darshana installed at the pinnacle of the mountain of Jammbu region.

(६)

सर्वत्रविदितां विश्वे भक्तैश्च समुपासिताम्।
सुप्रभां वैष्णवीं देवीं वन्दे श्रीकृष्णभक्तिदाम्।।

सम्पूर्ण विश्व में जिसकी प्रसिद्धि है और भक्तजन उनकी उपासना में लगे रहते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण की विमल भक्ति को प्रदान करने वाली दिव्य कान्तिस्वरूपा श्रीवैष्णवी देवी की वन्दना करते हैं।

We offer our prayer to goddess Vaishnavi endowed with the divine light of the devotion of Lord Krishna. The said goddess is famous in the entire world and devotees are all engrossed in her prayer.

(७)

सुरवृन्दैः सदा सेव्यां भक्तवांछाभिपूरकाम्।
श्रद्धया वैष्णवीं देवीं वन्दे सुरेश्वरीं पराम्।।

देवगणों द्वारा परिसेवित और भक्तों के पावन मनोरथों को पूर्ण करने वाली पराम्बाशक्ति सुरेश्वरी श्रीवैष्णवी देवी की परम श्रद्धापूर्वक वन्दना करते हैं।

We offer our prayer with all devotion to goddess Vaishnavi who is all powerful and is capable of

fulfilling of the desire of sages and devotees who serve her.

(८)

गौराङ्गीं सुभगां दिव्यां दया-कारुण्यनिर्भराम्।
सततं वैष्णवीं देवीं वन्दे पङ्कजलोचनाम्।।

दिव्यतम गौरवर्णस्वरूपा सौन्दर्य सम्पन्न तथा दया और करुणा से परिपूर्ण एवं सुन्दर कमलनेत्रस्वरूपा श्रीवैष्णवी देवी की निरन्तर वन्दना करते हैं।

We endlessly pray to beautifully lotus eyed goddess Vaishnavi who is full of kindness and sympathy and is the symbol of divinely rare beauty.

(९)

श्रीमद्देव्यष्टकं स्तोत्रं राधाकृष्णरतिप्रदम्।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम्।।

भगवान् श्रीराधाकृष्ण की विमल भक्ति देने वाला यह श्रीवैष्णवीदेव्यष्टक स्तोत्र जो उनकी पावन प्रेरणा से प्रस्तुत हुआ वह सर्वदा पठनीय है।

This prayer in honour of goddess Vaishnavi is the fruit of the devotion towards Lord krishna and has been possible because of His blessings. This prayer deserves to be ever read for all the days to come.

निर्जरभारतीस्तोत्रम्

(१)

दिव्यसंस्कृतभाषेयं देववाणी सुधानिधिः ।
ज्ञान-विज्ञानसम्पन्ना जयति नितरां भुवि ।।

संस्कृत भाषा परम दिव्य देववाणी है अर्थात् स्वर्गस्थ देवता इसी वाणी से वार्ता करते हैं और सुधा अर्थात् अमृतानन्द की अगाध सागर है जिसमें समस्त ज्ञान-विज्ञान निहित हैं। ऐसी यह संस्कृत भाषा उसकी इस सम्पूर्ण जगत् में सभी प्रकार से जय हो।

Sanskrit language is known as the divine language of the sages and gods. Hence gods residing in the heaven talk in this language and this is known as the ocean of all knowledges. This is what our Sanskrit language is and we wish that it remains honoured all over the universe.

(२)

निर्जरभारती प्रेष्ठा भुवने परमोत्तमा ।
यस्योच्चारणमात्रेण ददाति स्वर्गसम्पदाम् ।।

इस संसार में यह संस्कृत भाषा सर्वश्रेष्ठ परम उत्तमरूप से प्रतिष्ठित है। जिसके उच्चारण करने मात्र से स्वर्गीय वैभव प्राप्त होते हैं।

This Sanskrit language is established in its best form. The pronunciation part of the language itself speaks of its heavenly height.

(३)

श्रेयस्करी हरेर्वाणी वेदेषु सुमतिप्रदा ।

निगमागमसद्भाषा राजते रसवर्षिणी ।।

यह भगवदीय वाणी है वेदों के चिन्तन में सद्बुद्धि एवं समस्त संस्कृत वाङ्मय ग्रन्थों में यही अनिर्वचनीय रस अर्थात् परम आनन्द को प्रदान करने वाली वह संस्कृत भाषा परम सुशोभित है।

This is the language of God and whatever indescribable and pleasant nectar we receive from the thought of Vedas and the divine books of Sanskrit are attributed to this language only.

(४)

ऋषिमुनिजनैर्नित्यं गीयमाना निजान्तरे ।

भवमुक्तिप्रदा चैव तापं हरति पूर्णतः ।।

ऋषि-मुनिजनों द्वारा सर्वदा इसी संस्कृत भाषा का अपने हृदय से प्रयोग होता रहा है। यह देववाणी निखिल जगत् से आत्यन्तिक निवृत्ति एवं आध्यात्मिक, आधिदैविक , आधिभौतिक इन तापत्रय का सभी प्रकार निवारण करती है।

This Sanskrit language has always been used by *rishes* and *munees* from their heart. This God's language is capable of getting us rid of material involvement of the universe and also of the three evils--spiritual, physical and material.

(५)

पातकध्वंसिनी पुण्या श्रीगङ्गावत्प्रवाहिनी ।

शब्दनिर्झरणी ज्ञेया भावये हृदि सर्वदा ।।

समस्त पाप-तापों का ध्वंस करने वाली परम पुण्यमयी गंगावत् जिस वाणी का अविरल प्रवाह चलता है, अनन्त विविध शब्दों का जिसके द्वारा निर्झरण होता है ऐसी इस देववाणी संस्कृत भाषा का पावन स्वरूप है।

This pious form of Sanskrit language, i.e., God's voice is capable of destroying all the miseries and worries and it flows continuously like the Ganga water and is capable of producing countless different words.

(६)

विपश्चिद्भारती भाषा जनकल्याणकारिणी ।
श्रुतिमन्त्रप्रदा येयं शोभतेऽतिहितावहा ।।

यह संस्कृतज्ञ उत्तम विद्वज्जनों की श्रेष्ठतम भाषा है। समस्त मानवमात्र का कल्याण करने वाली वेदोपनिषदादि सकल शास्त्रों के दिव्यातिदिव्य मन्त्रों को देने वाली परम हितकारी इस जगत् में अतिशय शोभायमान है।

Sanskrit is the best language of greatest scholars this is exceedingly beautiful and extraordinarily beautiful because of the reason that it is capable of producing all the mantras of all divine Vedopanishads and Shastras which are beneficial for mankind.

(७)

तुष्टिपुष्टिकरी रम्या निखिलागमदर्शिका ।
सूत्रात्मिका बृहद्रूपा वन्देऽध्यात्मपथप्रदा ।।

सर्वप्रकार से दिव्य आनन्द को देने वाली और जिसके सम्यक् अवबोध

करने पर वाणी समुच्चारण में पुष्टि अर्थात् प्रखरता प्रदान करने वाली एवं जिसके अनुशीलन किये जाने पर सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञान कराने वाली जो सूत्रात्मक भी है तथा जिसका अतीव वृहद् रूप भी है तथा अध्यात्म विद्या का सर्वाङ्गीणरूपेण परिज्ञान कराती है ऐसी परमोपकारस्वरूपा देववाणी संस्कृत भाषा की हम अभिवन्दना करते हैं।

We bow to the God's language Sanskrit which is capable of producing divine pleasure of all sorts of people and the knowledge of which enables us to pronounce well and add sharpness to it. The study of thes language enables us to get the complete knowledge of all shastras in their concise as well as voluminous size. Finally, it also enables us to get the knowledge of spiritualism in all its forms.

(८)

शब्दाऽलङ्कारसम्पृक्ता वाग्देवी श्रीसरस्वती ।
सेव्याऽनन्यमहाप्राज्ञै-रिह सर्वत्र गीयते ।।

अनन्त असीम शब्दालङ्कारों से परिपूर्ण है, वाणी स्वरूपा यह प्रत्यक्ष श्रीसरस्वती रूप है तथा उत्तमोत्तम उत्कृष्टतम महामनीषीजनों द्वारा इसकी आराधना पूर्वक परिशीलन किया जाता है और समस्त विश्व में इसकी पावन महिमा का गान किया जाता है।

This language full of countless and fathomless figures of speech is directly the embodiment of goddess Saraswati's words. And it is studied and taught all over by greatest and the best knowledgeable persons. This is how it is honoured all over the world.

(६)

निर्जरभारती स्तोत्रं मनसाऽभीष्टदं प्रियम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

अपने अभिलषित मनोरथों को देने वाला अतिप्रिय यह निर्जरभारती स्तोत्र है जिसकी रचना वाग्देवी श्रीसरस्वतीजी कृपा से ही सम्भव हो सकी है। भगवज्जनों को इसका अनुशीलन करना परम उत्तम कार्य है।

The composition of this prayer, Nirjanbharati which is capable of fulfilling of all the desired wishes of the people is possible because of the grace of goddess saraswati herself. A study and research on this language will be a noble work of the devotees.

जराऽऽर्तानुभवाष्टकम्

(१)

जरा-व्याधिर्महाव्याधी रोगग्रस्तातिदुस्सहः ।
नानाक्लेशकरो यो हि प्रत्यक्षमनुभूयते ।।

प्रथम तो वृद्धावस्था ही महाव्याधी की द्योतक है उसमें भी यदि किसी रोग-विशेष का आक्रमण हो जाय तो वह और भी अति कठिन स्थिति उत्पन्न करने वाली है उसमें विविध रूप से कष्ट उपस्थित हो जाते हैं जिसका प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया जाता है।

First of all, the old age in itself is a great disease, and if it is attacked by a particular disease, it creates still more difficult situation causing all sorts

of worries which can be directly felt.

(२)

असह्यकष्टदो व्याधि-र्जरावस्था विचारिणी ।
महाविपत्तिदा नित्यं रोगवृद्धिं करोति या ।।

असह्य कष्टप्रद यह वृद्धावस्था महाव्याधिरूप है जो निश्चय ही चिन्तनीय है, यह अवस्था महाविपत्ति को देती हुई नित्य नये-नये रोगों की वृद्धि करने वाली है।

Intolerably miserable this old age symbolizes great disease which is really a matter of worry. This age creates new diseases everyday which is a matter of serious concern.

(३)

गोविन्दस्मृतिमात्रेण ध्रुवा शान्ति-र्भवेदिह ।
इति मत्वैव सातत्यं युग्मभक्तिं समाचरेत् ।।

भगवान् गोविन्द-श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु के स्मरण मात्र से इस वार्द्धक्य काल में अवश्य शान्ति प्राप्त होती है अतः इस प्रकार अवगत कर निरन्तर युगलकिशोर श्रीराधामाधव भगवान् की विमल भक्ति का समाश्रय लेना परम हितावह कार्य है।

Peace can be surely attained by merely remembering the name of Lord Krishna. And deep devotion to Radhe-Krishna is decidedly of great use.

(४)

जरामवाप्य यो लोके भजते न हरिं यदा ।
तदा तु विविधं कष्ट-माप्नुयादिति निश्चितम् ।।

इस वृद्धावस्था को प्राप्त करके इस जगत् में जो मानव परम कृपापयोधि भगवान् सर्वेश्वर श्रीहरि का भजन-स्मरण नहीं करता तब तो निश्चित रूप से वह वृद्धावस्थापन्न व्यक्ति नाना प्रकार के कष्टों का उपभोग करेगा ।

If after attaining old age, people do not remember and pray to Lord Krishna, they will definitely be attacked by many kinds of miseries.

(५)

जनयति जराव्याधिरन्तोऽतिपुरतः स्थितः ।
इत्यधीत्य भजेन्नित्यं राधाकृष्णपदाम्बुजम् ।।

यह जरा अर्थात् वृद्धावस्था की महाव्याधि यह प्रेरणा देती है कि अब अपना अन्त अत्यन्त सन्निकट उपस्थित है अतः यह अवबोध करके प्रतिदिन परम करुणार्णव श्रीराधाकृष्ण भगवान् के दिव्य युगलचरणारविन्दों का भजन-ध्यान और स्मरण करना अतीव आवश्यक है।

The great disease of this old age in itself creates awareness in us that our end is extremely imminent. So with this end in view, it is highly essential for us to pray, meditate and remember the Almighty Radhe-Krishna.

(६)

श्रीसर्वेश्वरप्रभोश्चारु दर्शनं विदधाति यः ।
भजनं कीर्तनं नित्यं स हि स्वानन्दमश्नुते ।।

जो श्रीसर्वेश्वर प्रभु का सुन्दर दर्शन करता है उनका तन्मयता पूर्वक भजन-कीर्तन नित्यप्रति करता है वह अनन्य भक्त निश्चय ही परमोत्तम आनन्द की उपलब्धि करता है।

A devotee who goes for the darshna of Lord Krishna and is deeply engrossed in the prayer and the chanting of Lord Krishna everyday is bound to achieve great and permanent ecstasy.

(७)

भगवदर्पणं सर्वं कुर्याद्भक्त्या सुनिष्ठया ।
आनन्दं लभते स्वान्ते चेति शास्त्रानुशासनम् ।।

परमनिष्ठ और भक्तिपूर्वक भगवान् श्रीसर्वेश्वर के श्रीचरणकमलों में सर्वस्व समर्पण करने वाला भक्त परमानन्द की प्राप्ति करता है, इस विषय में शास्त्रों के विविध पावन वचन सन्निहित हैं जो सर्वदा अपने चित्त में अवधारणीय हैं।

In this regard, we have to remember that even in our Shastras, it is clearly mentioned that such devotees, who surrender themselves at the sacred feet of Lord Krishna and pray to Him with a senes of dedication and devotion, achieve permanent peace.

(८)

रट वृन्दावनाधीशं श्रीराधामाधवं प्रभुम् ।
येन वै सकलो व्याधि-र्निर्गतस्तद्भविष्यति ।।

वृन्दावनाधीश श्रीराधामाधव भगवान् के पावनतम मधुरातिमधुर नामों

का उच्चारण कीर्तन रटन करे तो निश्चय ही समस्त आधि-व्याधियों का निवारण स्वतः हो जायेगा ।

We decidedly get rid of all worries and diseases by being engrossed in the repeated chanting of name of sweet and pious God Lord Krishna.

(९)

हरति पठनात्तापं जराऽऽर्तानुभवाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

यह जराऽऽर्तानुभवाष्टक स्तोत्र के पाठ करने एवं उसके मनन चिन्तन करने पर जागतिक निखिल तापों (कष्टों) का स्वतः परिहार हो जायेगा । इस स्तोत्र का प्रणयन उन्हीं श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पावन प्रेरणानुरूप ही यहाँ प्रस्तुत हुआ है।

We automatically get rid of all the worldly worries by memorizing, understanding, meditating and chanting shlokas of this prayer. It would not be out of place to mention here that the composition of this prayer has been possible by the grace and inspiration of Lord Krishna.

प्रेरणाप्रदानि वचनानि

(१)

विहाय ये हरे र्भक्तिं समीच्छन्त्यर्थहेतवे ।
भवन्त्यन्ते महाऽज्ञास्ते कृतान्ताऽऽक्रोशभागिनः ।।

जगन्नियन्ता परात्पर सर्वेश्वर श्रीहरि की कल्याणकारिणी परमानन्दप्रदायिनी विमल भक्ति को छोड़कर जो केवल इहलौकिक क्षणभंगुर सम्पदा प्राप्ति की ही इच्छा करते हैं वे अज्ञजन यमराज के कोप भाजन बनते हैं।

Those uninformed people, definitely become the objects of anger of Yamaraj who at the cost of the devotion towards the Almighty Lord Krishna, desire for the attainment of all transitory materials of this world.

(२)

अभिवाञ्छन्ति सम्पत्तिं ये नित्यमर्थलोलुपाः ।
ते नराः मोहमापन्ना अन्ते क्लिश्यन्ति तद्ध्रुवम् ।।

जो अर्थलोलुप पुरुष इस क्षणिक भौतिक सम्पति की निरन्तर अभिलाषा करते रहते हैं वे मोहपाश आबद्ध मानव अन्त में अत्यन्त क्लेश का निश्चय रूप से अनुवभ करते हैं।

Those who endlessly crave for the attainment of transitory materials and are all hungry for money get caught in the world of temptation and finally undergo great sufferings.

(३)

येऽअर्थाऽर्थं तत्परा लोका वाञ्छन्ति केवलं धनम् ।
तास्कर्यवृत्तिमाश्रित्य तदर्थञ्च परायणाः ।।

जो पुरुष अर्थ प्राप्ति के लिए ही सदा तत्पर रहते हैं केवल इस विनश्वर धन लाभ के लिये ही अभिलाषी बने रहते हैं और इसके लिए चौरी आदि निन्दनीय कर्म में तत्पर एवं धन प्राप्ति हेतु ही सदा उसमें लगे रहते हैं।

There are people, who are all out and desirous of monetary gain and are prepared to stoop down to the extent of theft and abominable acts, are always after the attainment of wealth.

(४)

इत्थंभूता मनुष्यास्ते संत्यज्य सत्यमाशु च ।
वित्तार्थ निरताः सन्ति गर्ह्यकर्मपरा भृशम् ।।

उपर्युक्त वर्णित ऐसे मनुष्य शीघ्र ही सत्य और यथार्थ को त्याग कर केवल वित्त अर्थात् धन संग्रह हेतु ही पूर्णरूपेण अतीव निन्दनीय कर्म करने में ही अनवरत अभिरत रहते हैं।

The aforesaid such people leave the path of truth and reality and remain involved in the extremely abominable deeds.

(५)

दस्युकर्मणि संलिप्ताः कुर्वन्ति दस्युताऽनिशम् ।
नृहिंसानिरतास्तेऽपि स्वदेशेऽस्त्यधुना स्थितिः ।।

डकैती आदि दुष्कर्म में लगे हुए सर्वत्र जहाँ तहाँ डाका डालते हुए हिंसा जैसे नीच कर्मों में लिप्त रहते हैं, यही स्थिति आज अपने पूरे देश में परिव्याप्त है।

Such people involve themselves in robbery and rob people here, there and everywhere and involve themselves in violence and all mean acts. Such is prevalent in the entire country.

(६)

विवेकहीनता देशे परिव्याप्ताऽतिदुस्सहा ।
तदैव प्रत्यहं हिंसा जायते च पुनः पुनः ।।

अपने देश में विशेषतः विवेक नाम की कोई वस्तु ही नहीं है और सर्वत्र अविवेक ही व्याप्त हो रहा है जो सभी प्रकार से असहनीय है और इसी कारण बार-बार हिंसायें होती जा रही है।

Particularly in our country, there is nothing like conscience and everywhere the loss of conscience is prevalent causing violence all the time, making it entirely unbearable.

(७)

धीरै र्विचारणीयश्च प्रबोधव्यं प्रशासकैः ।
समवेतस्वरूपेण त्वरया पूर्णनिष्ठया ।।

इस सम्बन्ध में जो श्रेष्ठ पुरुष हैं तथा प्रशासकजन हैं उन्हें चाहिए कि वे सामूहिक रूप से गहन विचार मन्थन पूर्वक अतीव निष्ठा के साथ शीघ्रता से इसके निरोधार्थ कार्य करें ।

In this context, good people and men in authority are required to go for deep thought and analysis to counteract these abominable acts quickly.

(८)

दीनाऽऽर्तजनसेवायां भवेयुस्तत्परा: समे ।
ये सर्वार्थसुसम्पन्ना: कर्तव्यकर्मभाविता: ।।

जो सर्वथा दीन अवस्था में अपना जीवन यापन करते हैं और जो सर्वप्रकार से दुःखीजन हैं उनकी सेवा-सहायता के लिए जो सम्पदा सम्पन्न महानुभाव हैं तथा अपने कर्तव्य में सदा तत्पर रहते हैं ऐसे उत्तम पुरुषों को ऐसे श्रेष्ठ कार्य में अभिरत रहना अतीव अनिवार्य कार्य है।

It's highly essential for those great people who are all for their duties and such ideal people who are involved in good works should come to the service and help of those who are miserably poor and leading a miserable life.

(९)

हिन्दुसंस्कृतिघातार्थं भ्रमन्ति दुरिता जना: ।
तन्निरोधाय तीव्रेण कर्तव्यं शासकै-र्मुहु: ।।

अपनी हिन्दु-संस्कृति पर आघात करने के लिए दुष्ट प्रकृति के पुरुष लगे हुए हैं ऐसे पुरुषों के सर्वाङ्गरूप से उनके निरोध हेतु प्रशासकजनों को अविलम्ब तीव्र गति से कार्य करना नितान्त आवश्यक है।

It''s essential for men in authority to negate those evil minded people in all possible ways who

are out to attack Hindu culture.

(१०)

अस्मिन्कर्मणि शैथिल्यं न विधेयं प्रशासकैः ।
अन्यथा देशरक्षायां काठिन्यं तु विजायते ।।

प्रशासकों को इस कार्य में शिथिलता नहीं करनी चाहिए यदि शिथिलता की गई तो अपने देश की सर्वविध सुरक्षा में बड़ी कठिनता उत्पन्न हो जायेगी ।

Men in authority should not be lenient in doing so because this leniency on their part can create a difficult situation for the all round safety of the country.

(११)

पौनः पुन्येन सद्वार्ता ग्राह्या चित्ते प्रशासकैः ।
अन्यथा महती हानिः स्यादिति चाऽवलोक्यते ।।

बारम्बार यह बात कही जारही है जिसे प्रशासकजनों को अपने हृदय में गहन रूप से एतद्विषयक चिन्तन करना परम अपेक्षित है, अन्यथा उपेक्षा करने पर देश की बहुत बड़ी हानि हो सकती है जिसका प्रत्यक्ष अनुभव किया जा रहा है।

It is repeatedly said that it is desirable on the part of the people in authority to give a thought regarding this, failing which great loss to the country is going to be done.

(१२)

धर्माचार्याश्चसन्तोऽपि महान्तोमण्डलेश्वराः ।
प्रभवेयुः सतर्काश्च येन रक्षा भवेच्चिरम् ।।

देशस्थ समस्त धर्माचार्य सन्त-महन्त-मण्डेलश्वर-महामण्डलेश्वर आदि सभी को पूर्णतया सतर्क हो जाना चाहिए जिससे देश की सर्वतोभावेन चिरकाल पर्यन्त सुरक्षा सम्भव हो सके ।

Religious sages, saints, and *Mandeleshwer* and Maha *Mandeleshwer* should be completely cautious so that permanent welfare and security could be possible.

(१३)

देशस्थजनतायाश्च कार्यमिदं सुनिश्चितम् ।
येन सतर्करूपेण भाव्यं स्वदेशरक्षणम् ।।

देश की समग्र जनता का यह परम कर्तव्य है कि वह भी पूर्णरूप से सतर्कता पूर्वक देश की सर्वात्मना सुरक्षार्थ कटिबद्ध हो जाय तभी सामूहिक रूप से किया गया कार्य सफल हो सकेगा ।

It's the sacred duty of all people of the country to remain cautious and completely and collectively intent on it. Then only it can be successful.

(१४)

प्रसङ्गोऽयञ्च देशेऽस्मिन्ग्रामेषु पत्तनेषु वै ।
विज्ञातव्यो भवद्भिश्च येन बोधः स्वतोभवेत् ।।

इस प्रस्तुत प्रसङ्ग से देश के प्रमुख-प्रमुख नगर और ग्रामों में सर्वत्र वहाँ के निवासीजन समुदाय को अवगत कराना अतीव आवश्यक कार्य है जिससे वे भी भलि प्रकार इन विपरीत तत्त्वों के विकृत कर्म से सुपरिचित हो जाँय ।

It's essential to arouse complete awareness in big cities, villages, and everywhere among the people so as to acquaint them well of all these adverse deeds.

(१५)

एकत्रीभूय सर्वैश्च मिथो विचारणा बुधैः ।
त्वरितमेव कर्तव्या यद्देशरक्षणं भवेत् ।।

सभी विज्ञ विद्वज्जनों को एक स्थान पर एकत्रित होकर परस्पर में एतद्विषयक अविलम्ब ही विशेष विचार-विनिमय करना परम अपेक्षित है जिससे अपने राष्ट्र की अपने देश की एवं जन समुदाय की साङ्गोपाङ्ग सुरक्षा सम्भव हो सके ।

It's highly desirable that all knowledgeable and great scholars assemble at a particular place and immediately exchange views on it so that all round security of the general people of the country is possible.

(१६)

तदर्थं किं विधेयश्च योजना कीदृशी वरा ।
साकल्येन विधातव्या सा च श्रेष्ठतमा भवेत् ।।

इसके लिए क्या करना अभीष्ट है किस प्रकार की योजना उत्तम हो सकती है, जिसके लिए समग्र रूप से सर्वश्रेष्ठ योजना की जानी आवश्यक है

यह परम नितान्त अनिवार्य कार्य है।

It's highly essential to go for best kind of planning for the achievement of the desirable goals.

(१७)

मुहुर्मुहुरियं वार्ता स्वकीया पुरतः स्थिता।
सर्वरीत्या प्रबोद्धव्या नितान्तं सा च वर्तते ।।

बार-बार यह प्रसङ्ग अपने द्वारा निर्दिष्ट किया जा रहा है जो प्रत्यक्ष अनुभव में आरहा है, इसको सर्वाङ्गतया जानना अत्यन्त अपेक्षित है जिसके लिए गम्भीर चिन्तन किया जाना चाहिए ।

It's totally and highly desirable to go for serious thought in this regard which is being indicated and felt directly.

(१८)

देवमन्दिरसंरक्षा गोसुरक्षाऽपि सर्वथा।
इत्थञ्च शास्त्ररक्षाऽऽशु विधेया सज्जनैर्बुधैः ।।

देव मन्दिरों का संरक्षण एवं गोमाता की सुरक्षा सभी प्रकार की जानी चाहिए। इसी प्रकार हमारे जितने भी प्राचीन-अर्वाचीन धर्मग्रन्थ हैं उनके प्रकाशन-मुद्रणादि द्वारा उनकी सर्वात्मना सुरक्षा-व्यवस्था करना श्रेष्ठ पुरुषों का परम कर्तव्य है।

Protection of God's Temples and security of cows should be done. It is the sacred duty of all noble and great people to go for the publication and print-

ing of all old religious books.

(१९)

गोरक्षा पूर्णतः कार्या सर्वदेवमयी शुभा ।
गवां बधनिरोधश्च विधातव्यः प्रशासकैः ।।

गोमाता की सभी प्रकार से पूर्णरूपात्मक रक्षा की जानी चाहिए यह गोमाता समस्त देवताओं की आधार स्वरूपा है। गोमाता का जो बध हो रहा है उसे तत्काल स्थगित करके उसकी समग्रतया सुरक्षा की जानी चाहिए यह सब प्रशासकों का आवश्यक कर्तव्य है।

All protection should be given to the mother cows which are the ultimate essence of all Gods. It's the essential duty of all the people in authority to see to it that cow slaughter is immediately stopped and efforts should be made to go for the complete security of cows.

(२०)

असीमगुणसम्पन्ना ''गावो विश्वस्य मातरः'' ।
इति वेदेषु विख्याता रक्षणीयाः सदा हि ताः ।।

गोमाता अनन्त गुणों से परिपूर्ण है, वह गोमाता सम्पूर्ण विश्व की माता है, यह वेदों ने एवं हमारे पुराणादि धर्मग्रन्थों ने इसकी अपार महिमा का वर्णन किया है। ऐसी पावन स्वरूपा गोमाता की सर्वविधरूप से रक्षा की जानी चाहिए।

Mother cow is full of qualities. She is the mother of the entire universe. Our Vedas and *puranas*

and other religious books have described about her prominence in this regard.

(२१)

मातृरक्षाऽपि कर्तव्या बालरक्षाऽपि निश्चितम् ।
खग-मृगादिसंरक्षा द्रु-सरोरक्षणं भवेत् ।।

इसी प्रकार हम सबकी जन्मदात्री माता तथा अल्पवयस्क बालकों की एवं वन प्रदेश में विचरण करने वाले पक्षीगण तथा मृग (हरिण) आदि की भी सर्वरीत्या रक्षा करना परम धर्म है। नगरों में ग्रामों में वनप्रदेश में जो सुन्दर-सुन्दर वृक्ष है तथा सरोवर हैं, उनकी सुरक्षा का भी पूर्णतया ध्यान रखना नितान्त कर्तव्य है।

To provide all round protection of mothers, who have given birth to us, babies, deer. and all kinds of birds roaming in and around the forest, is our sacred duty.

(२२)

पादपोच्छेदनं कर्म न कर्तव्यं कदाचन ।
पशु-पक्षिसंदोहानां विधेयं रक्षणं सदा ।।

इन परम परोपकारी हरित लता-वृक्षों का उच्छेदन अर्थात् उनका संहार (काटना) आदि का विशेष निरोध कर उनकी सर्वविध रक्षा की जानी चाहिए । इसी प्रकार ग्राम्य एवं वन्य पशु-पक्षियों की पूर्णरूप से रक्षा की जाना आवश्यक है।

The deforestation of plants and trees should be immediately stopped and they should be protected

in all the possible ways. Exactly like this, it is essential to protect villages and forest, animals and birds.

(२३)

गङ्गा-कलिन्दजास्वच्छ-नीरे प्रदूषणोद्भवः ।
तन्निरोधाय सत्कार्यं कर्तव्यञ्च प्रशासकैः ॥

भागीरथी श्रीगंगा एवं यमुना आदि इन पुण्य सलिला सरिताओं के निर्मल सुपावन जल में जो नगरों महानगरों के गन्दे जल को उनमें छोड़कर उसमें अत्यन्त प्रदूषण किया जा रहा है उसके निरोध के लिए प्रशासकों को सर्वप्रथम यह कार्य करना परम अनिवार्य है।

People of cities and metropolitan clties are all out to pollute the sacred rivers like the Ganga, the Yamuna by releasing the dirty water. It should be the first and foremost as well as sacred duty of the people in authority to stop it altogether.

(२४)

सत्यं तथ्यं सदा सेव्यं विवेकापन्नमानवैः ।
येन जीवनसार्थक्यमिति शास्त्रेषु वर्णितम् ॥

विवेकीजनों को यथार्थ सत्य का सदा ही परिपालन करना चाहिए जिसमें मानव जीवन की परम सार्थकता है, जिसका हमारे सभी वेदादि शास्त्रों ने वर्णन किया है।

In our religious *shastras* like the Vedas, it is clearly given that Justification of human life lies in the fact that conscious people stick to the reality of truth.

(२५)

न कदाप्यनृतं ब्रूयाद्विवेकाप्तजनोत्तमः ।
सत्यमाश्रित्य लोकेऽस्मिन्निर्वाहो नितरां वरः ।।

उत्तम विवेकीजनों को मिथ्या का कभी भी आश्रय नहीं लेना चाहिए। सत्य का आश्रय लेने पर ही इस जगत् में मानव मात्र का सम्यक् निर्वाह श्रेष्ठतम होता है।

Noble and conscious people should never stick to falsehood. In this world, the best justification for humanity lies in sticking to truth.

(२६)

पर्यावरणसम्व्याप्तं तद्वारणार्थमुत्तमैः ।
तत्परै-र्भवितव्यञ्च शासकैर्देशसेवकैः ।।

जो सर्वत्र पर्यावरण परिव्याप्त हो रहा है उसके निवारण के लिए उत्तम वृक्षारोपणार्थ कार्य सभी श्रेष्ठ प्रशासक महानुभावों को करने के लिए तत्पर होना चाहिए ।

The great and ideal people in authority should be all in perfect readiness to remove all sorts of environmental pollution prevailing everywhere and go for aforestation.

(२७)

तदीयवारणार्थञ्च लता-द्रुमादिरोपणम् ।
अत्यनिवार्यरूपेण कर्तव्यं कर्म शासकैः ।।

उस पर्यावरण के निवारण हेतु विविध लता-वृक्षों के आरोपण का कार्य अनिवार्य रूप से किया जाना परम कर्तव्य है, यह कार्य अपने देश के शासकजनों द्वारा सम्पादित किया जाना अपेक्षित है।

It's our sacred and essential duty to go for the plantation of plants and trees for removing environmental of pollution, and this duty should be desirably performed by the people in authority.

(२८)

अध्यात्मचिन्तने शीला भवेयुः शास्त्रपारगाः ।
हरेरुपासनां स्वान्ते प्रकुर्युः सुभगा जनाः ।।

जो शास्त्रज्ञ महानुभाव हैं उन्हें सर्वदा अध्यात्म चिन्तन में अभिरत रहना चाहिए। इसी प्रकार सर्वेश्वर श्रीहरि की अपने चित्त में उपासना करना श्रेष्ठ पुरुषों का पावन कर्तव्य है।

Those people who have authorities over *shastras* should keep themselves engrossed in spiritual thinking, and it should be the sacred duty of all noble people to keep on remembering, praying, mediating Lord Krishna.

(२९)

शास्त्रानुशीलनं नित्यं करणीयञ्च साधकैः ।
महतां श्रेष्ठसत्सङ्गो धारणीयो निजान्तरे ।।

साधकजनों को प्रतिदिन शास्त्रों का अनुशीलन करना परम आवश्यक है और साथ ही महापुरुषों का मङ्गलमय सत्सङ्ग का परम लाभ अपने अन्तःकरण

से किया जाना चाहिए।

It is essential for the devotees to go for the study of *shastras* everyday. Apart from this, they should derive intellectual pleasure from the sweet company of great people.

(३०)

सस्वरवेदपाठश्चाचरणीयोऽनिशं सम्यैः ।
स्वाध्यायशीलसच्छात्रैर्जिज्ञासाभिरतैर्धिया ।।

अध्ययनरत जो उत्तमोत्तम छात्र समुदाय है जिनके अन्तर्मानस में सद्बुद्धिपूर्वक सुन्दर जिज्ञासा रहती है उन्हें नियमित रूप से सस्वर वैदिक पाठ करना अतीव अपेक्षित है।

It is highly expected of the student-community, who are wise and inquisitive, to go for the chanting of the Vedic lessons.

(३१)

सम्प्रति भारते देशे ये च शङ्कास्पदा जनाः ।
तत्क्षणं वारणीयास्ते कार्यमिदमपेक्षितम् ।।

वर्तमान समय में अपने समस्त भारतदेश में शङ्कास्पद घातक जो तत्त्व जहाँ तहाँ व्याप्त हो रहे हैं उनका तत्काल निष्क्रमण करना नितान्त आवश्यक कार्य है।

It is highly essential to go for the removal (annihilation) of all sorts of fatal, suspicious elements

which are prevailing here, there and everywhere in our country in modern times.

(३२)

दृष्ट्वा चेखिद्यते चेतो विवेकरहितान् जनान् ।
किं विधेयं किमिष्टञ्च किञ्चाऽत्र परमोत्तमम् ।।

विवेहीन जनों को देखकर अपने हृदय में असीम संताप होना स्वाभाविक है। सम्प्रति इस प्रस्तुत प्रसङ्ग में क्या करना अभीष्ट है इस सम्बन्ध में गहन चिन्तन करना चाहिए ।

It's quite natural to get grieved at heart to see people who are without conscience and moral values. We should go for deep thinking as to what we should do in this regard.

(३३)

प्रेरणाप्रदपद्यानि निर्मितानि शुभानि च ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन काम्यया ।।

सत्प्रेरणा प्रदायक कतिपय यह उत्तम वचन यहाँ प्रस्तुत किये गये हैं जो श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पावन प्रेरणारूप यहाँ निबद्ध किये गये हैं जो परम मननीय एवं आचरणीय हैं।

Some inspiring and noble sentences which have been presented here are the fruits of the inspiration of Lord Krishna and have been reproduced here by His grace. They are all acceptable, and we should strictly adhere to them.

से किया जाना चाहिए।

It is essential for the devotees to go for the study of *shastras* everyday. Apart from this, they should derive intellectual pleasure from the sweet company of great people.

(३०)

सस्वरवेदपाठश्चाचरणीयोऽनिशं समैः ।
स्वाध्यायशीलसच्छात्रैर्जिज्ञासाभिरतैर्धिया ।।

अध्ययनरत जो उत्तमोत्तम छात्र समुदाय है जिनके अन्तर्मानस में सद्बुद्धिपूर्वक सुन्दर जिज्ञासा रहती है उन्हें नियमित रूप से सस्वर वैदिक पाठ करना अतीव अपेक्षित है।

It is highly expected of the student-community, who are wise and inquisitive, to go for the chanting of the Vedic lessons.

(३१)

सम्प्रति भारते देशे ये च शङ्कास्पदा जनाः ।
तत्क्षणं वारणीयास्ते कार्यमिदमपेक्षितम् ।।

वर्तमान समय में अपने समस्त भारतदेश में शङ्कास्पद घातक जो तत्त्व जहाँ तहाँ व्याप्त हो रहे हैं उनका तत्काल निष्क्रमण करना नितान्त आवश्यक कार्य है।

It is highly essential to go for the removal (annihilation) of all sorts of fatal, suspicious elements

which are prevailing here, there and everywhere in our country in modern times.

(३२)

दृष्ट्वा चेखिद्यते चेतो विवेकरहितान् जनान् ।
किं विधेयं किमिष्टञ्च किञ्चाऽत्र परमोत्तमम् ।।

विवेहीन जनों को देखकर अपने ह्रदय में असीम संताप होना स्वाभाविक है। सम्प्रति इस प्रस्तुत प्रसङ्ग में क्या करना अभीष्ट है इस सम्बन्ध में गहन चिन्तन करना चाहिए ।

It's quite natural to get grieved at heart to see people who are without conscience and moral values. We should go for deep thinking as to what we should do in this regard.

(३३)

प्रेरणाप्रदपद्यानि निर्मितानि शुभानि च ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन काम्यया ।।

सत्प्रेरणा प्रदायक कतिपय यह उत्तम वचन यहाँ प्रस्तुत किये गये हैं जो श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पावन प्रेरणारूप यहाँ निबद्ध किये गये हैं जो परम मननीय एवं आचरणीय हैं।

Some inspiring and noble sentences which have been presented here are the fruits of the inspiration of Lord Krishna and have been reproduced here by His grace. They are all acceptable, and we should strictly adhere to them.

(१)

सर्वेश्वर शुभ नाम रट, राधामाधव जाप।
महामन्त्र नित जप करत, 'शरण' नशत भव ताप।।

(२)

वृन्दावन विहरत सदा, कुञ्ज-कुञ्ज प्रतिकुञ्ज।
अनुपम दरशन युगलवर, 'शरण' सहित सखिपुञ्ज।।

(३)

यमुना निरमल नीर में, सुन्दर करत किलोल।
राधामाधव जयति जय, 'शरण' भक्तियुत बोल।।

(४)

कदली मञ्जुल कुञ्ज में, श्रीवृन्दावन धाम।
सदा सुशोभित युगलवर 'शरण' सहित व्रजवाम।।

(५)

कदम्ब-कदली कुञ्ज तर, विहरत श्यामाश्याम।
सखिजन सेवा निरत हैं, 'शरण' परम अभिराम।।

(६)

निधिवन सेवाकुञ्ज में, लताकुञ्ज के बीच।
विलसत श्यामश्याम सुख, 'शरण' लता जल सींच।।

(७)

अदभुत महिमा धाम की, बहत तरणिजा धार।
ब्रह्मादिक वांछत सदा, अविरल 'शरण' विहार।।

(८)

राधा राधा रटत है, माधव नवलकिशोर।
अनुपम शोभा श्याम की, 'शरण' सुचित्त विभोर।।

(९)

श्रीवृन्दावन वास हो, श्रीयमुना जलपान।
रसिकजनन का संग शुभ, 'शरण' तजहि निजमान।।

(१०)

गिरि गोवर्धन अति निकट, निम्बग्राम निवास।
भगवन्निम्बारक सतत, 'शरण' कृपा निजदास।।

(११)

श्रीगोवर्धन परिक्रमा, सात कोश की होय।
युगल ध्यान रत नित करें, 'शरण' करहि सब कोय।।

(१२)

चलो चलें व्रजधाम को, भजैं सदा हरिनाम।
श्रीवृन्दावन दरश शुभ, 'शरण' कृपा घनश्याम।।

(१३)

लक्ष्मी चञ्चल चपल है, कब तजदे वह साथ।
सदुपयोग इसका सही, करदे 'शरण' सनाथ।।

(१४)

धर्म ग्रन्थ स्वाध्याय हो, सत्पुरुषों का संग।
प्रभु दर्शन प्रतिदिन करे, स्नान 'शरण' शुभ गंग।।

(१५)

गोमाता दर्शन सुभग, पावन मङ्गल रूप।
विश्वभर की वह माता, 'शरण' परम अनूप।।

(१६)

श्रौत सनातन धर्म का, पालन करना कर्म।
जन-जन में यह भाव हो, 'शरण' यही है मर्म।।

(१७)

मानव जीवन हरि कृपा, मिलता निश्चय जान।
यह अवसर अति सुभग है, 'शरण' पुराण प्रमान।।

(१८)

भलो वास वृन्दाविपिन, जहँ राजत व्रजराज।
श्रीराधा रसिकेश्वरी, 'शरण' सखी सह भ्राज।।

(१९)

अलवेली श्रीराधिका, अलवेलो श्रीश्याम।
सेवारत सखिवृन्द हैं, 'शरण' सुभग व्रजधाम।।

(२०)

व्रज वनिता व्रज गोपजन, व्रजवल्लभ श्रीश्याम।
इनकी जय जय उच्चरो, 'शरण' रहो व्रजधाम।।

(२१)

सदा सेव्य हैं सर्वेश्वर, सनकादिक करपद्म।
नारद निम्बादित्य से, 'शरण' सुसेवित सद्म।।

(२२)

मन्त्रराज नित जाप हो, दीक्षित करहि सुयोग।
यही श्रेष्ठ यह कर्म है, 'शरण' नशत भव रोग।।

(२३)

राधामाधव नित भजो, जो वांछत शुभ श्रेय।
सर्वेश्वर जय जय करो, 'शरण' अवांछत प्रेय।।

(२४)

कृष्ण कृष्ण प्रिय नाम भज, रट श्रीराधा नाम।
जीवन निश्चय धन्यतम, 'शरण' बसो श्रीधाम।।

(२५)

श्रीराधा वृषभानुजा वरसाना शुभ ग्राम।
कीर्ति किशोरी राधिका, 'शरण' भजो प्रिय नाम।।

(२६)

नन्दनन्दन श्रीकृष्ण हैं, नन्दगाँव व्रजधाम।
अनुपम शोभा नित लखहि, 'शरण' धरा अभिराम।।

(२७)

भवासक्ति को त्याग कर, अविरल भज श्रीश्याम।
यह सुख परम असीम है, 'शरण' अतीव ललाम।।

(२८)

पल-पल बीता जा रहा, तुरत भजो भगवान।
जीवन की यह सफलता, 'शरण' वही मतिमान।।

(२९)

कृपाकोष श्रीकृष्ण हैं, करुणारूप महान।
कृपादृष्टि करते सदा, 'शरण' वदत मतिमान।।

(३०)

सर्वेश्वर नित ध्यान हो, श्रीप्रभु जय-जय बोल।
सार्थक जीवन वही है, 'शरण' चित्त पट खोल।।

(३१)

व्रज रज सुयश अपार है, महिमा गावत देव।
यही कथन सब शास्त्र का, 'शरण' वही नित सेव।।

(३२)

भजिये राधाकृष्ण को, तजिये जग जञ्जाल।
नर जीवन यह धर्म है, 'शरण' समाश्रय पाल।।

(३३)

सतत भजो भगवान को, श्रीहरि प्रपन्नपाल।
अपार करुणासिन्धु हैं, 'शरण' सुदीन दयाल।।

(३४)

राधामाधव पद-कमल, विहरत समुना तीर।
सखी सहचरी मञ्जरी, संग 'शरण' अति भीर।।

(३५)

राधे राधे राधिके, कूजत कोकिल कीर।
मधुकर गुञ्जन राधिके, 'शरण' प्रगावत धीर।।

(३६)

शोभा अनुपम श्याम की, राधा सहित अपार।
सखीवृन्द सेवा निरत, विहरत 'शरण' निहार।।

(३७)

व्रज वसुधा वन–कुञ्ज की, लता तरुन की छाह।
अगनित गोमाता वसहि, 'शरण' दरश हिय चाह।।

(३८)

जय जय उचरत देवगण, अभिवांछत व्रजवास।
पुनि–पुनि प्रणमत युगल पद, 'शरण' हृदय – उल्लास।।

(३९)

मोर–सारिका–कोकिला, निगदत राधेश्याम।
प्रमुदित फुदकत कुंज मधि, 'शरण' दरश अभिराम।।

(४०)

वाणी में असमर्थता, वर्णन न हो पाय।
व्रज का सुयश असीम है, 'शरण' रसिकजन गाय।।

(४१)

भजले राधाकृष्ण को, वृन्दावन वस जाय।
कृपा करेंगे श्रीप्रभु, 'शरण' यही सदुपाय।।

(४२)

राधा परमाधार है, माधव कृपा–निधान।
वृन्दावन वसुधा सुभग, 'शरण' सरस गुणगान।।

*





अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज



अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधा-सर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज का जन्म विक्रम संवत 1986 वैशाख शुक्ल 1 शुक्रवार तदनुसार दिनांक 10 मई, 1929 को निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में हुआ। अपकी माताश्री का नाम स्वर्णलता (सोनीबाई) एवं पिताश्री का नाम श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया था। आप जैसे नक्षत्रधारी महापुरुष के जन्म से यह विप्र वंश धन्य हुआ है। आपश्री 11 वर्ष की अल्पावस्था में वि.सं. 1997 आषाढ़ शुक्ल 2 रविवार (रथयात्रा) के शुभावसर पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज से वैष्णवी दीक्षा से दीक्षित होकर पीठ के उत्तराधिकारी नियुक्त हुए। वि.सं. 2000 में पूज्य गुरुदेव के गोलोकवास होने पर 14 वर्ष की अवस्था में ज्येष्ठ शुक्ल 2 शनिवार दिनांक 5 जून 1943 को आचार्यपीठ पर आसीन हुए। तदनन्तर 4 वर्ष तक श्रीधाम वृन्दावन में न्याय-व्याकरण-वेदान्त आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। वज्रविदेही चतु:सम्प्रदाय श्रीमहन्त श्री धनञ्जयदासजी काठिया बाबा महाराज तर्क-तर्कतीर्थ जैसे महानुभावों का आपको संरक्षण प्राप्त हुआ। आपश्री के आचार्यत्वकाल में वैष्णव चतु:सम्प्रदायों के आचार्यों, श्रीमहन्तों, सन्त महात्माओं, समस्त शंकराचार्यों श्रीकरपात्रीजी महाराज, महामण्डलेश्वरों, देश के मूर्धन्य मनीषियों, राजा-महाराजाओं, राजनेताओं के साथ निकटतम घनिष्ठ सम्पर्क बढ़ा। श्री निम्बार्क सम्प्रदाय का चतुर्दिक् विस्तार हुआ। वि.सं. 2001 में आपश्री ने 15 वर्ष की अवस्था में कुरुक्षेत्र के विराट् साधु सम्मेलन में जगद्गुरु पुरीपीठाधीश्वर श्रीभारतीकृष्णतीर्थजी महाराज के तत्त्वावधान में अध्यक्ष पद को अलंकृत किया।

आपश्री के कार्यकाल में तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा सम्पन्न हुई। प्रयाग, हरिद्वार (वृन्दावन), उज्जैन, नासिक इन चारों स्थानों के कुम्भ पर्वों पर अनेकश: श्रीनिम्बार्कनगर में समायोजित धार्मिक अनुष्ठानों, धर्माचार्यों के सदुपदेशों, विविध सम्मेलनों द्वारा समग्र जन समुदाया को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया जाता है। इसी प्रकार सं. 2026 में वज्रयात्रा, 2031 में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2047 में श्रीमुरारी बापू की रामकथा, 2050 में स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2061 में श्री भगवन्निम्बार्काचार्य 5100वां जयन्ती महोत्सव पर विराट् सनातनधर्म सम्मेलन, 2062 में युगसन्त श्रीमुरारीबापू द्वारा श्रीरामकथा, 2063 में श्रीरमेश भाई ओझा द्वारा श्रीमद्भागवत कथा आदि आयोजनों द्वारा जो धार्मिक चेतना जन-जन में स्फुरित करायी गयी वह सदा स्मरणीय है। प्रत्येक अधिकमास में आचार्यपीठ पर आयोजित होने वाले अष्टोत्तरशतभागवत, यज्ञानुष्ठान, प्रवचन श्रीरासलीलानुकरण आदि कार्यक्रम भी सदा प्रेरणाप्रद रहते हैं। आप द्वारा प्रतिदिन किया जाने वाला श्रीयुगलनाम-संकीर्तन भी श्रवणीय होता है। सन् 1966 में दिल्ली के विराट् गो-रक्षा सम्मेलन में आपश्री का सपरिकर पादार्पण हुआ था। इस अवसर पर स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं अन्य धर्माचार्यों से जो महनीय विचार विमर्श हुआ वह परम ऐतिहासिक है।

आपश्री ने अपने आचार्यत्व काल में जितना देश-देशान्तरों में सम्प्रदाय का वर्चस्व बढ़ाया है उतना ही देवालयों के निर्माण, जीर्णोद्धार, शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण-संचालन, साहित्य प्रकाशन, नूतन ग्रन्थ रचना, गोशाला, मुद्रणालय आदि संस्थाओं द्वारा आचार्यपीठ का सर्वतोभावेन.विकास किया है। आपश्री द्वारा रचित 37 ग्रन्थों में से भारत-कल्पतरु ग्रन्थ का विमोचन भारत के उपराष्ट्रपति श्रीशंकरदयालजी शर्मा ने दिल्ली में किया। इसी प्रकार आपके अन्य ग्रन्थों का मूर्द्धन्य राजनेताओं, शीर्षस्थ महापुरुषों, जगद्गुरुओं द्वारा विमोचन समारोह सम्पन्न हुये हैं। एवं आप द्वारा प्रणीत रचनाओं पर तीन-चार शोधप्रबन्ध भी प्रस्तुत हुए हैं जो मननीय हैं। अस्वस्थ अवस्था में भी आप निरन्तर क्रियाशील रहते है। आपश्री का संरक्षण पाकर और आपश्री के महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय किंवा सनातन धर्म जगत् विशेषत: उपकृत हुआ है। आपके मधुर दर्शन की एक झलक पाने और आपश्री के वचनामृत सुनने के लिए धार्मिक जन सदा समुत्सुक रहते हैं।